आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 8 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अगस्त, 2010 ★ श्रावण, 2067

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते
सपनोंके लिये
खास
अपनोंके लिये

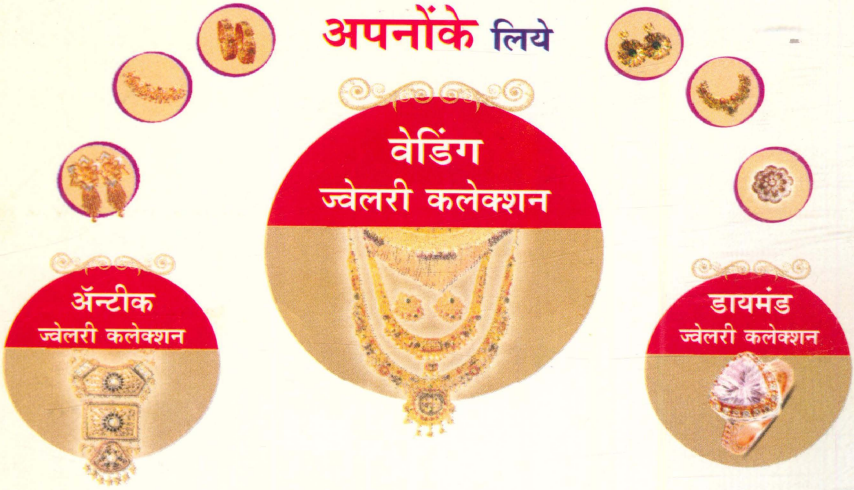

- सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न
- फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
- शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520
सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री १। प्रामाणिकता २। वाजिबता ३। विविधता ४। हजर स्टॉक ५। सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बा
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तत्थोववाइयं ठाणं,
जहा मेयमणुस्सुयं।
आहाकम्मेहिं गच्छंतो,
सो पच्छा परितप्पई॥
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.13

है स्थान नरक में यथा दुःखद,
मैंने शास्त्रों से जाना है।
कर्मानुसार जाता प्राणी,
वह पीछे पछताता है॥

अगस्त, 2010
वीर निर्वाण संवत्, 2536
श्रावण, 2067

वर्ष 67 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 5000/-
आजीवन विदेश में : 5000 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail: jinvani@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आचार्य हस्ती और सामायिक-साधना	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	रोकें जल का दुरुपयोग	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	चातुर्मास में करणीय कार्य	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	16
	लक्ष्य का करें निर्धारण	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	21
अध्यात्म-	अध्यात्म की ओर	-श्रीमती लीला सालेचा	25
प्रासङ्गिक-	21वीं शताब्दी का धर्म : जैन धर्म	-श्री मुजफ्फर हुसैन	31
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (8)	-श्री सम्पतराज चौधरी	35
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Religion and Happiness	*-Sh. K.S. Galundia*	40
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (60)	-श्री धर्मचन्द जैन	45
कथानक-	शेर बना शाकाहारी (2)	-श्रीमती पारसकंवर भण्डारी	49
उपन्यास-	सुबह की धूप (18)	-श्री गणेशमुनि शास्त्री	54
नारी-स्तम्भ-	भ्रूणहत्या: एक जघन्य अपराध	-सुश्री मीनाक्षी जैन	60
युवा-स्तम्भ-	मद्यपान के नुकसान	- डॉ. दिलीप धींग	68
श्रद्धा-संस्मरण-	ज्ञाता गुरुवर उपकारी	- श्री नेमीचन्द नाहर	74
	श्री बलभद्र मुनि जी मन भाए	-श्री संदीप ओस्तवाल एवं श्री वीरेन्द्र कांकरिया	76
विशिष्ट-व्यक्तित्व-	राज्यसभा सदस्य श्री ईश्वरलाल जी जैन	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	78
बाल-स्तम्भ-	समझदार बहू	-श्री चन्दनमुनि जी	82
विचार-	अनमोल वचन	-श्री प्रमोद हीरावत	43
कविता/गीत-	साम्यभाव चर्या का साधन	-पं. अर्जुनलाल सेठी	15
	स्वाध्याय	-श्री मगनचन्द जैन	44
	खुशियों के तराने	-डॉ. रमेश मयंक	48
	अन्तर अभिलाषा	-श्री हरकचन्द ओस्तवाल 'हर्ष'	67
	भेद-विज्ञान	-श्रीमती माया कुम्भट	77
	उभयकाल प्रतिक्रमण कीजिए और घर में स्वर्गानुभव लीजिए	-श्री लक्ष्मीचंद जैन	81
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (8)		87
समाचार विविधा-	प्रविष्टियाँ आमन्त्रित		89
	समाचार-संकलन		93
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		120

सम्पादकीय

आचार्य हस्ती और सामायिक-साधना

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

यह अध्यात्म चेतना वर्ष है। सामायिक का आध्यात्मिक चेतना एवंआत्मिक-उन्नयन से सीधा सम्बन्ध है। आचार्य श्री हस्ती ने सामायिक और स्वाध्याय का जन-जन में प्रचार किया तथा हजारों लोगों को इनका मर्म समझाकर ज्ञान एवं समत्व का दीप जलाया। अनेकों को स्वाध्याय एवं सामायिक का महत्त्व समझ में आया। आज भी हजारों श्रावक-श्राविका सामायिक की साधना करते हैं। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज भी अनेक ग्राम-नगरों में सामूहिक सामायिक एवं नियमित सामायिक की निरन्तर प्रेरणा कर रहे हैं।

प्रश्न यह है कि सामायिक का आध्यात्मिक उन्नयन से क्या सम्बन्ध है? प्रायः सामायिक करने वाले बन्धु-भगिनी एक मुहूर्त अथवा अधिक समय के लिए सामायिक की वेशभूषा में बैठते तो हैं, किन्तु वे माला फेरकर, आनुपूर्वी पढ़कर, प्रार्थना एवं भजन बोलकर अथवा कोई स्तोत्र बोलकर समय पूरा कर लेते हैं। कुछ ऐसे भी श्रावक-श्राविका हैं, जो सामायिक का मूल्यवान समय इधर-उधर की बातों में पूरा कर देते हैं। यह अवश्य है कि सामायिक में बैठने वाला व्यक्ति यथाशक्य सावद्य क्रिया का त्याग कर अनेकविध कर्मास्रव से बच जाता है। प्रारम्भ में यह लाभ भी महत्त्व रखता है, किन्तु साधक को सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये। प्रायः हम इस ओर सजग नहीं रहते। दिनचर्या में जैसा चल रहा है उसे वैसा ही चलने देते हैं, कई बार तो शिथिलता के कारण दोषों में अभिवृद्धि होती रहती है और हम सामायिक के मूल लक्ष्य से भटक जाते हैं। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज का चिन्तन है-"आपकी सामायिक दस्तूर की सामायिक न होकर साधना की सामायिक हो।" सामायिक किसी को दिखाने के लिए अथवा कोई कार्यक्रम पूरा करने मात्र के लिए न हो, अपितु वह सच्ची साधना का अंग बने, व्यक्तित्व-विकास में सहायक बने।

सामायिक में मन, वचन एवं काया तीनों को पाप-क्रिया से बचाकर भावों को अशुभ से शुभ की ओर ले जाया जाता है। इसीलिए सामायिक कर्ता को मन के 10 दोषों, वचन के 10 दोषों एवं काया के 10 दोषों की जानकारी आवश्यक है। इन दोषों की जानकारी होने पर दोषों से बचा जा सकता है तथा सामायिक को अधिक सार्थक बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए सामायिक में यशकीर्ति की कामना नहीं होनी चाहिए, सांसारिक लाभ की इच्छा नहीं होनी चाहिए, गर्व नहीं होना चाहिए आदि। आचार्य श्री हस्ती के शब्दों में "मन में गर्व, क्रोध, कामना, भय आदि को स्थान देकर यदि कोई सामायिक करता है तो यह सब मानसिक दोष सामायिक को मलिन बनाते हैं। पति और पत्नी में या पिता और पुत्र में आपसी रंजिश पैदा हो जाए तब रुष्ट होकर काम न करके सामायिक में बैठ जाना भी दूषण है। अभिमान के वशीभूत होकर सामायिक की जाती है तो वह भी मानसिक दोष है।" सामायिक में वचन एवं काया के दोषों से भी बचना होता है। बिना सोचे समझे कुवचनों का या चुभते वचनों का प्रयोग, कलह, विकथा, हास्य आदि से युक्त वचनों का प्रयोग सामायिक के दूषण हैं। सामायिक में जहाँ तक सम्भव हो स्वाध्याय, ध्यान एवं अनुप्रेक्षा को स्थान देना चाहिए। इससे चित्त भी एकाग्र रहेगा एवं चित्त में शुभता की भी अभिवृद्धि होती रहेगी। स्वाध्याय से ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होगा जो चित्त के शोधन में सहायक होगा। ध्यान एकाग्रता में सहायक होता है तथा आत्म-प्रदेशों पर चिपके कर्म-मलों को झाड़ने में निमित्त बनता है। आर्त्त एवं रौद्र भी ध्यान हैं, किन्तु वे अशुभ होने से ग्राह्य नहीं हैं। धर्मध्यान ही साधना में उपयोगी है। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का ही एक भेद है। किन्तु अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व आदि जो द्वादश भावनाएँ प्रतिपादित हैं वे चित्त के मलिन संस्कारों को सत्संस्कारों में परिवर्तित करने में सहायक हैं।

सामायिक में एक स्थिर आसन से बैठना अत्युत्तम है। चलासन, कुआसन, चलदृष्टि आदि काया-सम्बन्धी दोष माने गये हैं। बिना कारण बार-बार आसन न बदलते हुए काया को भी साधते हुए मन को साधा जा सकता है। जो काया को नहीं साध सकता वह चित्त को भी नहीं साध सकता।

सामायिक की साधना व्यक्तित्व-परिवर्तन की बहुत बड़ी साधना है। यह अपने मन को बदलने एवं कषायों को जीतने की साधना है। राग-द्वेष की

अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सम रहने की साधना है। यह साधना जीवन में अमृत रस घोलने वाली है। व्यक्तिगत शान्ति एवं आत्मिक तेजस्विता के साथ परिवार एवं समाज में भी सुन्दर वातावरण के निर्माण में सामायिक सहायक है। नियमित सामायिक व्यक्ति की चेतना में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, जिससे नकारात्मक विकार विनष्ट होते नजर आते हैं। व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से शैक्षिक जगत् में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। किन्तु सामायिक व्यक्ति के चित्त एवं चेतना में जो सामर्थ्य प्रदान करती है वह आध्यात्मिक उन्नयन की दृष्टि से विशिष्ट है। आचार्य हस्ती ने स्वयं उत्कृष्ट सामायिक की साधना की। उसके महत्त्व का मूल्यांकन किया एवं फिर गृहस्थों को भी उसका प्रसाद बाँटा। उनका मन्तव्य है-"वस्तुतः सामायिक एक बहुत बड़ी योग साधना है। पतञ्जलि ने योगसूत्र में योग के जो आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के रूप में बताये हैं वे आठों सामायिक में पूर्ण होते हैं।

आत्मविजय सर्वविध सांसारिक विजयों से बढ़कर है। आत्मविजय के इच्छुक साधक सामायिक को साधन बना सकते हैं। इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने की साधना के साथ यह व्यक्ति में चित्त की चंचलता को समाप्त करने की शक्ति प्रदान करती है। प्रायः सामायिक में बैठने वाला साधक द्रव्य-निवृत्ति तो कर लेता है, किन्तु सावद्य क्रिया से भावनिवृत्ति तक नहीं पहुँचता। स्वाध्याय के साथ सामायिक का निरन्तर अभ्यास सावद्य योगों से भाव-निवृत्ति में सहायक बनता है।

बुरी आदतों को बदलने में सामायिक एक ठोस साधन हो सकती है। इसलिए आचार्य हस्ती का कथन है-"जिस तरह घर से निकलकर धर्मस्थान में आते हैं और कपड़े बदलकर सामायिक साधना में बैठते हैं, उसी तरह कपड़ों के साथ-साथ आदत भी बदलनी चाहिये।"

आचार्य श्री ने समत्व की साधना के पाँच उपाय बताए हैं- (1) ममत्व त्याग, (2) सुकुमारता त्याग, (3)कामना-त्याग, (4) विकथा त्याग और (5) लोकैषणा-त्याग। सामायिक के साधक का बाह्य पदार्थों के प्रति जितना ममत्व छूटता जाएगा वह उतना ही समत्व को प्राप्त होता जाएगा। इसी प्रकार कोमलता का परित्याग करते हुए शरीर की सहिष्णुता बढ़ानी चाहिए। दुःख को,

कष्ट को सहने का जितना अभ्यास बढ़ेगा उतना ही चित्त समत्व को प्राप्त होता जाएगा। मनुष्य के चित्त की चंचलता का एक कारण उसकी इच्छाएँ या कामनाएँ हैं। बार-बार चित्त उनकी पूर्ति के लिए आकुल-व्याकुल होता रहता है। सामायिक का साधक कामनाओं को न्यून कर आभ्यन्तर रस के प्रति उन्मुख होता है। सामायिक में चार प्रकार की विकथाओं का त्याग कहा गया है- 1. स्त्री कथा, 2. भक्त कथा, 3. देश कथा, 4. राज कथा। इन चार कथाओं के सदृश सुख-सुविधा, निन्दा एवं विषयों से जुड़ी अन्य भी कथा हो सकती है, जो व्यक्ति को सामायिक साधना के मूल लक्ष्य से विचलित करती है, अतः ऐसी सभी कथाएँ त्याज्य हैं। कथा का अर्थ यहाँ कहानी नहीं, अपितु कथन अथवा बातचीत का जो विषय बनती है, वह कथा है। इसलिए सामायिक में धर्म कथा स्वीकार्य है।

आज प्रत्येक मानव तनाव ग्रस्त है। तनावग्रस्त युवकों की संख्या और भी अधिक है। किन्तु उन्हें यह ज्ञात नहीं है कि सामायिक के माध्यम से वे तनाव की स्थितियों में भी तरोताजा रहने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। आवश्यकता है सामायिक साधना को एक मुहूर्त तक सही भावों के साथ निरवद्य रूप से एवं लक्ष्याभिमुख होकर करने की। यह कोई क्रिया कांड नहीं है, अपितु आत्मशक्ति की जागरणा का माध्यम है। शुद्ध भावना के साथ सामायिक का आराधक अर्हत् की अवस्था को भी प्राप्त कर सकता है।

सामायिक साधना में द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव इन चारों की शुद्धि का भी महत्त्व है, किन्तु शुद्धि के साथ लक्ष्य अधिक महत्वपूर्ण है। मनुष्य स्वयं से हारा हुआ है। वह तनिक भी सुविधा, अनुकूलता एवं विषयासक्ति को छोड़ना नहीं चाहता। इनके छोड़ने में उसे जीवन दिखाई नहीं देता, किन्तु यह उसका भ्रम है। जिस दिन वह इनको छोड़कर साधना में संलग्न हो जाएगा, उसी दिन और उसी क्षण से वह विजय के मार्ग पर बढ़ जाएगा।

इसलिए सामायिक का आध्यात्मिक चेतना एवं उन्नयन के साथ क्या सम्बन्ध है, सामायिक के विशुद्ध साधक को इस प्रश्न का उत्तर स्वयं मिल जाएगा। जैसे-जैसे सामायिक के माध्यम से जीवन में समत्व, शान्ति एवं निराकुलता का संचार होगा वैसे- वैसे आध्यात्मिक चेतना का जागरण होगा एवं साधक स्वयं को साधना में आगे बढ़ता हुआ देख सकेगा। ✸

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा-

1. कया णं अहं अप्पं वा बहुयं वा सुयं अहिज्जिस्सामि?
2. कया णं अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सामि?
3. कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि?

एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे समणे निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति।

अर्थः-

तीन कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है-

1. कब मैं अल्प या बहुत श्रुत का अध्ययन करूँगा?
2. कब मैं एकल विहार प्रतिमा को स्वीकार कर विहार करूँगा?
3. कब मैं अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना की आराधना से युक्त होकर, भक्त-पान का परित्याग कर पादोपगमन संथारा स्वीकार कर मृत्यु की आकांक्षा नहीं करता हुआ विचरूँगा?

इस प्रकार उत्तम मन, वचन, काय से उक्त भावना करता हुआ श्रमण निर्ग्रन्थ महानिर्जरा तथा महापर्यवसान वाला होता है।

तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति, तं जहा-

1. कया णं अहं अप्पं या बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि?
2. कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारितं पव्वइस्सामि?
3. कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणा-झूसणा-झूसिते भत्तपाणपडियाइक्खिते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि?

एवं समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति।

अर्थः-

तीन कारणों से श्रमणोपासक (गृहस्थ श्रावक) महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है-

1. कब मैं अल्प या बहुत परिग्रह का परित्याग करूँगा?
2. कब मैं मुण्डित होकर अगार से अनगारिता में प्रव्रजित होऊँगा?
3. कब मैं अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना की आराधना से युक्त होकर भक्त-पान का परित्याग कर, पादोपगमन संथारा स्वीकार कर मृत्यु की आकांक्षा नहीं करता हुआ विचरूँगा?

इस प्रकार उत्तम मन, वचन, काय से उक्त भावना करता हुआ श्रमणोपासक महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

-स्थानाङ्गसूत्र, तृतीय स्थान, चतुर्थ उद्देशक, सूत्र- 496-497

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

संत-सेवा/सत्संग

- गृहस्थ का त्यागी वर्ग के प्रति धर्म-राग, प्रेम या अनुराग जितना अधिक होगा, उतना ही वह आरम्भ परिग्रह से गृहस्थ को दूर हटा सकेगा और शान्ति के नजदीक रख सकेगा। किन्तु साधु का आपसे ज्यादा राग हो जाए, ज्यादा निकटता बढ़ने लगे, तो उचित्त नहीं होगा।
- सन्त का श्रावक-श्राविका के साथ अनुराग सीमातीत होगा तो सन्त संयम मर्यादा को गौण कर देगा। परन्तु श्रावक की सन्त के प्रति अनुराग की सीमा नहीं होनी चाहिए। वह असीम होना चाहिए।
- धर्माचार्य त्यागी होने से गृहस्थ की सेवाओं को स्वीकार नहीं करते। जिनवचनों को जीवन में उतारना और सद्विचारों का प्रसार करना ही उनकी सही सेवा है। शरीर से अयतना की प्रवृत्ति नहीं करना, वाणी से हित, मित और पथ्य बोलना एवं मन से शुभविचार रखना उनकी सेवा है।
- जीवन-निर्माण की दिशा में मात्र सत्पुरुषों के गुणगान से ही आत्मा लाभ प्राप्त नहीं कर पाता, इसके लिए करणी भी आवश्यक है और गुणीजनों को भी केवल अपनी प्रशंसा भर से वह प्रमोद प्राप्त नहीं होता, जो कि उनकी कथनी को करनी का रूप देने से होता है।
- महाराज श्रेणिक व्रत ग्रहण नहीं कर सका, फिर भी सत्संग से उसको सुदृष्टि प्राप्त हो गई।
- भक्त यह नहीं सोचते कि त्यागियों के पास, साधकों के पास, मुमुक्षुओं के पास धन-सम्पदा जैसी वस्तुएँ देने को कुछ नहीं है तो उनके नजदीक जाकर क्या करें। ऐसा खयाल उन व्यक्तियों को आयेगा जो त्याग और त्यागी की महिमा नहीं जानते।
- संत यद्यपि छद्मस्थ होते हैं; तीर्थंकरों की तरह पूर्ण नहीं होते, तथापि वे संसार को अखूट निधि देते हैं। लेकिन उनका देना मूकदान है।
- एक समझदार और विद्वान् पुरुष जब मूर्ख के साथ अपना दिमाग लगाता है तो उसकी विद्वत्ता मुरझाती है, विकसित नहीं होती और जब वह सत्संग में बैठ कर विद्वानों के साथ संवाद करता है तो उसकी विद्वत्ता का विकास होता है। उक्ति प्रसिद्ध है- वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

रोकें जल का दुरुपयोग

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा रविवार, दिनाँक 18 जुलाई, 2010 को दुर्गादास नगर, पाली(राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

अविचल पदवासी सिद्ध भगवन्त, अनन्त ज्ञानी, अनन्त-दर्शनी अरिहन्त भगवन्त, महाव्रत-समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी का प्रतिपादन अभी लक्ष्य-निर्धारण को लेकर किया जा रहा है। साधना शुरु करने से पहले साध्य क्या है? यात्रा करने के पहले मंजिल क्या है? इसे तय किए बगैर चलने वाला रात-दिन चलकर भी मार्ग तय नहीं कर पाता। इसलिये सबसे पहले लक्ष्य निर्धारण कीजिये। जो कुछ कर रहे हैं, जो कुछ करना चाह रहे हैं, या जो करने की योजना बना रहे हैं इन सबके पीछे हमारा लक्ष्य क्या है?

वीतराग वाणी मात्र एक लक्ष्य की बात कहती है उसे एक शब्द में मोह-विजय के नाम से, दो में राग-द्वेष निवृत्ति के नाम से अथवा चार शब्दों में क्रोध मान, माया एवं लोभ इन चार कषायों पर विजय के नाम से कहा जा सकता है। लक्ष्य एक ही है। लक्ष्य कषाय-निवृत्ति ही होना चाहिये। लक्ष्य राग-द्वेष छोड़ने का ही होना चाहिये। लक्ष्य मोह के विकारों को समूल खत्म करना ही होना चाहिये। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए पाप-त्याग की बात कही जा रही है। भीतर के कषायों की निवृत्ति के लिए बाहर के पापों का त्याग करना भी मार्ग बताया गया है। संवर की प्रवृत्ति, पाप के त्याग की प्रवृत्ति अर्थात् सावद्य योगों की जितनी-जितनी निवृत्ति होगी उतनी-उतनी मात्रा में कषायों से छुटकारा होगा।

निवृत्ति प्रवृत्ति को रोकती है। प्रवृत्ति करने वाले निवृत्ति नहीं कर पाते, इसलिये सबसे पहले चिन्तन करें कि हमने लक्ष्य निर्धारित करके इस मार्ग में कितने कदम बढ़ायें हैं? हमारा सावद्य योग कितना कम हो रहा है? संवर-योग शुद्ध उपयोग कितना बढ़ रहा है? लक्ष्य को देखने की बात कहूँ तो शायद आपकी विपरीत वृत्ति सामने आ रही है। इस भ्रमणा को या विपरीत वृत्ति को

बदलने के लिए शास्त्रकारों ने साधना के पक्ष का कुछ रूप सामने रखा जिसमें पहला है- सावद्य योग कितने कम हो रहे हैं? चिन्तन करें। वर्षों तक साधना के पश्चात् भी हमारी सावद्य योग की प्रवृत्ति कम क्यों नहीं हो रही है? एक अपेक्षा से कहूँ- जहाँ दया है वहाँ धर्म है। जहाँ दया नहीं वहाँ धर्म नहीं। आप कहते भी हैं 'अहिंसा परमो धर्मः'। फिर कहूँ- जैसे सारी नदियाँ समुद्र में आकर मिलती हैं वैसे ही दया में सारे धर्म समाहित हो जाते हैं।

आप जरा चिंतन करें कि आज आपकी दया, अनुकम्पा और करुणा का क्या रूप है? मैं आपके समक्ष छोटा-सा दृष्टान्त दूँ- लोग कहते हैं जल जीवन है। जीवन का उपयोग क्या? जीवन को व्यर्थ में गंवाया जा रहा है या जीवन का सही उपयोग किया जा रहा है? जल को आप जीवन मान रहे हैं, मैं इसे त्रस प्राणियों एवं वनस्पति का आधार भी कह दूँ तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। जल जीवन है, जल है तो जीवन है। महापुरुषों की वाणी में कहूँ-

'नगरी सोहन्ती जल मूल वृक्षाः'। नगरी की शोभा किससे? जल नहीं है तो वह नगर खण्डर है, ढूढ़ा है, श्मशान है। वैसे नगर में कोई नहीं रहना चाहता, वह खाली होगा। उस स्थान को लोग छोड़-छोड़कर बाहर चले जायेंगे।

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोद मुनि जी व्याख्यान में कई बार कहते हैं एक बूंद में असंख्यात जीव होते हैं। आप भी कहते तो हैं जल में जीव हैं। कब कहते हैं? कहाँ कहते हैं? यह बात क्या धर्मस्थान में बोलने तक ही है? क्या यह उक्ति परीक्षा में उत्तर लिखने तक के लिए ही है? शायद स्नान करते समय जल में जीवन है, बात याद नहीं आती। आँगन धोते समय इस बात का खयाल तक नहीं आता। गाड़ी साफ करते समय कितना पानी बहता है उस ओर कभी किसी का ध्यान गया है।

राजस्थान पत्रिका वाली बहिन आई। कहने लगी- जयपुर में पानी की कमी है। आठ-आठ दिन से पानी आ रहा है। जयपुर हो या अजमेर अथवा भीलवाड़ा कहीं दो दिन में, कहीं चार दिन में, कहीं सप्ताह में एक बार पानी आता है। पाली में प्रवेश के समय एक भाई ने कहा- जवाई बांध साफ हो रहा है, अब अगर वर्षा नहीं हुई तो अनेकानेक मछलियाँ मर जायेंगी। क्योंकि जल जीवन है। आपके पूर्वज जंगल में शौच के लिए जाते थे, उस समय घरों में फ्लश नहीं था। आपके बडेरे क्या करते? वे एक लोटा पानी लेकर जाते। आप क्या करते हैं?

आप नल या फ्लश चला देते हैं। कितना पानी बहता है उसका कोई हिसाब नहीं। जल जीवन है यह बात काफी समय से आपके कानों तक पहुँच रही है। लोग कहते भी हैं अगला विश्वयुद्ध होगा तो वह पानी को लेकर होगा। यह बात आपने सुनी होगी। अखबारों में पढ़ते होंगे। सरकार भी पानी बचाने का आह्वान करती रहती है। तो सुना हुआ, पढ़ा हुआ क्या मात्र सुनने पढ़ने तक ही है?

आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज पीपाड़ में गोचरी पधारे। संत-सतियाँ गोचरी पधारते ही हैं, यह उनके जीवन निर्वहन का तरीका है। आचार्य भगवन्त भी यथावसर कृपा करते थे। अपरिचित क्षेत्र था। सेवा की भावना से घर बताने वाला भाई साथ में था। उसके बताये बिना एक घर को जैनेतर माहेश्वरी आदि का मानकर आचार्यप्रवर उसे छोड़कर आगे बढ़ गए। साथ वाला भाई आश्चर्य से पूछने लगा- आपने कैसे जाना कि यह जैन घर नहीं है? आचार्य श्री ने कहा- यदि यह जैन घर होता तो चबूतरी पानी के बजाय झाड़ू से साफ की जाती। पानी में जीव है ऐसा जानने वाले, पानी की यतना करने वाले, जीव की दया पालने वाले इस तरह पानी से आंगन नहीं धोते, चौतरी नहीं धोते।

जैन कौन? नागौर में एक दादी-माँ के बारे में सुना। वह लोटे से पानी लेकर परात में बैठकर स्नान कर लेती। स्नान भी रोज नहीं, कभी पन्द्रह दिन में तो कभी एक महीने भर में करती। वह परात में बैठकर नहाती और परात में आए पानी से अपने आवश्यक वस्त्र धोकर नीचोड़ लेती, फिर उस पानी का उपयोग घर का पोंछा लगानें में करती। मैं स्नानादि में लगे अल्प पानी की हिंसा की अनुमोदना नहीं कर रहा। पानी में जीव समझकर जल को जीवन मानकर अनर्थ दण्ड से बचने वाली बहन की दया भावना की अनुमोदना कर रहा हूँ। अनर्थ दंड से बचने का आह्वान कर रहा हूँ।

आप कौन? क्या आप जैन हैं? आपको जैन कहना क्या? आप दातून करते हैं, तब कितना पानी व्यर्थ बहता है, क्या इसका कोई हिसाब है? कई-कई तो ऐसे लोग भी हैं जो दातून करने के समय नल खोलते हैं, कुल्ला-मंजन करने तक नल से पानी बहता रहता है। क्या उन्हें जैन कहना? जब दातून में इतना पानी व्यर्थ जाता है तो नहाने में कितना अपव्यय होता रहेगा। कई स्थानों पर तो रात को नल खुला छोड़ देते हैं प्रातः सड़कों पर पानी बहता पाया जाता है। कितना दुरुपयोग? पानी का दुरुपयोग जो भी करता है वह व्यर्थ का पाप बांधता है। पानी

का दुरुपयोग करने वाला पानी कम है, इसका रोना रोये तो क्या कहना?

जल में जीवन है। जल के जीवों का रक्षण कीजिये। आप अपनी दिनचर्या तो देखिये कि पूरे दिन में पानी का कैसा उपयोग किया जा रहा है? आज सेठों के और अन्य समृद्ध घरों में बर्तन साफ करने वाले नौकर रखे जाते हैं। वे बर्तन धोते समय नल खुला छोड़ देते हैं और जब तक पूरे बर्तन साफ नहीं हो जाते तब तक नल चलता ही रहता है। क्या यह उपयोग सही है? आपके बडेरे राख से बर्तन साफ करते थे। आज जल को जीवन कहने वाले जल का दुरुपयोग करते हुए कुछ भी विचार नहीं करते। उनकी मांग है हमें रोज पानी मिले। आज जहाँ भी दो-चार दिन से पानी आता है वहां के लोग रोना रोते हैं, परन्तु पानी का दुरुपयोग रोकने के लिए कुछ नहीं करते। जल का दुरुपयोग करने वालों को जल के जीवों की ही नहीं, अपने भाइयों की भी चिंता नहीं है।

आपका विवेक क्या हो? आज जीवन बदल रहा है। साधक के लिए कहा गया है- **सिणाणं सोहवज्जणं।** साधु के लिए स्नान करना, शोभा करना अनुचित बताया गया है। आज क्या है, आप देख रहे हैं, जान रहे हैं, समझ रहे हैं। आज भी कई सद्गृहस्थ सुश्रावक सुन्दर जीवन जीने वाले हैं, वे वर्ष में एक बार से अधिक स्नान नहीं करते हैं। क्योंकि उन्होंने जल का महत्त्व समझ लिया। आप जल का महत्त्व समझें और जहाँ तक बन सके अनर्थदण्ड का पाप तो इकट्ठा न करें। आप यदि जल का इसी तरह दुरुपयोग करते रहेंगे तो न जाने कितने-कितने प्राणियों की समस्या का कारण बनेंगे। जल की कीमत उनसे पूछिये जो दो-दो, चार-चार किलोमीटर दूर जाकर पानी लाते हैं।

जल ज्वलन्त समस्या है, इसलिये मैं आपका ही नहीं, सभी लोगों का आह्वान करना चाहता हूँ कि आप जल की बर्बादी रोकें, यतना करें। व्यर्थ में जल का दुरुपयोग पाप तो है ही, मानवता के प्रति भी अभिशाप है। जो भी पाप करता है उसे संताप मिलेगा। दूसरों को दुःखी करके सुख प्राप्त नहीं होता, भले ही आप भगवान से प्रार्थना करें। जीवन सुखी बनाना है तो दूसरों को साता पहुँचानी होगी।

पानी में जीव हैं, यह वीतराग उपासक जानते हैं और जल जीवन है यही बात सभी मानते हैं, क्योंकि बिना जल के किसी का जीवन नहीं चलता। जल सबके लिए जरूरी है इसलिए उसका उपयोग असावधानी से न करें। आप इस

यतना के साथ चलेंगे तो बाहर के पाप घटेंगे, भीतर के कषाय मन्द होंगे। बाहर के पाप बढ़ते रहेंगे तो भीतर में राग बढ़ता चला जायेगा। फिर कैसे समझा जाए कि आपने लक्ष्य का निर्धारण कर लिया? यदि आप अनुभव करते हैं कि जल की बर्बादी रुके, सब-मिलकर जल का दुरुपयोग रोकें तो फिर यह बात धर्म-स्थान में कहने के बजाय जीवन-व्यवहार में झलकनी चाहिये। आप जल-संरक्षण के लिए, जल-जीवों के रक्षण के लिये, अपने जीवन के सदुपयोग के लिए चिन्तन-मनन करें तो अपने लिए नहीं, पूरे समाज के लिए आपका चिन्तन लाभप्रद होगा। जीव-रक्षा के लिए जल का दुरुपयोग रोकना आज समय की जरूरत है।

साम्यभाव चर्या का साधन

अनावृष्टि अतिवृष्टि न होवे, खेती हो फल दाय।
पावे गो-धन धान्य प्रचुरता, कर्षक का समुदाय॥ 1॥

व्याधि नष्ट हो जीव लोक में चोरी मारी लूट।
कभी न होवे, क्षेमकुशल, युग वर्ते चारों खूँट॥ 2॥

अनेकान्तमय तत्त्वज्ञान का नूतनरूप विकास।
होकर पहुँचे मनुज मनुजको, हरे रूढ़ि विश्वास॥ 3॥

भिन्न-भिन्न मत पंथ धर्म का, व्यापक सत्याधार,
त्याग कदाग्रह और मूढ़ता, करें भव्य स्वीकार॥ 4॥

साम्यभाव चर्या का साधन, मोक्षसिद्धि का हेतु।
करें, करावें, ज्ञानी नेता, उठा सत्य का केतु॥ 5॥

चतुर्वर्ण के नर अरु नारी, काले गौर समान।
विश्व प्रेम के शुद्ध पात्र में, सत्य-पय-पान॥ 6॥

सत्य विजय हो सत्य विजय हो, सत्य भानु की क्रान्ति।
परम शान्ति दे परम शान्ति दे, सत्य शान्ति चिर शान्ति॥ 7॥

सकल घातिया कर्म विघातक, केवलज्ञान दिनेश।
ऋषभादिक जिनराज जगत को, देंगे शान्ति अशेष॥ 8॥

-पं. अर्जुनलाल सेठी, जयपुर (राज.)

प्रवचन

चातुर्मास में करणीय कार्य

उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.

उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. द्वारा, 29 जुलाई, 2007 को भोपालगढ़ में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

आज आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी है। यह चौमासी चतुर्दशी हमारे समक्ष सन्देश लेकर उपस्थित हुई है। संत-सती आठ महीने मंगलकारी-कल्याणकारी विचरण को रोककर इस चौमासी चौदस के दिन से एक जगह स्थिर हो जाते हैं। भगवान महावीर ने जब संतों के विचरण को उपयोगी समझा तब ग्रामानुग्राम विचरण-विहार का सन्देश दिया और जब विहार में जीवरक्षा में कठिनाई देखी तो प्रभु ने एक स्थान पर स्थिरता का सन्देश दिया। संत अपने विचरण में गाँव-गाँव और नगर-नगर में लोगों को जिनवाणी सुनाते हैं, लोग भी जिनवाणी सुनने का मौका पाकर हर्षित होते हैं। विचरण मंगलकारी है, कल्याणकारी है। जीव रक्षा के लिए तथा हमारे आत्मविकास के लिए स्थिरता सहायक है।

चातुर्मास में संत चार महीने तक एक जगह रहते हैं। प्राचीन समय में श्रावक भी एक नगर से दूसरे नगर, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त और एक देश से दूसरे देश व्यापार के निमित्त आवागमन करते, वे भी इस चातुर्मासिक चौदस से गमनागमन रोककर एक स्थान पर ठहरते और धर्म-साधना करते थे।

भगवान आदिनाथ के चरित्र में धन्ना सार्थवाह का वर्णन आता है। वह सार्थवाह एक स्थान से दूसरे स्थान पर व्यापार के लिए जाता था। व्यापार के लिए जाते समय वह नगर में घोषणा करवाता कि कोई व्यक्ति मेरे साथ चलना चाहे तो चल सकता है, उसकी खाने-पीने की, पहनने-ओढ़ने की और आवास-निवास की व्यवस्था की मेरी जिम्मेदारी है। प्राचीन समय में श्रेष्ठी व्यापार के लिए एक नगर से दूसरे नगर में जाते थे तब वात्सल्यभाव से स्वधर्मी भाइयों को साथ लेकर जाना और उन्हें व्यापार में सहयोग देना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे। वे कमजोर

व्यक्तियों को कुछ देकर नहीं, लेकिन उनका पुरुषार्थ जगाकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने का लक्ष्य रखते। आज कोई कमजोर भाई है तो उसे देने वाले देते हैं, लेकिन देने से ज्यादा गिनाते हैं। किसी को एक बार दे भी दिया तो सदा के लिए उसका काम नहीं चलने वाला।

धन्ना सार्थवाह देने के बजाय पुरुषार्थ जगाकर अपने स्वधर्मी भाई को स्वावलम्बी बनाने का लक्ष्य रखते थे। सार्थवाह ने नगर में घोषणा करवा दी कि मैं व्यापार के लिए दूसरे नगर जा रहा हूँ, जिस किसी को मेरे साथ चलना हो, चल सकता है। धन्ना सार्थवाह की घोषणा धर्मरुचि आचार्य के कर्ण गोचर भी हुई। आचार्य श्री को भी विहार करना था। बीच में अटवी थी, इसलिए विचरण में किसी का साथ उपयोगी होता है मानकर धर्मरुचि आचार्य ने धन्ना सार्थवाह से कहा- भाई! हमको भी उस नगर में जाना है। आपका साथ होगा तो अटवी सहज पार हो जायेगी।

धन्ना सार्थवाह ने प्रमोद व्यक्त करते कहा- आप जैसे आचार्य का, जिनके साथ पाँच सौ शिष्य हैं, हमारे साथ चलना हमारा अहोभाग्य है। आप सहर्ष पधारें, हम पूरे जंगल में आपकी सेवा में रहेंगे। धन्ना सार्थवाह के साथ धर्मघोष आचार्य चले। चलते-चलते वर्षा ऋतु आ गई। वर्षा ऋतु में संत विहार नहीं करते, एक स्थान पर ही रहते हैं। धन्ना सार्थवाह ने मुनियों के ठहरने के लिए झोपड़ियाँ तैयार करवा दी। संत चार महीने तक वहाँ विराज गये। वे फक्कड़ संत थे। चार महीने आहार-पानी नहीं मिला तब भी काम चला लिया। संतों ने चार महीने तपश्चर्या करके बिता दिये।

एक दिन सार्थवाह ब्रह्म मुहूर्त में उठा। उसके ध्यान में आया कि मैं संतों को लेकर आया, किन्तु आज दिन तक मैंने उनकी सार-संभाल नहीं की। वह हाथ जोड़े-जोड़े आचार्यश्री के चरणों में उपस्थित हुआ और कहने लगा-भगवन्! मैं आपको साथ लेकर आया, किन्तु आपकी सार-संभाल नहीं की, इसका मुझे पछतावा है।

आचार्य श्री ने कहा- कोई बात नहीं। हमें आहार-पानी नहीं मिला तो सहज तपस्या हो गई। संतों के लिए आहार-पानी मिले तो ठीक, नहीं मिले तो भी ठीक। आहार-पानी मिल गया तो संयम-वृद्धि के लिए ठीक है और नहीं मिला तो सहज में तपश्चर्या का लाभ तो है ही।

धन्ना सार्थवाह ने प्रार्थना की- भगवन्! आप संतों को भेजिये, मैं कोई सूझती वस्तु को बहरा सकूँ। उस समय ताजा घी आया हुआ था, सार्थवाह ने घी का दान दिया। कहते हैं उस समय में ऐसी देवमाया हुई कि संतों को आँखों से दिखना कम हो गया। सार्थवाह घी बहरा रहा था। घी से पातरा भर गया। पातरा क्या भरा, घी पातरे से बाहर निकलने लगा।

देवमाया के कारण पहले संतों को कुछ नहीं दिख रहा था, देव ने संतों को ज्यों ही दृष्टि वापस दी तो संत बोले- श्रावक जी! यह क्या? घी तो बाहर जा रहा है।

धन्ना सार्थवाह ने कहा- गुरुदेव! मैं तो पातरे में बहरा रहा हूँ। उस समय उत्कृष्ट रसायन आने के साथ धन्ना सार्थवाह को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई और आगे चलकर उसी जीव ने तेहरवें भव में आदिनाथ के रूप में जन्म ग्रहण किया।

प्राचीन समय में व्यापारी भी व्यापार बन्द रखकर चातुर्मास में धर्म-साधना के लिए एक जगह स्थिर हो जाते। क्योंकि इन दिनों में जीव-जन्तुओं की विशेष उत्पत्ति होती है, छोटे-मोटे त्रस जीव भी बहुत होते हैं। चातुर्मास में जंगलों में सर्वत्र हरियाली छा जाती है। आज गाँव-गाँव में सड़कों के कारण संतों को आने-जाने का सुलभ रास्ता मिल जाता है अन्यथा हरियाली के कारण पहले पगडंडी तक दिखाई नहीं देती थी। जगह-जगह घास-फूस उग जाने के कारण संतों को स्थंडिल तक की मुश्किल आती थी। हरियाली तो है ही, फिर जानवरों की उत्पत्ति के कारण भगवान ने हमें एक जगह रहने की बात फरमाई है।

पुराने जमाने में राजा-महाराजा भी चातुर्मास में लड़ाई रोक देते। पहले युद्ध के भी नियम होते थे। रात को अस्त्र-शस्त्र चलाना नहीं और सूर्योदय के पहले युद्ध करना नहीं। इसी प्रकार चौमासे में युद्ध नहीं करते, युद्ध होता भी तो उसे रोक देते। राजा-महाराजा भी चातुर्मास में बिना किसी विशेष प्रयोजन के जहाँ तक बनता एक स्थान पर रहते। रामचन्द्र जी ने पंचवटी में चातुर्मास बिताया था। हम संत ही नहीं, गृहस्थ भी आवागमन को रोककर चातुर्मास में एक स्थान पर रहने का प्रयास रखते।

संत चातुर्मास में एक स्थान पर रहते हैं इससे संतों को ज्ञान-आराधना एवं धर्म-साधना के लिए समय मिलता है तो आप श्रावकों को भी संतों की सेवा और दया-पौषध के लिए चार महीने का समय मिलता है।

चातुर्मास की बहुत बड़ी उपयोगिता गाई गई है। चातुर्मास में दो महत्त्वपूर्ण चीजें है। एक है- पानी और दूसरी है वाणी। चातुर्मास में पानी का महत्त्व है। पानी नहीं बरसे तो लोगों में हाहाकार मच जाती है। लोग त्राहि-त्राहि करने लग जाते हैं। पशु-पक्षियों का तो हाल बेहाल हो जाता है। आदमी तो फिर भी इधर-उधर से पानी मंगवा कर काम चला लेता है, लेकिन पशुधन की क्या हालत होती है, आप जानते हैं। पानी सभी प्राणियों को चाहिये। पानी के बिना जीवन नहीं चलता। प्राणीमात्र के लिए पानी का महत्त्व है। शरीर के लिए जो महत्त्व पानी का है वैसे ही आध्यात्मिक जगत् में वाणी का महत्त्व है।

पानी से जीवन चलता है, वाणी से जीवन बनता है। बहत्तर कलाओं में दो कलाएँ मुख्य हैं। एक जीवन चलाने की कला तो दूसरी जीवन बनाने की कला। संत चातुर्मास में एक जगह ठहर कर श्रावक-श्राविकाओं को वीतराग वाणी का पान करवाते हैं, जिससे उनका ज्ञान तो जगता ही है, आत्मा का उद्धार भी होता है। पानी और वाणी दोनों का महत्त्व है। पानी तो इधर-उधर से लाया जा सकता है, कुआ खोदा जा सकता है, हैण्ड पंप लगवाया जा सकता है। तकलीफ देखकर भी आदमी पानी की पूर्ति करता है। आज पानी की बहुत खोज हो रही है। जितनी खोज पानी की हो रही है उतनी वाणी की नहीं की जाती है।

संत चातुर्मास में वीतराग वाणी सुनाते हैं, आप सुनते हैं और सुनकर जीवन में उतारने की कोशिश भी करते हैं। आज गाँव-गाँव में लोग चातुर्मास के लिए लालायित रहते हैं। जहाँ चौमासा होता है उस गाँव के लोग जो व्यापार-व्यवसाय के लिए सुदूर प्रदेशों में रहते हैं वे भी संतों के सान्निध्य में आकर साधना-आराधना करने के लिए आते हैं। लोगों की भावना के कारण कई क्षेत्र संतों के चातुर्मास के लिए विनति करते हैं। विनति बहुत से गाँव-नगरों की चलती रहती है, विनति चाहे जितने क्षेत्र करें, लाभ तो किसी एक क्षेत्र को ही मिलता है। जहाँ की फरसना होती है, वहाँ चातुर्मास हो जाता है। यह संयोग की बात है। धनारी वाले भाइयों की विनति भी कम नहीं थी। पाली-सोजतरोड़ वाले भी प्रयत्न कर रहे थे। सिवांची वाले भी दो साल से बराबर कोशिश कर रहे थे। आचार्य श्री ने यह चातुर्मास भोपालगढ़ को दिया।

आपकी अच्छी भावना रही इसलिए चातुर्मास मिल गया। अब यह भावना बढ़नी चाहिये। भोपालगढ़ के कुछ भाइयों ने चार महीने सेवा में रहने की

भावना बताई थी। मेरी दीक्षा हुई उस साल पीपाड़ और भोपालगढ़ दोनों की विनति पर आचार्य भगवन्त ने कहा था कि बुजुर्ग श्रावक विनति कर रहे हैं। भगवन्त बुजुर्ग श्रावकों की भावना रखते थे। आपको चातुर्मास मिला है तो आप रात्रि-भोजन नहीं करें। रात्रि-भोजन त्याग से छः मासी तप हो जाता है। आप कुशील का त्याग रखें। एक बार के कुशील से नौ लाख सन्नी जीवों की हिंसा का पाप लगता है, असन्नी जीव तो असंख्य होते हैं, इसलिए चौथे व्रत को सबसे बड़ा व्रत कहा है। प्राचीन समय में परम्परा थी नवविवाहिता सावन-भादवे में सासूजी के पास नहीं रहती थी। वह दो महीने पीहर रहती, इसलिए उसके सहज में ब्रह्मचर्य की पालना हो जाती। अब्रह्म सबसे बड़ा कत्ल खाना है, इसलिए आप कुशील का त्याग करें। जीवन भर कर सकें तो सर्वश्रेष्ठ है। इतना नहीं बन सके तो चार महीने तो कुशील का त्याग रखें। युवक भी सावन और भादवे में कुशील का सेवन नहीं करें।

चातुर्मास में हरी सब्जी का त्याग होता है। हरी पत्तीवाली सब्जियों में उस रंग की लटें पैदा हो जाती हैं। वैष्णव परम्परा में भी फूल-पत्ती का त्याग होता है। आप चारों खंदों का त्याग करके चलें। तपस्या करने वाले तप करें। सामायिक-प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध और ध्यान-मौन-स्वाध्याय जो भी साधना आप कर सकते हैं जरूर करें। उपवास करने वाले भाई पौषध का जरूर लक्ष्य रखें।

आस्रव कर्म-बंध का कारण है, संवर निर्जरा का कारण है। आप सुज्ञ श्रावक हैं इसलिए परम्परा का पूरा ध्यान रखें। हमारी परम्परा में स्थानक में कच्चा पानी रखने की मर्यादा नहीं है। स्थानक में पंखे-बिजली नहीं होने चाहिये। खुले मुंह संतों से बात नहीं करें। संतों के द्वारा बार-बार टोकना ठीक नहीं है। सचित्त का त्याग पहला अभिगम है अतः सैल की घड़ी और मोबाइल पहले तो स्थानक में लाएं नहीं और कदाचित् भूल से आ गए तो उनके साथ संतों के चरण स्पर्श नहीं करें।

आप परम्परा और मर्यादा का बराबर ध्यान रखेंगे तो हमको भी बार-बार कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। आचार्य भगवन्त तो फरमाते थे कि मेरे श्रावकों को कभी कहने की जरूरत नहीं पड़ती। वे संकेत में समझ जाते थे। आप मर्यादा की रक्षा में सजग रहें और चातुर्मास के सुयोग से साधना-आराधना में आगे बढ़ने का लक्ष्य रखें, इसी भावना के साथ.....।

■

प्रवचन

लक्ष्य का करें निर्धारण

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा रविवार, 18 जुलाई, 2010 को दुर्गादास नगर, पाली(राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-सम्पादक

बाहरी वेदना से भीतर की संवेदना में लौटने वाले और भीतर की संवेदना में समत्व की साधना के द्वारा सभी बन्धनों से मुक्त होने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और वेदना-संवेदना के द्वारा मुक्ति-पथ पर चरण बढ़ाते हुए मुमुक्षुओं का मार्ग प्रशस्त करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन के पश्चात्.....।

प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने का प्रयास, प्रतिकूलता में अनुकूलता खोजने का प्रयास, अनादिकाल से यह जीव करता आ रहा है और इसी का नाम संसार है। गर्मी है, अनुकूलता के लिए पंखा, कूलर, ए.सी. चाहिए। सर्दी है तो अनुकूलता के लिए स्वेटर, कोट, रूमहीटर चाहिये। प्रतिकूलता में घबराकर वातावरण को परिवर्तित करने एवं अपने शरीर के अनुकूल बनाने का प्रयास मिथ्यात्व की भूमिका में होता है। इसी प्रकार परिस्थिति में जीवन बुद्धि, अनुकूलता में तीव्र आसक्ति और प्रतिकूलता से भयंकर भय व महती पीड़ा मिथ्यात्व की द्योतक है। ऐसे प्रयास संसार की भूमिका में होते हैं।

अनुकूलता को अनुकूलता एवं प्रतिकूलता को प्रतिकूलता जानकर दोनों में समत्व की साधना करने वाला बन्धनों से मुक्त होने की दिशा में बढ़ता है। जैसे को जैसा जान रहा है, उसकी आसक्ति में कमी आती है, द्वेष-भय में कमी आती है। प्रतिकूलता को प्रतिकूल मानकर जो अनुकूलता की आशा को तिलांजलि तो नहीं दे पाया, पर ज्यादा हाय तौबा नहीं करता, आर्त और रौद्र ध्यान मिटा तो नहीं, पर परिस्थिति में जीवन बुद्धि नहीं, वह सम्यग्दृष्टि बन जाता है। वह अनुकूल को अनुकूल एवं प्रतिकूल को प्रतिकूल मानता है, फिर भी

अनुकूलता से विरत नहीं होता। किन्तु साधक इससे आगे बढ़कर अनुकूलता में प्रतिकूलता खोजने वाला होता है। ''आ बैल मुझको मार, सींग नहीं तो पूँछ से मार''। अभी आप सुन गये कि भगवान महावीर अनार्य देश में गये। क्यों गये? क्या जरूरत पड़ी? आप अनुकूलता में प्रतिकूलता नहीं चाहते, इसलिये घर छोड़कर नहीं निकलते। एक है जो सोने के लिए गादी है, तकिया है, फिर भी संवर-दया-पौषध करता है, दीक्षा लेता है। वह अनुकूलता छोड़कर प्रतिकूलता अंगीकार करता है। इस तरह मुक्ति का लक्ष्य स्पष्ट हो तो धर्म का मार्ग प्रशस्त होता है।

संसार की सामग्री जुटाने के लिये भी प्रतिकूलता हंसते-हंसते स्वीकार की जाती है। आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज) कभी-कभी फरमाते हैं- किसान सर्दी के मौसम में रात-रात भर खड़ा रहकर पाणत करता है। वह पानी में पाणत करते-करते गीत गाता है। किन्तु किसान का लक्ष्य दुःख-मुक्ति नहीं, इसलिये वह धर्म नहीं है। आप शादी-विवाह के समय काम में व्यस्त रहते हैं, शरीर पसीना-पसीना हो रहा है, पर उसे भी सहन करते हैं, किन्तु वह धर्म नहीं है। बहिन रसोई करती है। वह चाहे पसीने में लथपथ है, खड़ी-खड़ी रसोई बना रही है, लेकिन उसका लक्ष्य मोक्ष नहीं, इसलिये वह धर्म नहीं है।

लक्ष्य स्पष्ट होना अनिवार्य है। लक्ष्य का परिचय प्रथम प्रयास है। सैनिक सीमा की रक्षा में कम प्रतिकूलता नहीं सहता। वह बर्फीले इलाके में सावधानी से खड़ा रहता है, भारी गर्मी में रेत के टीले पर खड़ा रहकर देश-रक्षा में सदा तत्पर रहता है। कभी-कभी तो सैनिक को तीन-तीन दिन तक रात-दिन ड्यूटी देनी पड़ती है। इतनी प्रतिकूलता सहन करता है, तो क्या वह उसका लक्ष्य है? बाड़मेर में बी.एस.एफ. के अधिकारी (D.I.G.) श्री नरेन्द्र जी गुर्जर (C.O.) आदि अधिकारीगण आचार्य श्री के पास आए। कहने लगे-''महाराज! सैनिकों पर स्ट्रेस बहुत अधिक है, वे बहुत तनाव ग्रस्त हैं, हँसते-हँसते प्राण दे देते हैं। प्रतिकूलता सह लेते हैं, पर शांति का लक्ष्य नहीं तो मानसिक तनाव रहता है। ऐसी स्थिति में हमारे सैनिकों को शांति कैसे मिले आप उन्हें प्रेरणा

प्रदान करें।'' आचार्यश्री के दो व्याख्यान हुए। उससे सैनिकों को शांति के सूत्र मिले।

आप पालीवासी आचार्य भगवन्त का चातुर्मास कराने जा रहे हैं। चातुर्मास प्रारम्भ होने में एक सप्ताह शेष रहा है। साधक को सबसे पहले अपने लक्ष्य का निर्णय करना चाहिए, फिर अनुकूलता-प्रतिकूलता को सहन करने से आत्म गुण विकसित होते हैं। लक्ष्य विहीन या सांसारिक लक्ष्य से की हुई क्रिया धर्म नहीं है।

अन्तगडदशा में देव के लिए किये गये वासुदेव श्री कृष्ण के पौषध सहित तेले और ज्ञाताधर्मकथा में मेघकुमार के प्रसंग में धारिणी रानी के दोहद-पूर्तिहित किया अभयकुमार का तेला क्या धर्म की करणी में आता है? सकाम निर्जरा कराता है? नहीं, क्यों नहीं? हर्षित मन प्रतिकूलता सहन की, पर लक्ष्य अनुकूलता-प्रतिकूलता से परे, वस्तु, अवस्था, परिस्थिति से अतीत नित्य चिन्मय जीवन नहीं। इसलिए वह धर्म नहीं। अनुकूलता होते हुए भी मोक्ष के लक्ष्य से स्वाधीनता पूर्वक जो उसका त्याग करता है वह धर्म का आचरण करता है। शास्त्रीय भाषा में 'जे य कंते पिए भोए लद्धे विपिट्ठी कुव्वइ (दशवैकालिक-2/3) कामना पूर्ति के साधन उपलब्ध हैं, उनको ठुकराया जा रहा है, उनसे पीठ की जा रही है, महलों को छोड़ जंगल का वास स्वीकार किया जा रहा है, मखमल की शय्या तजकर भूमि पर शयन किया जा रहा है। सेवकों की सेवा छिटका कर स्वयं सेवक बनकर संघ-सेवा में समर्पित हो रहे हैं। शासकपना छोड़ गुरु आज्ञा से शासित हो रहे हैं- अनुकूलता के राग में आबद्ध नहीं हो रहे हैं, प्रतिकूलता से भयभीत नहीं हो रहे हैं। तो यह सब धर्म का स्वरूप है।पढ़ने को मिला 'कामना पूर्ति के सुख में आबद्ध नहीं होना त्याग है। प्रभु ने फरमाया- ''साहीणे चयइ भोए।'' अर्थात् स्व की अधीनता से भोग को त्याग देता है वह त्यागी है।'' स्व की अधीनता कब? संसार की अनुकूलता या प्रतिकूलता पर विश्वास का अत्यन्त अभाव होने पर स्वाधीनता होती है। अनुकूलता शरद जलद बुद्बुद के समान है, चंचल कमलदल पर पड़ी ओस बिन्दुवत् है- यह छूटेगी- दुःख होगा, आर्त होगा, पीड़ा होगी, प्रतिकूलता आते ही हाय तौबा

मचेगी। इसको स्वतः छोड़ दूँगा, प्रतिकूलता स्वीकार कर लूँगा- इन दोनों के बन्धनों से, राग व द्वेष के बन्धनों से छुटकारा पा लूँगा। पराधीनता से छुटकारा पा लूँगा। स्वाधीन बनने के लक्ष्य को आत्मसात् कर लूँगा।

आत्मा में अनन्त अव्याबाध सुख, चिरशान्ति एवं अखूट आनन्द का महासागर लहलहा रहा है। पर ऊपर है कर्मों का आवरण। एक-एक आत्म-प्रदेश पर अनंतानंत कर्म, कषाय का वलय, मिथ्यात्व का वलय, अज्ञान का वलय, मोह का वलय, लेश्या का वलय है। राग-द्वेष की दुर्भेद्य ग्रन्थि है। अध्यवसाय, संज्ञा, वेदना में रूपान्तरित हो जाता है आत्मा का विशुद्ध उपयोग। केवलज्ञान केवलदर्शन की सत्ता होने पर भी घोर अज्ञान, घोर पीड़ा- तभी लक्ष्य विमूढ़ता, परिस्थिति में जीवन बुद्धि, अनुकूलता का राग, प्रतिकूलता का भय मौजूद है। यह चौमासा, आचार्य भगवन्त का यह सान्निध्य, लक्ष्य के प्रति विकल्प रहितता का निमित्त बने। अनुकूलता में प्रतिकूलता की कटिबद्धता बने। सामायिक, संवर, पौषध, दया, श्रावकव्रत व आगे बढ़कर महाव्रत आराधन हो। चलना होगा अन्तर में, गहरे उतरना होगा-

मैं पगली रोती रही, नदी किनारे बैठ।
जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी बैठ॥

ऊपरी स्तर पर चलने से थोड़ा-बहुत भले ही आ जाय, पर जब तक भीतर का लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता, वह आनन्द नहीं आ सकता। कर्म के पीछे भाव होता है। भाव के पीछे विवेक और विवेक के पीछे लक्ष्य होता है।

समता की बात चल रही थी। हम परिस्थिति, अवस्था एवं वस्तु को दोषी नहीं ठहरायें। अवस्था-वस्तु कभी भी अहितकारी नहीं हो सकती।

हम बोल देते हैं आचार्यश्री बाड़मेर-बालोतरा-जोधपुर से होकर पाली पधार गये हैं। बोलने वाले यह भी बोल देंगे कि मारवाड़ पधारने पर पहला लाभ पाली को मिला है, किन्तु आपको चिन्तन कर निर्णय लेना है कि जीवन को किस दिशा में ले जाना है? आपको लक्ष्य स्पष्ट करना है। महापुरुष (आचार्यश्री) कृपा करके प्रवचन सभा में पधारे हैं, हम आपश्री की अनुभवजन्य वाणी श्रवण कर साधना पथ पर चरण बढ़ायें, यही मंगल भावना है।

अध्यात्म-लेख

अध्यात्म की ओर

श्रीमती लीला सालेचा

दो मार्ग हैं हमारे सामने- एक है संसार का मार्ग और दूसरा है सिद्धि का मार्ग। संसार का मार्ग आदत का मार्ग है। अनादि काल से हम वासना के ही संस्कारों में जीने के अभ्यस्त रहे हैं। उन्हीं संस्कारों की पुष्टि करते रहे हैं। अनन्तकाल हमने ऐसे ही व्यतीत किया है। मोक्ष का मार्ग है-आदत को बदलने की शक्ति का मार्ग। जन्म-मरण का जो चक्र है वह संसार है और उससे छुटकारा पाना मोक्ष है। संसार से पार होना तो दूर, अभी हमने आदतों से भी छुटकारा नहीं पाया है।

हमारे भीतर अनेक रहस्य हैं, किन्तु हम उस महाग्रन्थ को पढ़ना नहीं जानते। इसलिए हमारे भीतर जो आत्मशक्तियों का खजाना है, उसकी खोज नहीं हो रही है। वह सोया पड़ा है, उसे प्रकट करने का काम नहीं हो रहा है। इस कारण से अनुभूति से हम कोसों दूर हैं। 'शान्ति' एवं 'आनन्द' के अक्षय खजाने को खोज नहीं पा रहे हैं। हम अपनी इतनी बड़ी सम्पदा के स्वामी होने पर भी दरिद्रता में जी रहे हैं। इसका मूल कारण है अज्ञान। जब तक व्यक्ति रहस्य को नहीं जानता, वह पारस और पत्थर में भेद नहीं कर सकता। बाहर ही बाहर जीने वाला, अर्थात् बहिर्मुखी आत्मावाला, स्थूलदृष्टि में जीने वाला, सदा सूक्ष्म जगत् से अनजान रहा है। सारी समस्याओं और दुःखों का यही कारण है। अन्तर्मुखी आत्मावाला होने पर ही समस्याओं का निराकरण हो सकता है।

बीज को वृक्ष बनाने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ती है। बीज यदि बीज ही रहे तो, हमें विशेष लाभ नहीं होगा। बीज यदि वृक्ष हो जाता है, तो विश्व को उससे लाभ मिलता है। पत्र, पुष्प, फल, छाया, ईंधन, ये सब बीज के विकास से ही संभव होते हैं। चेतना को भी विकास के शिखर तक पहुँचाने के लिए बहुत लंबी यात्रा करनी होती है। यदि चेतना सुप्त रहे तो, हमें भी वास्तविक लाभ से वंचित रहना पड़ता है। मैत्री, शान्ति, सौहार्द, सद्भावना, समता, समन्वय- ये सारे तत्त्व जागृत चेतना से ही फलित हो सकते हैं।

मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है- सत्य की खोज। इस संसार में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो सत्य की खोज कर सकता है। दूसरे सारे प्राणी, फिर चाहे वे पशु-पक्षी हों या देवता कोई भी सत्य की खोज नहीं कर सकता। मनुष्य के पास जितना विकसित मस्तिष्क, विकसित ग्रंथियाँ और अतीन्द्रियज्ञान के केंद्र हैं उतने दूसरे किसी प्राणी के पास नहीं हैं। इसीलिए मनुष्य ही सत्य की खोज कर सकता है। भगवान् महावीर ने कहा "अप्पणा सच्चमेसेज्जा' अपने आप सत्य की खोज करो। वैज्ञानिक जगत् में एक व्यक्ति सत्य का अन्वेषण करता है और सारा जगत् उसका उपयोग करता है। किन्तु अध्यात्मजगत् में जो व्यक्ति सत्य का अन्वेषण करता है, वही उस उपलब्धि का उपयोग करता है, वही उसकी प्राप्ति से अव्याबाध सुख एवं शाश्वत आनन्द को प्राप्त करता है। 'जिन खोजा तिन पाइया' यह है अध्यात्म जगत् का नियम। जो खोजेंगे वे पाएँगे। जो नहीं खोजेंगे, वे कभी नहीं पायेंगे।

चेतना का नियम है जानना और देखना। यही चेतना का स्वभाव है। ज्ञानी व्यक्ति इस नियम के आधार पर चलेगा कि चेतना का व्यापार केवल ज्ञाताद्रष्टा भाव है। प्रियता और अप्रियता उसका काम नहीं है। हमारी चेतना की शुद्ध धारा बहती है। उसके साथ कषाय की धारा मिल जाती है, तब वह विशुद्ध नहीं रहती। तब इन्द्रिय का विषय केवल विषय नहीं रहता, वह विकार बन जाता है। जब विषय विकार बन जाता है तब रूप हमारे लिए केवल रूप नहीं रहता। वह प्रिय या अप्रिय बन जाता है। तब रस हमारे लिए केवल रस नहीं रहेगा, वह या तो स्वादिष्ट होगा या अस्वादिष्ट होगा। हमारी सारी दृष्टि चेतना की दृष्टि या ज्ञेय की दृष्टि न रहकर प्रियता या अप्रियता की दृष्टि बन जाती है। प्रियता या अप्रियता के भाव को निकाल दें, यह इन्द्रिय शुद्धि का पहला उपाय है। इससे चेतना स्वच्छ रहेगी।

खेती अंगूरों की और बाड़ काँटों की। यह दृश्य एक व्यक्ति को बड़ा अटपटा लगा। उस व्यक्ति ने अपने कर्मचारी से कहा- यह क्या? एक ओर इतने मधुर कोमल अंगूरों के गुच्छे लटक रहे हैं तो दूसरी ओर कांटे ही कांटे हैं। यह अच्छा नहीं लगता। इस काँटों की बाड़ को हटाओ। इससे उद्यान का मनोहर रूप नष्ट हो जाता है। कर्मचारियों ने बाड़ को हटा दिया। दो चार दिनों में

ही अंगूर भी हट गए। बाग खुला पड़ा था। जो भी आया अंगूर तोड़कर चलता बना। बाग उजड़ गया।

दूसरे व्यक्ति ने अंगूरों का बाग लगाया और सारा ध्यान सुरक्षा पर केन्द्रित कर दिया। उसने बहुत ऊँची और सुदृढ़ दीवार बनवा दी। किंतु अंगूरों की सिंचाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। उद्यान सुरक्षित हो गया, पर पर्याप्त सिंचाई के अभाव में अंगूर लगे ही नहीं। केवल सिंचाई पर केन्द्रित दृष्टिकोण भी अधूरा है और केवल बाहरी सुरक्षा पर केन्द्रित दृष्टिकोण भी अधूरा है। परिपूर्ण दृष्टिकोण के अनुसार तो भीतर की सिंचाई चले और बाह्य बाड़ भी मजबूत रहे। ये दोनों बातें आवश्यक हैं।

जहाँ इन्द्रियों को संयमित, नियंत्रित करने का प्रश्न है, वहाँ भी इन दोनों बातों पर ध्यान देना होगा। मूल ध्यान देना है निग्रह पर। इन्द्रियाँ अपने आप में जटिल समस्या है। ये ही ज्ञान की स्रोत हैं और ये ही रागद्वेष की निमित्त हैं। एक ही आँख से हमें देखना है। देखने का एक रूप है संविज्ञान चेतना। उसका दूसरा रूप है संवेदन चेतना। दोनों चेतनाओं का दरवाजा एक है। दरवाजा खुला है तो मनुष्य या पशु कोई भी अन्दर आ सकता है। एक ही खिड़की है। खिड़की को बंद करो तो प्रकाश और हवा नहीं आएगी। यदि उसे खोल दें तो आंधी भी आएगी, रेत भी आएगी। क्या ऐसा कोई विकल्प है जिसमें प्रकाश और हवा आए, पर आँधी न आए, रेत न आए।

आत्मज्ञानियों ने एक उपाय निकाला मनोज्ञ-अमनोज्ञ के निग्रह का। पाँचों इन्द्रियाँ अपना-अपना विषय तो ग्रहण करेंगी ही। इनको बंद करने की जरूरत नहीं। ये इन्द्रियाँ हमारे ज्ञान की स्रोत हैं। हमारा ज्ञान कहाँ से आता है? इन्द्रियाँ चेतना के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करती हैं और हम बाह्य जगत् को जानते हैं, बाह्य जगत् से संपर्क करते हैं। ये ही इन्द्रियाँ कर्म-बंधन की हेतु भी हैं और निर्जरा की हेतु भी। हमने आँख से देखा, केवल देखा। यह संविज्ञान चेतना है अर्थात् ज्ञानावरण, दर्शनावरण एवं अंतराय कर्म का क्षयोपशम है। यदि हमने उसके साथ संवेदन की चेतना को जोड़ दिया, प्रियता (राग)-अप्रियता (द्वेष) की चेतना को जोड़ दिया तो मोहनीय कर्म जुड़ गया। इस स्थिति में संविज्ञान चेतना गौण हो गई और संवेदन की चेतना प्रधान। इसका अर्थ हुआ कि पूर्वकृत

कर्म के साथ मोहनीय कर्म का बंध हो गया। इससे न तन्निमित्तक कर्म का बंध अर्थात् नये कर्म का बंध रुकता है और न तन्निमित्तक पूर्वकृत कर्म का बंध क्षीण होता है। जो व्यक्ति आँख से केवल देखता है, कान से केवल सुनता है, नाक से केवल सूंघता है, जिह्वा से केवल रस चखता है, स्पर्शेन्द्रिय से केवल स्पर्श करता है अर्थात् संविज्ञान करता है, किन्तु उसके साथ संवेदना की चेतना को नहीं जोड़ता है वह पाँच इन्द्रियों से संबंधित नए कर्म का अर्जन नहीं करता और पूर्वबद्ध पाँच इन्द्रियों से संबंधित कर्म को क्षीण कर देता है।

हम मूल बात को समझें- प्रिय-अप्रिय, मनोज्ञ-अमनोज्ञ से कैसे दूर रहें? इन्द्रिय विजय में बाधा है मनोज्ञ-अमनोज्ञ की चेतना। जबतक व्यक्ति की यह चेतना जागृत है, इन्द्रिय-विजय संभव नहीं है। हम साधना कहाँ से शुरू करें। हम उसके लिए बाड़, दीवार या कांटे लगाएँ, पर ध्यान केवल उसी पर केन्द्रित न रहे। ध्यान उस पर लगायें-अंगूरों की बाग की सिंचाई ठीक हो रही है या नहीं? मनोज्ञता या अमनोज्ञता का भाव कम हो रहा है या नहीं? हमें उस भाव का निग्रह करना है। यह नहीं बताया गया कि आँख का निग्रह करो, कान एवं जीभ का निग्रह करो, रूप का निग्रह करो। किन्तु यह कहा गया कि रागद्वेष का निग्रह करो। प्रिय-अप्रिय भाव का निग्रह करो। हमारी साधना का बिन्दु यह है।

सामान्य आदमी भी इन्द्रियों से काम लेता है और साधक भी। एक भोगी है और एक त्यागी। त्यागी खाता है शरीर को चलाने के लिए और भोगी खाता है आसक्ति की तृप्ति के लिए। यह अन्तर है दोनों के दृष्टिकोणों का। दृष्टि-परिवर्तन की आवश्यकता है। मिथ्यात्व, अज्ञान और कषाय ये तीन हमारे जीवन के सबसे बडे विघ्न हैं, समस्या और दुःख की सृष्टि करने वाले हैं। जब तक व्यक्ति का दृष्टिकोण सही नहीं होता, तब तक समस्या का चक्र अनवरत घूमता रहता है। जीवन की बहुत सारी समस्याएँ मिथ्या दृष्टिकोण के कारण पैदा होती हैं। व्यक्ति का दृष्टिकोण सही नहीं है, वह हर बात को उल्टा देखता है। मिथ्या दृष्टिकोण के कारण व्यक्ति रस्सी को सांप समझ लेता है। वह भयग्रस्त होकर भागने लगता है, डर के मारे चिल्लाने लगता है। सीप पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं, वह चमकने लग जाती है। व्यक्ति उसे चांदी का टुकड़ा समझ लेता है, और उसे पाने के लिए लालायित हो जाता है। जब कच्छ के थार

पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं तब ऐसा लगता है चारों ओर पानी ही पानी है, तालाब ही तालाब है। यदि उसके भरोसे व्यक्ति गर्मी की मौसम में यात्रा पर निकल जाए तो क्या होगा? ज्यों-ज्यों व्यक्ति आगे बढ़ेगा, पानी आगे सरकता चला जाएगा, तालाब दूर होता दिखाई देगा। इसका नाम है- मृग-मरीचिका। बेचारा हरिण उस थार में पानी की आशा में दौड़ता है, दौड़ता ही चला जाता है। आखिर में वह प्यास से व्याकुल बना हुआ अपने प्राण गवां देता है, किन्तु उसे पानी की एक बूंद भी प्राप्त नहीं होती।

भगवान् महावीर ने कहा- जिसके पास समझ है, वही जागरूक होकर साधना करता है। वह पदार्थों का भोग भी करता है, पर वैसे नहीं करता, जैसे अद्रष्टा करता है। खाना, पीना, पहनना, ओढना, चलना, फिरना-वह अन्यथा करेगा। द्रष्टा का दृष्टिकोण होता है-उपयोगिता और आवश्यकता का। प्रभु महावीर ने साधक को ज्ञाता-द्रष्टाभाव विकसित करने का उपदेश दिया है। दोनों बातें हमारे सामने हैं- अंगूरों की सुरक्षा और बाड़ की सुरक्षा। निमित्त की सुरक्षा और उपादान की सुरक्षा। यह बात समझ में आए तो इन्द्रिय निग्रह या इन्द्रिय विजय का रहस्य समझ में आ सकता है।

धन, भोग, यौवन, वैभव, इन्द्रियाँ, शरीर ये सब नश्वर हैं, अस्थिर हैं। इस स्थिति में जो स्थायी है, स्थिर है, ध्रुव है, शाश्वत है, अविनाशी है, अचल है, उसकी ओर प्रस्थान क्यों नहीं हो रहा है? क्योंकि हमारा ज्ञान, दर्शन एवं आनन्द पुद्गल से आवृत्त है। व्यक्ति का शरीर भी पौद्गलिक है। चारों ओर पुद्गल का एकछत्र साम्राज्य है। यही आन्तरिक रूपान्तरण में बड़ी आपत्ति है।

व्यक्ति के भीतर अनन्त ज्ञान का प्रकाश विद्यमान है। उसे कभी बिजली जलाने की जरूरत नहीं। उसके भीतर अनन्त दर्शन है, उसे कभी देखने के लिए आँख खोलने की जरूरत ही नहीं हैं। उसके भीतर अक्षय आनन्द है, उसे सुख पाने के लिए कोई सामग्री जुटाने की जरूरत ही नहीं है। वस्तु-निरपेक्ष आनन्द भीतर है। लेकिन हम जो बाहर में आनन्द ढूँढते हैं, वह तो वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि सापेक्ष है। वह पराधीन है। पदार्थातीत सुख-प्राप्ति के अनन्त तत्त्व मनुष्य के भीतर हैं, पर इन पर पुद्गल का ढक्कन आया हुआ है। नीचे अमृत है, किन्तु ऊपर ज़हर का ढक्कन आ गया है। ऐसी स्थिति में अमृत

कैसे उपलब्ध हो सकता है। चारों ओर पुद्गल ही पुद्गल छाया हुआ है। आत्मा कहीं दिखाई ही नहीं देती है। व्यक्ति पुद्गलों की ओर आकर्षित हो जाता है। संयम-निर्जरा की ओर बढ़ते कदम रुक जाते हैं। 18 पाप पौद्गलिक हैं। ये व्यक्ति के अस्तित्व पर छाए रहते हैं। ये पुद्गल चेतना पर अपना आधिपत्य जमाते हैं। पुद्गल तो किराएदार है, पर पुद्गल चेतना के मालिक बन जाते हैं।

"आत्मा अन्य है और पुद्गल अन्य है" धर्म का यह सबसे शक्तिशाली मंत्र है। इससे पुद्गल के एकछत्र साम्राज्य को तोड़ा जा सकता है। 'भेदविज्ञान' जो आध्यात्मिक जगत् की महत्त्वपूर्ण प्रणाली है। आज जितने मुक्त बने हैं, वे भेदविज्ञान के कारण बने हैं। जितने बंधन में हैं, वे भेदविज्ञान के अभाव में बंधे हुए हैं। पुद्गल का एक छत्र साम्राज्य भेदविज्ञान का बोध हो जाने पर टूटने लग जाता है। भेद विज्ञान का अर्थ है- विवेक करना। गेहूँ और कंकरों को अलग कर देना, जैसे छाछ से मक्खन को अलग कर देना, सोना और मिट्टी को अलग कर देना।

साधना का अर्थ है- दिशा का परिवर्तन। यह स्वतः नहीं होता। इसके लिए प्रयोग होते हैं। सिद्धान्त हमें कहीं नहीं पहुँचाता। सुनी हुई बात भी दूर तक नहीं ले जाती। हमें प्रयोगों से गुजरना पड़ता है। केवल सुनना भार को बढ़ाता है। जो सुनते हैं उसे जीवन में घोल दें, तो भार नहीं बढ़ेगा। चीनी भारी होती है। एक कटोरा पानी से लबालब भरा है। एक बूंद भी उसमें नहीं समा सकती, पर हम उसमें चीनी डालें तो वह समा जाएगी, क्योंकि वह पानी में घुल जाती है। इसी प्रकार जो सुना है, उसे आचरण में घोल दें। भार नहीं बढ़ेगा और आचरण भी सुस्वादु हो जाएगा।

परिवर्तन के लिए सिद्धान्त ही नहीं प्रयोग की आवश्यकता है। हम सिद्धान्त और प्रयोग दोनों का समन्वय कर दिशापरिवर्तन का अनभुव करें। हमारी चर्चा चर्या बन जाएगी तो, हम लक्ष्य के निकट पहुँच पायेंगे।

-'अभिशिल्पा' बंग्लो, रमेशदादा जैन कम्पाउण्ड,
मेहरून लेक के पास, जलगांव (महा.)

प्रासङ्गिक

21 वीं शताब्दी का धर्म : जैन धर्म

श्री मुजफ्फर हुसैन

समय किसी भी धर्म को अपनी मर्यादा में नहीं बांध सकता। कोई भी सदी किसी विशेष धर्म की नहीं होती है। लेकिन आने वाले समय की कल्पना कोई करता है तो उसे मौजूदा परिस्थितियों पर विचार करना पड़ता है। 21 वीं शताब्दी तकनीक की शताब्दी है। इसलिए हर कोई प्रकृति की ओर से मिलने वाली वस्तुओं का उपयोग बडे पैमाने पर करना चाहता है। 21 वीं शताब्दी में जब नैसर्गिक वस्तुओं की कमी होगी और आदमी हाथ पांव मारने लगेगा, उस समय उसे महसूस होगा कि अपने काम की वस्तुओं को वह सरलता से किस प्रकार जुटाए? समय का भी अपना धर्म है इसलिए यदि धर्म का समय भी हमारे जीवन में आ जाए तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये। समय के साथ सत्ता के रूप बदले, जिसे प्राप्त करने के लिये हथियारों की आवश्यकता पड़ी और हम आज देखते हैं कि इतने विविध प्रकार के हथियार बाजार में आ गए हैं, जिनके बलबूते पर मनुष्य को सोचना पड़ता है कि धर्म इस समस्या से हमें किस प्रकार छुटकारा दिलाएगा? जब संगठित मानव जाति किसी धर्म को अपना लेती है तब हम देखते हैं कि धर्म दो भागों में बंट जाता है। एक तो कर्म-कांड और दूसरा उसका दर्शन। दुनियाँ के सभी धर्मों में ये दोनों बातें देखने को मिलती हैं। हम यहाँ कर्म-कांड के रूप में नहीं, बल्कि दर्शन के आधार पर यह कहना चाहेंगे कि 21 वीं शताब्दी का धर्म 'जैन धर्म' होगा। इसकी कल्पना किसी सामान्य आदमी ने नहीं की है बल्कि बनार्ड शा ने कहा कि यदि मेरा दूसरा जन्म हो तो मैं जैन धर्म में पैदा होना चाहता हूँ। उक्त बात शा ने गाँधी जी के पुत्र देवदास गांधी से कही थी। रेवेरेंड तो यहाँ तक कहते हैं कि दुनिया का पहला मज़हब जैन था और अंतिम मज़हब भी जैन होगा। बाल्टीमोर यू एस.एस के दार्शनिक डॉक्टर मोराइस का तो यहां तक कहना है कि यदि जैन धर्म को दुनिया ने अपनाया होता तो यह दुनिया बड़ी खूबसूरत होती। जस्टिस रानडे ने कहा कि ऋषभ देव, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ और भगवान् महावीर ये चार तीर्थंकर नहीं, बल्कि जीवन और चिंतन की चार दिशाएँ हैं।

ऐसा जैन धर्म में क्या है? जैन, धर्म नहीं जीवन जीने का दर्शन है। सरल

भाषा में कहूँ तो यह खुला विश्व विद्यालय (ओपन यूनिवर्सिटी) है। आपको जीवन का जो पहलू चाहिये वह यहाँ मिल जाएगा। दर्शन ही नहीं बल्कि संस्कृति, कला, संगीत एवं भाषा का यह संगम है। जैन तीर्थंकरों ने संस्कृत को न अपना कर जनभाषा प्राकृत को अपनाया। क्योंकि वे जैन दर्शन को विद्वानों तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि वह तो सामान्य आदमी तक पहुँचे और उसके जीवन का कल्याण करे।

दुनिया के सभी धर्मो ने अपने चिह्न तय किये, इनमें कुछ हथियारों के रूप में तो कुछ आकाश में चमकने वाले चांद और सूरज के रूप में। 24 तीर्थंकरों में एक भी ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता जिसके पास धनुष बाण हो या फिर गदा अथवा त्रिशूल हो। हथियारों से लेस दुनिया के राजा अपनी शानो-शौकत से अपना दबदबा बनाए रखने में अपनी महानता समझते थे, लेकिन यहाँ तो भोले पशु-पक्षी अथवा तो जलचर प्राणी उनके साथ हैं। उनका कहना था कि हम साथ-साथ जियेंगे और इस दुनिया को हथियार रहित बनाएंगे। इंसान ने सुविधा के लिये घोड़े, हाथी, गरुड, मोर और न जाने किन-किन प्राणियों को अपनी सवारी बना ली। लेकिन जैन तीर्थंकर तो किसी को कष्ट नहीं देना चाहते हैं, वे अपने पांव के बल पर सारी दुनिया को उलांगते हैं और प्रकृति के भेद जानने की कोशिश करते हैं। रहने को घर नहीं, खाने की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं, लेकिन दुनिया के कष्टों का निवारण करने के लिये अपनी साधना में कमी नहीं आने देते।

दुनिया में असंख्यवाद हैं जो भिन्न-भिन्न विचारधारा पर अपना चिंतन करते हैं। वे विचार से समाज बनाते हैं। लेकिन जैन धर्म समाज को व्यक्ति में देखता है। हर वाद ने व्यक्ति को छोटा कर दिया है। लेकिन हम देखते हैं कि जैन विचार ने मनुष्य को सब से महान् बना दिया है। किसी भी हालत में वह व्यक्ति के गुण और उसके सामर्थ्य को समाप्त नहीं होने देता। दुनिया के अन्य धर्म मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाकर उसे जीवन-यापन करने के लिये लाचार बना देते हैं, लेकिन यहाँ तो मनुष्य की अपनी स्वतंत्रता सर्वोपरि है। वास्तव में तो यही स्थिति उसे 'अहं बह्माऽस्मि की ऊँचाइयों तक पहुँचाती है। आदमी से समाज बने तो क्या बड़ी बात। इंसान को वह भगवान ही नहीं, बल्कि इस समस्त दुनिया का रचयिता बनाने की बात करता है। इंसान का बनाया कम्प्यूटर अपग्रेड हो सकता है तो फिर इंसान क्यों नहीं? चांद सितारों को छूने वाला इंसान जब भगवान बन जाएगा तो फिर क्या समय अपनी सीमा में उसे बांध सकेगा। वह 21 वीं शताब्दी

का नहीं बल्कि इस अजर और अमर दुनिया का प्रणेता बन जाएगा।

लेकिन 21 वीं शताब्दी जो उसके लिये चुनौती भरी है वहाँ तो हिंसा का नंगा नाच हो रहा है फिर वह महामानव कैसे बनेगा। आज तो हिंसा के प्रतीक हैं ओसामा, ओबामा और अमेरिका। इन तीनों 'अ' को पराजित करने वाला जैन दर्शन अपनी झोली में एक संजीवनी को संजोए हुए है जिसका नाम है अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह। तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे अलग नहीं हो सकते। चंद्रगुप्त, अशोक और हर्षवर्धन उस खूनखराबे को नहीं देख सके। इसलिये तो फिर उन्होंने कसम खाई कि वे अब युद्ध नहीं करेंगे। रावण से युद्ध करने वाले राम ने कहा अब अयुद्ध चाहिये और अयोध्या बसा लिया। एक क्षत्रिय कहता है अब वध नहीं होगा तभी तो उसका साम्राज्य अवध के नाम से प्रसिद्ध हो गया। हर लड़ाई के बाद इंसान शांति की तलाश में चलने को मजबूर हो गया। पहला महायुद्ध समाप्त हुआ तो ईसा के मानने वालों ने लीग ऑफ नेशन बनाई। लेकिन फिर भी द्वितीय महायुद्ध की ज्वाला भड़की तो राष्ट्र संघ बन गया। हर युद्ध के बाद अयुद्ध और हर हिंसा के बाद अहिंसा यह इंसान की खोज रही। एटम बम डालने वाले जनरल एशायर को पता लगा कि हिरोशिमा और नागासाकी में क्या किया, तब उसे भारत की याद आई और अपनी मां से कहने लगा– मुझे कोई श्वेत वस्त्रधारी महाराज के पास ले चल मुझे वहां शांति मिलेगी। क्योंकि उसने पढ़ा था कि भारत को न जीत सकने वाला सिकंदर जब एथेंस लौट रहा था तो उसे एक जैन साधु ने कहा था दुनिया को जीतने वाले काश! तुम अपने आपको जीत सकते। जैन साधु को सिकंदर अपने साथ ले गया। जैन साधु सिकंदर के बाद भी एथेंस में वर्षों तक लोगों को अहिंसा का संदेश देता रहा। एथेंस में सब कुछ बदल गया है, लेकिन आज भी वहाँ जैन साधु की प्रतिमा लगी हुई है। प्लेटो और एरिस्टोटल का एथेंस इतना प्रभावित हुआ कि पायथोगोरस जैसा महान गणितज्ञ यह कहने लगा कि मैं जैन हो गया हूँ।

21 वीं शताब्दी पानी के संकट की शताब्दी है। जैन मुनि तो कम पानी पी कर अपना काम चला लेते हैं, लेकिन हम जैसे लोग क्या करेंगे? उसका मूल मंत्र है शाकाहार। शांति, कांति, हार्द और रक्षा की परिभाषित करता है यह शब्द। मांसाहार के लिये हाइब्रिड बकरे, डुक्कर और मुर्गियाँ पैदा की जा रही हैं। इन कृत्रिम पशुओं पर अध्ययन करें तो एक बकरी का बच्चा यदि एक किलो है तो

उसे दो किलो बनाने में 5000 गेलन पानी लगता है। लेकिन एक किलो टमाटर पैदा करने के लिए 160 लीटर पानी। उस संकट के समय आप क्या करेंगे?

भूकम्प, ज्वालामुखी और सुनामी अब हमारा भाग्य बन गए हैं। जानवरों के कत्ल के कारण यह विपदाएं आती हैं, यदि विश्वास न आए तो बीसोलॉजी का अध्ययन जरूर करिये। इस संकट से उबारने वाला धर्म ही केवल 21वीं शताब्दी का धर्म बन सकता है।

6 अरब की यह दुनिया कहाँ जा कर रुकेगी? साधन और स्रोत कम होंगे तो फिर टकराव अवश्य होगा। क्या ब्रह्मचर्य इसका उपाय नहीं है। मोक्ष चाहते हो तो मौत और जीवन के चक्कर से निकलो। स्वयं ऐसा करना चाहते हो तो फिर दूसरों को जन्म देकर उनके सर पर पाप की गठरी क्यों रखना चाहते हो?

21 वीं शताब्दी में नारी स्वतंत्रता की बात की जाती है। जैन धर्म में झांक कर देखो तो हमारी साध्वियों को कितना बड़ा सम्मान मिला है। वे पूजनीय हैं। धर्म को पढ़ाती और सिखलाती हैं। ईसाइयों ने मरियम की बेटियों के साथ क्या किया? तलाक, तलाक और तलाक यह शब्द कानों को फाड़ देते हैं। दासी और भोगिनी को साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैन धर्म ने किया है। समानता और स्वतंत्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है।

20 वीं सदी ने अणु को तोड़ा, परमाणु ने चमत्कार किया। उससे ऊर्जा का पुंज एटम बम तैयार हो गया। जैन धर्म का भेद-विज्ञान आत्मा और शरीर को अलग कर देने वाला बहुत पुराना विज्ञान है। आत्मा ही तो एटम है जो समस्त दुनिया में शक्ति का संचार करती है।

भारतीय दर्शन में वसुधैव कुटुम्ब की कल्पना की गई है, जिसका आधार सह अस्तित्व है। इसे सर्वधर्म समभाव की भी संज्ञा दी जाती है। लेकिन आज तक जो यह शब्दावली केवल राजनीति के दायरे में ही प्रस्तुत की गई है। यदि आप अध्यात्म के आधार पर इसका विचार करते हैं तो फिर आपको जैन दर्शन की ओर लौटना पड़ेगा। नागरिकता और राष्ट्रीयता इन दिनों हर देश के मानव का आधार है। लेकिन जब तक समानता और स्वतंत्रता नहीं मिलती, ये शब्द खोखले मालूम पड़ते हैं। मनुष्य के कष्टों का निवारण और अंतरराष्ट्रीय आधार पर उसका उद्धार केवल और केवल जैन दर्शन के माध्यम से ही सम्भव है।

-सी 1/8, पार्क साइट, विक्रोली, मुम्बई- 79 (महा.)

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (8)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

अहो आश्चर्यम्!

पथिक,

संस्कृत साहित्य में एक उक्ति है-

"शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे-गजे।
साधवो न हि सर्वत्र चंदनं न वने वने।।"

अर्थात् हर पर्वत पर माणिक नहीं होता,
हर गज में मुक्ता नहीं होती,
संत हर जगह नहीं मिलते और
हर वन में चन्दन उत्पन्न नहीं होता।
आचार्य हस्ती की कथा भी एक ऐसे बिरले संत की
विलक्षण कथा है जो इतिहास में कहीं-कहीं ही मिलती है।

यह कथा एक ऐसे जीव की है
जिसके तात का अवसान उसके जन्म के पूर्व ही हो गया एवं
जिसने गर्भ में ही मानो जन्म-मरण के चक्रव्यूह से
निकलना सीख लिया।

यह कथा एक ऐसे शिशु की है
जिसके शैशव में ही उसकी माँ के अतिरिक्त

सभी परिजनों का साया उठ गया लेकिन,
वे वज्रपात उसकी राह का रोड़ा नहीं बन सके अपितु,
उसकी सफलता के सोपान बन गये।
इन्हीं विपदाओं में उसने अध्यात्म का पहला पाठ पढ़ा,
अक्षरज्ञान के साथ ही जग की अनित्यता को भी बाँचा।
इसी अनित्यता के बोध ने उसके दुःखों को भी अनित्य बना दिया।
अनित्यता मानो वंदनीय हो गई।

यह कथा एक ऐसे बालक की है
जिसने खेल-कूद की उम्र में ही दुनियाँ के खेल से ऊपर उठकर
संयम का पथ ले लिया,
जग में आकर जग के अनुस्रोत से प्रतिस्रोत में चला गया,
'जग' के विपरीत चलकर 'गज' हो गया,
फिर 'गज' से 'गजेन्द्र'।
यह कथा एक ऐसे कुलदीपक की है
जिसने वैराग्य में डूबी माँ के लिए
उत्कर्ष का पथ प्रशस्त कर
माँ के मातृत्व को ही धन्य नहीं किया,
अपने पुत्रत्व को भी चरितार्थ कर दिया।

मुनिवर,
गुरुदेव की कथा सुनते-सुनते
मैं तो विस्मय से विभोर हो जाता हूँ।

पथिक,
तुम सही कह रहे हो।
गुरुदेव की कथा उनके गर्भ में अवतरण से लेकर
जीवन के समापन तक अद्भुत घटनाओं से भरी है।
किसी शायर ने ठीक ही कहा है-

"दर्दे-उल्फ़त जिंदगी के वास्ते अक्सीर है
ख़ाक के पुतले इसी जौहर से इन्सान बन गये।"

पथिक,

कठिन परिस्थितियों में भी अपने पौरुष से विजय प्राप्त करने की
इस कथा से नसीहत लेने की आवश्यकता है।
केवल आठ वर्ष की वय में उन्हें बोध हो गया कि
मेघ-मंडल से विलग हुई वायु से टकराती जल की बूँद की तरह
आयु अल्प है और
जीवन बादलों के मध्य कौंधने वाली
बिजली की तरह चंचल है।
अनित्यता के अवबोध ने उन्हें जाग्रत कर दिया और
दस वर्ष की उम्र में संयम अंगीकार कर
वे निर्वाण की खोज में निकल पड़े।
जीवन के प्रथम चरण में ही
'अनित्य-भावना' का बोध हो जाना
क्या किसी आश्चर्य से कम है?

पथिक,

गुरु शोभा के पोषण और स्वयं के पुरुषार्थ से
मुनि हस्ती संयम जीवन के प्रारम्भ में ही
विनय-सम्पन्न और श्रुत-सम्पन्न साधक बन गये।
'व्यवहार सूत्र' में वर्णित आचार्यपद की सभी अर्हताएं उनमें झलकने लगी-
उनमें आचार कुशलता (ज्ञानाचार और विनयाचार में परिपूर्णता)
संयम कुशलता (यतना पूर्वक प्राणी रक्षा एवं संयम से आत्म-परिणामों में विशुद्धता)
प्रवचन कुशलता (जिन-वचनों का विशिष्ट ज्ञान एवं कुशल उपदेष्टा)
प्रज्ञप्ति कुशलता (स्व एवं पर सिद्धान्तों का सम्यक् ज्ञाता)

संग्रह कुशलता (द्रव्य से उपधि, शिष्यादि और भाव से श्रुत व गुणों का संग्रह)
उपग्रह कुशलता (साधुजन की सेवा करना व करवाना)
अक्षत आचार (आधाकर्मी दोषों से रहित आहार ग्रहण की पालना)
अभिन्नाचार (अतिचारों का निषेध एवं पंचाचार का पालन)
अशबाचार (विनय, व्यवहार, भाषा आदि में दोष रहित आचरण) और
असंक्लिष्ट आचार (इहलोक-परलोक के सुखों की कामना नहीं)
की उज्ज्वल संभावनाओं से गुरु शोभा अभिभूत थे।
इसीलिए उन्होंने अत्यन्त प्रमोद भरी प्रत्याशा से
मुनि हस्ती को मात्र पंद्रह वर्ष छः मास की वय में
एक गुप्त पत्र में आचार्यपद के लिये मनोनीत कर दिया।

मुनिवर,
"खान रत्न को पैदा करती है, किन्तु शिल्पी उसमें शोभा लाता है।"
गुरुदेव पर यह उक्ति कितनी सार्थक घटित होती है।
माँ रूपा सम धारिणी ने एक रत्न को जन्म दिया और
गुरु शोभा रूपी शिल्पी ने उसमें शोभा भर दी।

पथिक,
अब मैं उनके जीवन के उस कथा सूत्र का वर्णन करता हूँ
जो आश्चर्यों का भी आश्चर्य है।
अपने उत्तराधिकारी के मनोनयन के पश्चात्
गुरु शोभा देवलोक गमन कर गये।
उत्तराधिकारी के चयन का पत्र प्रकाश में आया।
सभी ने हर्ष विभोर हो उसका अनुमोदन किया।
मुनि हस्ती से आचार्यपद ग्रहण करने की विनती की गई।
वे विचारों में डूब गये।
भगवान् का कथन है कि गुरु का प्रस्ताव शिष्य के लिए आज्ञा है,

अतः उसे स्वीकार तो किया, परन्तु उन्होंने
स्थविर संतों से प्रार्थना की कि उन्हें पदभार के लिए
पाँच वर्ष का समय दिया जाये
ताकि, वे अपने को और योग्य बना सके।
स्थविर संतों ने सुझाव स्वीकार कर
अन्तरिम काल के लिये संघ-संचालन का दायित्व संभाला।

पथिक,
अन्तरिम काल में
मुनि हस्ती के शील से उनकी प्रज्ञा प्रक्षालित होती गई और
उनकी प्रज्ञा से शील प्रक्षालित होता गया।
स्थविर संतों को चार वर्ष में ही
उनमें गणधारण करने की पूर्ण योग्यता दिखी।
मुनि हस्ती की जिन-प्रणीत मार्ग पर पूर्ण श्रद्धा थी,
वे श्रुत ग्रहण करने में अत्यन्त मेधावी थे,
उनमें शील और श्रुत का सुन्दर समन्वय होने से
वे बहुश्रुत हो गये थे,
वे संहनन शक्ति सम्पन्न थे एवं
कलहमुक्त थे।
चतुर्विध संघ ने अनुभव किया कि
पदारोहण में अब विलम्ब उचित नहीं और
एक दिन मंगल मुहूर्त में संघ की संविक्ति से
उन्हें आचार्यपद पर प्रतिष्ठित कर दिया।
समय की आँख विस्मय से अनागत को देखने लगी।

(क्रमशः)

English-Section

Religion and Happiness

Shri K.S. Galundia (Retd. IAS)

The history of mankind is the history relating to the pursuit of happiness. Since times immemorial we are searching our roots and ultimate purpose of life. We have searched it in power, wealth, religion and all sorts of physical and spiritual activities, still the search is going on.

How strongly the need for happiness is being felt in modern life can be well illustrated by the fact that in many universities of the world, including Harvard, separate department has been established to make search on and teach the subject. Lot of literature has also been published on the subject and training camps are organized to teach art of living and different methods to relieve Stress and achieve happiness. Despite all this the search for happiness has not ended.

Modern Thinking

It is a modest attempt to look at it from different angles and especially the relevance of religion in achieving this goal. A large section of the people today feel that so called religion has no relevance in life. They say "we do not know from where we have come and what will happen to us after death". According to them life is a biological phenomenon. This gives rise to the thinking that one should enjoy life by indulging in all sorts of physical and materialistic pleasures and pursuits. Nevertheless, as a responsible member of the society they do believe in observing the ethical norms and fulfilling there duties as a citizen.

To the modern youth this philosophy of life appears quite convincing and rational because they do not think beyond the physical and material world. What an irony?

We call then atheists or 'NASTIKS'. The western culture is plagued by this thinking. Their motto of life is "Eat, Drink and be Merry". There is nothing wrong in it, if it were to provide lasting peace and happiness. But the irony is that it leads to all sort of excesses, distortions and sometimes unnatural and antisocial activities like drg addiction, alcoholism, suicides, family feuds and gay and lesbian culture, to name a few. Our desires are abysmal, the more you fulfill them the more they multiply. We can fulfill our needs but we can never fulfill our desires. The mad rush for power, pelf and pleasures and unfulfilled desires make our life Hell and finally lead to the degradation of body, mind and soul.

Religion and Happiness

In so called high class modern society religion is considered to be an anathema and a sign of backwardness and blind faith. Most of the people think that religion means going to the Temple, Mosque, Church or other places of Worship and performing certain rights and rituals, chanting the mantras and worshiping God in different ways and forms. What a misconception? They only see the outer form and not the substance. Like any other physical activities religion can stand the tests of scientific reasoning provided we understand the true meaning and purpose or religion.

True Religion Teaches us the Art of Living

Human beings have been endowed with one virtue, which is not found in animals. i.e. REASON. The power of human mind is more than a super computer. By this power alone human being has achieved phenomenal progress in all walks of life. The animals also have the basic instincts for survival like hunger, sex, fear and possession but this is not the be all and end all of human life. It is much superior and precious, with a purpose beyond the senses. Once we realize this we can think, understand and appreciate the niceties of life.

Base Camp

Weak thought result in weak action. As thoughts are the seeds of all our actions we should sow pure and powerful thoughts so that we can reap a good harvest. Therefore, first of all we have to train our minds in such a manner that it is free from all sorts of Fear, Doubt and NEGATIVE THINKING. We have to remove all the clutter from our minds and do the cleansing for attracting new and positive thoughts. Only a clean slate can be used, so a clean mind.

Every human mind is programmed by his past action (karmas), what we call PRARABDHA. Therefore, according to the programming of our minds we develop the qualities and actions, different from others. To change this programming lot of practice and perseverance (purusharth) is required. Here comes the role of following a particular lifestyle which can inculcate discipline and self control. This can be achieved by yoga, meditation, prayer, worship and penance etc. From here starts the real pursuit of Truth. We may call it the base camp from where real ascent to the peak starts. Whatever the objective in life, it can be achieved only when our base is strong. We return to our base camp time and again to replenish, reinvigorate and recharge our selves.

What is Happiness

Man asked God "I want happiness" God replied kill "I" Which stands for ego, then kill "want", which stands for desires and now you are left with nothing but 'happiness'. It may sound little ordinary and mundane but carries lot of meaning. Ego and desires are the real cause of our sorrows and road blocks in the way to happiness.

Happiness is like our shadow, run after it and it will run from you, run from it and it will follow you. This can only be achieved by disciplined life, free from the fetters of lust, anger, attachment, ego and greed. Bhagwan mahaveer said that only one who is unattached to this world and the world here after and remains equanimous in all circumstances can

achieve sublime bliss, which is happiness beyond senses.

Kindle the Light

Kindle the light of piety. Make light in the lives of others by helping the poor weak and down trodden. Helping a poor child for his education, serving the sick giving food to the hungry and helping deserving people in our own way will create a positive attitude and a mind set which will ultimately lead to the path of happiness.

Lasting Happiness

Happiness is not a place we reach but a state of mind we create. It is possible only by using our talents to make a difference in the life of others. Happiness is so elusive and difficult to find because it is under our nose. We have to dive deep in our hearts and kindle the light of kindness, piety and self realization. The search starts from here and we will discover real happiness within our own self. Guru hasti gave a simple mantra to achieve this state of mind. Practice of equanimity of true knowledge. (GURUHASTI KE DO FARMAN : SAMAYIK SWADHYAY MAHAN) True Religion is the key to gateway of lasting happiness.

-53, Lane no. 2, Gopalwadi, Jaipur (Raj.)

अनमोल वचन

1. संसार में कोई अपना साथी नहीं संसार तो विश्वासघाती है।
2. संसार के सुख चार और दुःख हजार हैं।
3. आत्मा में बसना तो पर्युषण है और दुनिया में बसना प्रदूषण है।
4. जो गुरु के पद (चरण)को पकड़ लेता है उसे अभूतपूर्व पद की प्राप्ति होती है।
5. जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरु नहीं।
6. कामना रहित पुरुषार्थ करने वाला 'श्रमण' एवं कामना सहित पुरुषार्थ करने वाला 'श्रमिक' कहलाता है।

-श्री प्रमोद हीरावत, जयपुर द्वारा
महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित

मुक्तक

स्वाध्याय

श्री मगनचन्द जैन

(1)
स्वाध्याय स्व प्रकाशक है,
धर्म-अध्यात्म का प्रभावक है।
शास्त्रों का करता है स्वाध्याय जो,
वही सच्चा जैन श्रावक है।

(2)
स्वाध्याय से विचार बदलते हैं,
पाप-कालिमा के बादल छँटते हैं।
नित्य प्रति अभ्यास करके देखिए,
जीवन में सुख-शान्ति के दीप जलते हैं।

(3)
स्वाध्याय से ग्रन्थि-भेद होता है,
आत्मा पर आच्छादित कर्म-मल दूर होता है।
ललक है स्वाध्याय करने की जिसको,
उसका जीवन ज्ञान-गरिमा लिए होता है।

(4)
स्वाध्याय-बिना ज्ञान नहीं होता,
ज्ञान-बिना अन्तर अंधेरा दूर नहीं होता।
इसीलिए गुरुवर ने कहा- स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो,
इसके करने से कभी दुःख नहीं होता।

(5)
स्वाध्याय जीवन जीने की कला सिखाता है,
व्यक्ति का जीवन-निर्माण कर आगे बढ़ाता है।
अशुभ से शुभ, शुभ से शुद्ध बनाकर,
भव-भ्रमण से मुक्त कर सिद्ध-बुद्ध बनाता है।

-सेवानिवृत अध्यापक, फाजिलाबाद (म्हिण्डौन) करौली (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 60)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(निर्ग्रन्थ)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं?

समाधान– जो ग्रन्थ से रहित हो, उसे निर्ग्रन्थ कहते हैं। ग्रन्थ दो प्रकार के होते हैं– आभ्यन्तर और बाह्य। क्रोधादि कषाय, नौ नो-कषाय, मिथ्यात्व, ये आभ्यन्तर ग्रन्थ हैं। धर्मोपकरण के अलावा घर-बार, कुटुम्ब-परिवार और धन्य-धान्यादि बाह्य ग्रन्थ हैं। इस प्रकार जो आभ्यन्तर व बाह्य ग्रन्थ से रहित हैं, वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

जिज्ञासा– आगमों में निर्ग्रन्थों की क्या-क्या विशेषताएँ बतलायी गई हैं?

समाधान– सूत्रकृतांग 1-16 में निर्ग्रन्थों की विशेषता बताते हुए कहा है– जो द्रव्य और भाव से अकेला (एकत्व भाव वाला) है, जो अपनी आत्मा को, एकत्व को सम्यक्रूपेण जानता है। जो सम्यग्ज्ञान व सम्यक् दर्शन से युक्त है। जिसने हिंसा, झूठ, चोरी आदि आस्रव द्वारों को रोक दिया है। जिसने अपनी इन्द्रियों को तथा मन को वश में कर लिया है। जिन्होंने इन्द्रियादि की विषयों में प्रवृत्ति तथा राग-द्वेष के प्रवाह को रोक लिया है। जो सम्मान और पूजा की इच्छा नहीं रखते हैं, जो धर्म के इच्छुक, धर्म के ज्ञाता, मोक्षमार्ग में कुशल, समत्वशील, दान्त, देह की आसक्ति से रहित हैं। जो देह-भाव का त्याग कर आत्म-भाव में रमण करते हैं, वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र के 16 वें ब्रह्मचर्य-समाधि अध्ययन में निर्ग्रन्थों की विशेषताएँ निम्नांकित रूप में देखने को मिलती हैं–

निर्ग्रन्थ वे हैं जो स्त्री, पशु, नपुंसक आदि से रहित शयन-आसन करते हैं, स्त्री सम्बन्धी कामविकार वर्धक कथा नहीं करते हैं।

स्त्रियों के साथ एक आसन पर नहीं बैठते। स्त्रियों का रूप एवं अंगोपांगादि को रागभाव से नहीं निरखते। स्त्रियों से मधुर शब्दों, गीतों, हास्य, विलाप आदि नहीं सुनते हैं। गृहस्थ अवस्था में भोगे हुए भोगों का स्मरण भी नहीं करते। विकारवर्धक-गरिष्ठ भोजन नहीं करते। भूख से अधिक भोजन नहीं करते। शरीर की विभूषा नहीं करते। मनोज्ञ शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श का रागादि भावों से सेवन नहीं करते हैं।

जो आत्म-हित, स्व-पर हित की साधना में निरन्तर वर्धमान रहते हैं, वे निर्ग्रन्थ हैं।

जिज्ञासा- निर्ग्रन्थ के कितने भेद होते हैं?

समाधान- यद्यपि सभी निर्ग्रन्थ आभ्यन्तर एवं बाह्य ग्रन्थों से रहित होते हैं, सर्वविरति चारित्र वाले होते हैं, तथापि चारित्र मोहनीय कर्म के क्षयोपशमादि की विशेषताओं के कारण से निर्ग्रन्थ के पाँच भेद भगवती सूत्र के शतक 25 उद्देशक 6 में इस प्रकार बतलाये हैं-

1. पुलाक, 2. बकुश, 3. कुशील, 4. निर्गन्थ और 5. स्नातकं।

जिज्ञासा- पुलाक किसे कहते हैं?

समाधान- दाने सहित धान्य के पूले को 'पुलाक' कहते हैं। वह सार रहित होता है, उसी प्रकार संयम रूपी सार से रहित संयत को 'पुलाक' कहते हैं।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ कैसे बनते हैं?

समाधान- संयम की विशुद्ध एवं उच्च साधना करते-करते कतिपय श्रमणों को 'पुलाक' नाम की लब्धि-प्राप्त हो जाती है। उस लब्धि के प्रयोग से पुलाक निर्ग्रन्थ बन जाते हैं। टीकाकार कहते हैं कि जिनशासन पर, चतुर्विध संघ पर आई हुई आपत्ति के निवारण करने के लिए जब कोई दूसरा उपाय नहीं दिखता तो पुलाक निर्ग्रन्थ अपनी विशिष्ट शक्ति से आततायी का दमन करते हैं। बल-वाहन सहित चक्रवर्ती का भी विनाश करने की सामर्थ्य भी उनमें आ जाती है।

जिज्ञासा- पुलाक के कितने भेद होते हैं?

समाधान– पुलाक के प्रमुख दो भेद हैं– लब्धि पुलाक और प्रतिसेवना पुलाक।

पुलाक लब्धि का प्रयोग करने वाले लब्धि पुलाक कहलाते हैं। ज्ञानादि की विराधना करने वाले प्रतिसेवना पुलाक कहलाते हैं। कतिपय आचार्यों का मत है कि ज्ञानादि में अतिचार लगाने वाले निर्ग्रन्थों में से ही किसी को उस प्रकार की लब्धि प्राप्त होती है और वही लब्धि पुलाक कहलाता है, इसके अतिरिक्त दूसरा कोई लब्धि पुलाक नहीं होता।

जिज्ञासा– प्रतिसेवना पुलाक के कितने भेद होते हैं?

समाधान– प्रतिसेवना पुलाक के पाँच भेद होते हैं–

1. **ज्ञान पुलाक–** ज्ञान के अतिचारों का सेवन करने वाला।
2. **दर्शन पुलाक–** शंका, कांक्षा, कुतीर्थपरिचय आदि समकित के अतिचारों का सेवन करने वाला।
3. **चारित्र पुलाक–** मूल गुण, उत्तर गुण में दोष लगाकर चारित्र की विराधना करने वाला।
4. **लिंग पुलाक–** साधु लिंग से अधिक धारण करने वाला अथवा बिना कारण अन्य लिंग को धारण करने वाला।
5. **यथासूक्ष्म पुलाक–** कुछ प्रमाद होने से मन से अकल्पनीय ग्रहण करने का विचार करने वाला साधु यथासूक्ष्म पुलाक है।

जिज्ञासा– पुलाक कौन बनते हैं?

समाधान– जो जिनकल्प में तथा कल्पातीत में होते हैं, वे पुलाक नहीं बनते। स्थविर कल्प में रहे हुए साधु ही पुलाक बन सकते हैं। जिन साधुओं को नौ पूर्व का ज्ञान हो, अर्थात् कम से कम नवें पूर्व की तीसरी आचार वस्तु का ज्ञान हो तथा अधिक से अधिक सम्पूर्ण नौ पूर्व का ज्ञान हो, वही लब्धि सम्पन्न साधु पुलाक बन सकते हैं। नौ पूर्वों से अधिक ज्ञान वाले साधु में पुलाकपना नहीं पाया जाता है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर(राज.)

कविता

खुशियों के तराने

डॉ. रमेश 'मयंक'

दुःख
देह का, वाणी का, मन का होता है
देह का दुःख-कष्ट
वाणी का दुःख-घाव
मन का दुःख-अनुभूति जन्य पीड़ा है।

संभव है
दुःख का उपचार
ज्ञान बनाता व्यक्ति को समझदार
ज्ञानी व्यक्ति करते
सर्वत्र संतुलित व्यवहार।

नहीं करें हम
दुःखों का गा-गा कर गुणगान
बढ़ा-चढ़ा कर बखान
समायोजन से हो जाता
दुःखों का निदान।

दूसरों के दुःखों को अपने से ज्यादा मानेंगे
स्व विवेक से दुःख दूर करने की ठानेंगे
तो फिर गूंजेंगे
प्रत्येक के जीवन में खुशियों के तराने।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

कथानक (2)

शेर बना शाकाहारी

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

पूर्ववृत्त- चम्पानगरी में जितशत्रु नामक राजा राज्य करते थे। वे बहुत गुणवान, मिलनसार और पशु-प्रेमी थे। उनके अनेक मित्रों में सुदत्त सेठ उन्हें बहुत प्रिय था। राजा जितशत्रु ने एक बाग में विभिन्न पशु-पक्षियों को पाल रखा था। एक दिन राजा के मन में विचार आया कि मेरे पास एक शेर भी होना चाहिए। इस विचार को साकार रूप देने के लिए शेर पकड़ने वाले को शेर लाने का आदेश दिया। वे एक हृष्ट-पुष्ट और युवा शेर पकड़ कर लाए। उसे राजा ने अपने सामने दरबार में रखवा दिया। तदनन्तर.....

राजा सवेरे नित्य-नियम से निपट कर, तैयार होकर जल्दी ही दरबार में पहुँच जाते और दिन भर पिंजरे के पास बैठकर शेर से बातें करते रहते। शेर भी राजा की बातें ध्यान से सुनता और प्यार भरी नजरों से देखता रहता। कहते हैं कि-बालक हो या पशु, वह प्यार चाहता है। वह प्यार करने वालों का कुछ भी नहीं बिगाड़ता है। फिर ज़हरीले जानवर और खूँखार पशु भी वश में हो जाते हैं।

एक बार की घटना है- आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. महाराष्ट्र राज्य के सतारा नगर में स्थानक से जंगल से की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक नाग को चार-पाँच व्यक्ति मिलकर डंडे से मार रहे थे। यह दृश्य देखकर आचार्य भगवन्त का दिल दहल उठा, उन्होंने उस व्यक्ति के हाथ की लकड़ी पकड़ कर कहा तुम लोग इसे क्यों मार रहे हो? छोड़ दो इसे, इतना सुनते ही उन लोगों ने कहा- इतना प्यार आ रहा है तो ले जाओ अपने साथ। आचार्य श्री ने उन सबको वहाँ से हटाया और अपने रजोहरण की डंडी आगे की ओर कर कहा- "नागराज! आप इनसे बचना चाहते हो तो इस पर आ जाइए, आपको कोई खतरा नहीं होगा। इतना सुनते ही नागराज सीधे उस डंडी से लिपट गये।"

आचार्य भगवन्त उसे दूर लेकर चले। रास्तें में किसी ने कहा- "यह चोट खाया हुआ है, इसे छोड़ दीजिये नहीं, तो कुछ अहित हो जाएगा।" किन्तु आचार्य हस्ती में दृढ़ता की मस्ती थी, उन्होंने कहा- "यह कुछ नहीं करेगा।" प्रेम भरा शब्द सुनकर नागराज शान्त बने हुए थे, दूर एक नाले के आते ही आचार्य श्री ने कहा- आपका स्थान आ गया हो तो आप जा सकते हैं, अब कोई खतरा नहीं है।

इतना सुनते ही नागराज नीचे उतर गया, और बचाने वाले को एक टक देखने लगा, फिर से तीन बार फन से नमस्कार कर आगे चला गया। यह है प्यार की शक्ति और मित्रता का जादू।

राजा राज्य का कार्य सम्भालते हुए भी शेर का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। खाने के समय मांस आदि मंगाकर खिलाना, उसकी तन्दुरस्ती का खयाल रखना आदि। इस तरह समय की रफ्तार चलती रही और दिन निकलते रहे। राजा को सन्तुष्टि आ गई, मन चाहा काम जो हो गया था। एक दिन कहीं बाहर जाने का कार्य आ गया, मंत्री आदि से भी वह कार्य होने वाला नहीं था। स्वयं राजा को ही जाना था। उसमें 10-15 दिन भी लग सकते थे। राजा सोच में पड़ गया कि अब मैं क्या करूँ? शेर को छोड़ कर मैं कैसे जाऊँ? उसका कौन ध्यान रखेगा। और नहीं जाऊँ तो वहाँ का काम अटका हुआ है, वहाँ जाना भी जरूरी है। विचार करते-करते सहसा राजा को सेठजी की याद आ गयी और उनके मन में आशा की किरण चमक उठी। अब राजा ने अपने सेवक-सेवकों को बुलाकर कहा- "जाओ सुदत्त सेठ को बुलाकर लाओ।" सेवक सुदत्त के घर पहुँचे और राजा की आज्ञा सुनाई। सेठ सुदत्त ने सोचा, शायद कोई परामर्श करना होगा, इसलिए बुला रहे हैं। वह शीघ्र तैयार होकर उन आदमियों के साथ राज-दरबार में पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने राजा को अभिवादन किया, और शेर को वहाँ पिंजरे में देखकर आश्चर्य चकित हुआ। राजा से पूछा, यह क्या? शेर यहाँ राज दरबार में? हाँ मित्र, इसलिए तो मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है। क्या इस शेर के लिए? कौन लाया है इसे, उसे ही कहिए कि उसको लेकर जाए। अरे नहीं दोस्त! इसे कोई दूसरा नहीं लाया है, मैंने स्वयं इसे मंगवाया है और मैं इसे पालता हूँ। फिर आपने मुझे किसलिए याद किया? हाँ मित्र! एक ऐसा ही जरूरी काम आ गया, इसलिए तुमको तकलीफ दे रहा हूँ। फरमाइये क्या काम है? जो मेरे से होगा वह मैं अवश्य करूँगा। हाँ, यह मुझे अच्छी तरह ज्ञात है कि मैं जो भी कार्य तुमको सौपूंगा तुम मना नहीं करोगे, यह भरोसा है मुझे तुम पर।

बात यह है कि मुझे दस-पन्द्रह दिनों के लिए कहीं बाहर जाना है, पर शेर की चिंता खाये जा रही है, और जाना भी जरूरी है, इसलिए मेरी जगह तुम इस शेर की देखभाल करोगे, तो मैं निश्चिन्त होकर जा सकूँगा। इतना सुनना था कि सेठ के सिर पर मानो घड़ों पानी गिर गया। वह एकदम हक्का-बक्का हो गया। "अरे यह क्या? क्या मैं शेर को सम्हालूँ! नहीं राजा साहब, यह मेरे वश की बात नहीं है।

आप कहो तो मैं आपके बदले बाहर जाकर आपका काम कर आऊँगा। किन्तु शेर को मैं नहीं सम्हाल सकता।'''' बाहर का काम अगर कोई दूसरा कर सकता होता तो मैं मंत्री को ही भेज देता, किन्तु वह काम सिर्फ मैं ही कर सकता हूँ। इसलिए आपको यह कार्य सौंप रहा हूँ। अब मना मत करना, यह मेरा आदेश ही समझना।'' अब सेठजी क्या करें? न चाहते हुए भी राजा की बातों में फंस गये। अब ना करे तो मुश्किल और हाँ करे तो भी मुश्किल। न चाहते हुए भी सेठ को हुँकारा भरना पड़ा। कहावत है- मरता क्या नहीं करता। सेठ साहब राजा के सामने नत-मस्तक हो गये। ''ठीक है राजा साहब सम्हाल लूँगा मैं।'' अब राजा निश्चिन्त होकर अपने जाने की तैयारी में जुट गया।

निश्चित दिन राजा जितशत्रु आवश्यक कार्य हेतु प्रस्थान कर गए और इधर सेठ सुदत्त राज-दरबार में ड्यूटी पर पहुँच गये। सेठ साहब शेर के पिंजरे के समक्ष आए और एकटक शेर को देखने लगे। इतने में सेवक आकर सेठ साहब को कहने लगे - ''हुजूर! आपकी आज्ञा हो तो हम शेर के लिए कोई जानवर मारकर मांस ले आएं, इसके भोजन का समय हो गया है।'' सेठजी ने कहा- ''नहीं-नहीं, कोई जानवर नहीं मारा जाएगा। इसके खाने का बन्दोबस्त मैं स्वयं करूँगा।'' इतना कहकर सेठजी घर आ गये, और बादाम-पिस्ता, केसर, कस्तूरी एवं इलायची डालकर सुगन्धित खीर बनवाकर, कढ़ाई भरकर अपने सेवकों के साथ दरबार में पहुँचे।

खीर की सुगन्ध से राज-दरबार महक उठा। सब आश्चर्य चकित थे कि सेठ साहब यह क्यों लाए? इतने में सेठजी ने कहा- इसे पिंजरे में रख दो। तब वे आदमी बोले- ''क्या शेर यह खीर खायेगा? यह तो मांसाहारी है, इसे खीर का भोजन रास नहीं आयेगा।'' सेठ साहब ने कहा-''जैसा मैं कहूँ वैसा ही करो, इसको भोजन यही मिलेगा। इसके लिए कोई जानवर नहीं मारा जायेगा।'' बेचारे आदमी तो हुकुम पालन करने वाले थे, उन्होंने खीर की कढ़ाई अन्दर पिंजरे में सरका दी। शेर भी अपना भोजन आ गया, समझकर कढ़ाई के पास आया, खीर में से बढ़िया खुशबू निकल रही थी, उसके नथुने को यह सुगन्ध अच्छी नहीं लगी, मांस की जगह खीर देखकर उसने जोरदार दहाड़ लगाई, और लगा चहल-कदमी करने। पूंछ को फटकारता हुआ वापस कढ़ाई के पास आया और पूंछ से इतनी जोरदार फटकार लगाई कि कढ़ाई लुढ़क गई तथा सारी खीर जमीन पर गिर गई। सेवक लोग कहने लगे ''सेठ साहब हमने तो पहले ही कहा था कि शेर खीर खाने वाला

नहीं है, इसे तो मांस ही चाहिए।'' सेठजी बोले- ''नहीं खायेगा तो नहीं सही, पर इसके लिए मांस तो नहीं आयेगा। अगर मेरी आज्ञा के बगैर कोई इसको मांस लाकर खिलाया तो मेरे से बुरा कोई नहीं होगा।'' सब डरकर चुप हो गये। सेठ का दबदबा था कारण कि वह राजा के खास दोस्तों में से है। पर क्या, शेर भूखा रहेगा? यह सवाल सबके मन को झकझोर रहा था। शेर उस दिन भूखा रहा और सेठजी ने भी उस दिन उपवास कर लिया।

दूसरे दिन भी सेठजी कढ़ाई भर खीर लेकर दरबार में पहुँचे, और आदमियों से कहा- ''इसे पिंजरे में रख दो।'' वे आदमी हाथ जोड़कर सेठजी से विनति करने लगे- ''सेठ साहब! यह खीर खायेगा नहीं और कल के समान आज भी भूखा रह जायेगा। अगर राजा साहब को यह ज्ञात हुआ कि मेरे शेर को भूखा रखा गया है, तो हमें मौत की सजा सुना देंगे। आप हमारे ऊपर रहम करो और हमें आज्ञा दें कि हम इसके लिए मांस का इन्तजाम कर सकें।'' सेठ ने कहा- ''खबरदार! मेरे रहते यहाँ मांस हरगिज नहीं आयेगा। और रहा राजा साहब का डर, तो वह सजा मैं भुगत लूँगा। तुम लोगों को आंच भी नहीं आने दूँगा। लेकिन शेर को यह खीर ही खानी होगी।'' शेर सब को देख रहा था, दहाड़ पर दहाड़ लगा रहा था। भोजन की इन्तजार में चहल-कदमी कर रहा था। जैसे ही खीर की कढ़ाई अन्दर सरकाई, तो वह कढ़ाई के पास आया, उसने आज भी मांस की जगह खीर देखकर गुस्से में जोर से पूंछ फटकारी और सारी खीर जमीन पर गिर गई। यह देखकर सभी ने सेठ साहब को कहा- ''सेठ साहब! आप नाहक ज़िद कर रहे हैं, आज भी इसने खीर नहीं खाई। अगर इस तरह यह भूखा रहेगा तो मर जायेगा। इसके ऊपर दया कीजिये और इसका भोजन मंगा दीजिये।'' ''इसका भोजन ही तो मैं दे रहा हूँ, इस खीर में इतने बादाम-पिस्ते हैं कि इसको दुगनी ताकत प्राप्त हो, पर यह नहीं खा रहा तो मैं क्या करूँ? मैं इसके लिए मांस तो नहीं मंगा सकता।'' अब दो दिनों से शेर भूखा है तो सेठ जी के भी आज बेला है। ''तीसरे दिन भी सेठजी खीर की कढ़ाई लेकर दरबार में हाजिर हुए, सब लोग आपस में काना-फुसी करने लगे। यह सेठ शेर को भूखा रख मारकर ही दम लेगा। शेर तो जानवर है, इसका खाना तो मांस ही है, सेठ इसको खीर खिलाना चाहता है, क्या कभी मांसाहारी भी शाकाहारी हो सकता है? शेर पिंजरे में चहल-कदमी कर रहा है और दहाड़े मार रहा है, सबको जता रहा है कि मुझे भूख लगी है, मुझे मेरा खाना लाकर दो। इतने में कढ़ाई पिंजरे में रख दी गई, वापिस कढ़ाई में खीर देखकर गुस्से से पूंछ फटकारता हुआ कढ़ाई

को लुढ़का दिया। तीसरे दिन भी शेर भूखा रहा तो सेठ जी ने भी तेला कर लिया। अब सब लोग एक साथ सेठजी को उपालम्भ देते हुए कहने लगे, आप कितने दिन इसको भूखा रखेंगे? इसका खाना तो आपको देना ही पड़ेगा। नहीं तो राजा साहब का कोप आप पर और हम पर भारी पड़ेगा। सेठ साहब ने कहा- "राजा साहब के कोप का भाजन मैं बनने को तैयार हूँ। आप लोग निश्चित रहिये। आपको डरने की कोई जरूरत नहीं।" सेठ साहब पिंजरे के पास जाकर शेर से कहने लगे, खीर तो तुमको खानी ही पड़ेगी। तुम्हारे लिए में निरपराध जीवों की हिंसा नहीं कर सकता। मैंने अहिंसा व्रत ग्रहण किया है, उसको किसी भी कीमत पर भंग नहीं करूँगा। चाहे कुछ भी हो जाये, भले ही मेरे प्राण चले जायें पर व्रतों को भंग नहीं करूँगा। इतना कहकर सेठजी घर चले गए। **(क्रमशः)**

-128, मिण्ट स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई (तमि.)

संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की साधारण सभा एवं सम्मान समारोह 8,9 एवं 10 अक्टूबर, 2010 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा एवं सम्मान-समारोह के कार्यक्रम 8,9, एवं 10 अक्टूबर, 2010 को पाली-मारवाड़ में रखें गये हैं। आप अपने क्षेत्र में सभी सदस्यों को कार्यक्रम की जानकारी तो करायें ही, संघहित में जो भी सुझाव या प्रश्न हों लिखित में 31 अगस्त, 2010 तक संघ के प्रधान कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर के पते पर प्रेषित करें। त्रि-दिवसीय कार्यक्रम में पधारने वाले संघ सदस्य पाली संघाध्यक्ष या संघमंत्री के पते पर अपने कार्यक्रम की अग्रिम सूचना अवश्य करें।

संघ की साधारण सभा एवं अभिनन्दन-समारोह में पधारने वाले संघ सदस्यों को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. प्रभृति मुनिपुंगवों के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सेवा-भक्ति का लाभ प्राप्त होगा। *-पूरणराज अबाणी, महामन्त्री*

सम्पर्क-सूत्र

अध्यक्ष	मंत्री
श्री रूपकुमार जी चौपड़ा	श्री ताराचन्द जी सिंघवी
श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,	श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
बी-60, केशर कुंज, वीर दुर्गादास नगर,	सामायिक-स्वाध्याय भवन,
पाली-मारवाड़ (राज.)	सुराणा मार्केट, पाली-मारवाड़ (राज.)
02932-220603, 9414122304	02932-250021

उपन्यास (18)

सुबह की धूप

श्री गणेशमुनि जी शास्त्री

पूर्ववृत्तः- उदास किशनलाल भूतकाल की स्मृतियों में गोते लगा रहा था तभी शान्ति की आवाज सुनकर उसने डॉ. चटर्जी को दीपक के निरीक्षण के लिए बुलाया। डॉ. चटर्जी द्वारा मुम्बई में इलाज करवाने की सलाह को मानते हुए वह दीपक, आरती और शान्ति के साथ मुम्बई पहुँच गया। वहाँ अपने मित्र महादेव भाई के यहाँ ठहरा। अब आगे.....

दो दिनों की तमाम भाग दौड़ और जानकारी करने के बाद, यह तय किया गया कि दीपक को तो 'टाटा हास्पिटल' में दिखाकर उसका उपचार शुरू करा दिया जाये। ताकि, बाद में उसे वहाँ पर कृत्रिम हाथ लगवाने के लिए भर्ती कराया जा सके।

इसी निश्चय के अनुसार, तीसरे दिन सुबह-सुबह ही उसे टाटा हॉस्पिटल ले जाया गया। डॉक्टरों ने उसका विधिवत् निरीक्षण किया, और उसकी चिकित्सा प्रारम्भ कर दी।

दीपक के कटे हाथ का आपरेशन किये बिना ही उसका घाव सूख जायेगा, यह सुनकर, किशनलाल को बहुत तसल्ली हुई। अब उसे सिर्फ एक चिन्ता यही रह गयी थी, कि आरती की चिकित्सा के लिये, अभी तक कोई हल नहीं निकल पाया था।

शान्ति को भी, सिर्फ आरती की चिन्ता सताए हुए थी। वह, सुलोचना के साथ जब, जितनी देर बैठती, बस, एक ही चर्चा, चिन्ता प्रकट करती रहती। पर आज, बातों-बातों में, विश्वास और आलोक की चर्चा की गई, तो उन दोनों के बारे में शान्ति ने सुलोचना को बतलाया 'वे दोनों ही नाराज होकर चले गये हैं। विश्वास, हो सकता है बम्बई में ही हो। पर, अब तक, कुछ पता नहीं लग पाया है।'

'यहाँ है, तो पता चल जायेगा। तुम चिन्ता मत करो शान्ति! किन्तु, बच्चों के साथ अपना व्यवहार भी तो सही होना चाहिए। आजकल के लड़कों पर

दबाव डालकर, उन्हें अनुशासन में नहीं रखा जा सकता।' सुलोचना ने शान्ति को समझाया।

'विश्वास के पिता को समझाओ बहिन! मैं क्या करूँ?'-शान्ति ने अपनी विवशता प्रकट की।

'उन्हें मैं समझा लूँगी।'

'मेरे बेटे लौटकर आ जायें, इससे बढ़कर मेरे लिए और क्या खुशी हो सकती है?'

इसी समय महादेव भाई और किशनलाल भी आ गये।

'क्यों क्या हुआ?'-उत्सुकता से भरी शान्ति ने पूछा।

'अभी पता लगा रहे हैं। तमाम डॉक्टरों की अलग-अलग राय है। कुछ समझ में नहीं आ रहा कि क्या करूँ?'

'अरे लालाजी! आपका लड़का भी तो डॉक्टर है।' सुलोचना ने एकदम सहज रूप में कहा।

'हाँ है भाभी! मगर, पता नहीं, कहाँ है? मैं अपनी भूल पर आज बहुत शर्मिन्दा हूँ। सारी गलती मेरी थी। महादेव भाई को मैंने सब बता दिया है।''

'यहाँ के समाचर पत्रों में एक विज्ञापन दे दो। यदि बम्बई में होगा, तो अवश्य आ जायेगा'- सुलोचना ने अपना सुझाव दिया।

'कल, यह काम भी कर लूँगा। आज, आरती को एक डॉक्टर के पास दिखाने ले जाना है। उसने कहा है मरीज को देखकर ही राय दी जा सकती है।'

'तो फिर, आज यही काम कर लो।'

'क्यों महादेव भाई! आरती को आज ही दिखा लेना ठीक रहेगा?'

'अरे भाई! यह काम तो आज नहीं अभी करना है। आरती बेटी! उठो! चलो मेरे साथ!'-महादेव भाई ने अपनी तत्परता दिखलाते हुए कहा।

आरती, तुरन्त उठकर खड़ी हो गई।

तीनों नीचे उतरे, और कार में आकर बैठ गये। महादेव भाई स्वयं ही कार ड्राइव कर रहे हैं। किशनलाल उनके बगल में आगे बैठा। और आरती अकेली पीछे। कार, अपनी सहज गति से चली जा रही थी। पर आगे के चौराहे पर लाल बत्ती देखकर वे रुके।

दो मिनट बाद, हरी बत्ती जलते ही, कार पुनः मुम्बई की चिकनी सड़क पर

रेंगने लगी। लगभग एक किलोमीटर चलने पर, उन्हें दाहिनी तरफ मुड़ना था। महादेव भाई ने अपनी दायी-बायीं ओर देखा। फिर, जिस गति से चले आ रहे थे, उसी गति से दाहिनी ओर के रास्ते में मुड़ गये। पर, यह क्या?.....रास्ते में मुड़ते ही टक्कर हो गयी। सामने वाली कार का तो कुछ नहीं बिगड़ा, अलबत्ता, महादेव भाई की कार, तिरछी होकर, बाई ओर लुढ़क गई। क्षण भर में वहाँ भीड़ इकट्ठी हो गई। लोगों ने अपने हाथ लगाकर, कार को सीधा किया।

भगवान का शुक्र था कि किसी को भी कोई चोट नहीं आई। पर, आरती अवश्य, पीछे की सीट से उछलकर, आगे की सीट पर आ गिरी थी। वह, कार में से बाहर निकली, और अपना सिर थामकर, सड़क के एक किनारे जा बैठी। शायद, उसके सिर में भयानक चोट लग गई थी।

किशनलाल ने उसे इस तरह से बैठते देखा, तो वह उसके पास पहुँचकर अपने हाथ से उसका सिर मलने लगा। आरती चुपचाप, अपनी आँखें बन्द किये बैठी रही।

यह सारा दृश्य देखते ही, महादेव भाई के गुस्से का कोई पार नहीं रह गया।

इसी समय, भीड़ के कुछ लोग, सामने वाली कार के ड्राइवर को पकड़कर महादेव भाई के सामने ले आए। महादेव भाई उसे देखते ही उस पर बरस पड़ा- 'अन्धे होकर गाड़ी चलाते हो। शर्म नहीं आती तुम्हें।'

'जी क्षमा कीजिए'- अपने दोनों हाथ जोड़कर उसने कहा-'मेरी खुद समझ में नहीं आ रहा है कि आपकी गाड़ी से अचानक, यह टक्कर कैसे हो गई?'

इसी समय, आरती को कुछ राहत महसूस हुई तो उसने अपनी बन्द आँखें धीरे-धीरे खोलीं। फिर, अपने चारों ओर देखकर, वह सामने खड़े किशनलाल से बोली 'पापा! हम लोग कहाँ पर हैं?'

आरती को बोलते देखकर, किशनलाल, उछल पड़ा। इसी उमंग में भरकर वह चिल्लाया-'महादेव भाई!.....अरे महादेव भाई! देखो! हमारी आरती बोल रही है?'

किशनलाल की चिल्लाहट सुनकर, महादेव भाई भी चौंका। वह उसकी पूरी बात सुनकर, स्वयं आश्चर्य में पड़ गया। पर, प्रामाणिकता के लिये उसने पूछा-'क्या कह रहे हो किशनलाल?'

'सच कह रहा हूँ महादेव भाई! इसने मुझे देखते ही 'पापा' कहा है। और

पूछा है कि हम कहाँ है?'

अब तक सामने वाली कार का ड्राइवर-मालिक भी इनके निकट आ पहुँचा था।

आरती का ध्यान उसकी ओर गया, तो वह, एकदम खड़ी हो गई, और उसे सम्बोधित करके बोली-'अरे भैया! तुम इंग्लैण्ड से कब आये?'- फिर उसने पिता की ओर देखकर कहा-'पापा! आपने भी हमें नहीं बतलाया?'

आरती के द्वारा कहे गये शब्दों ने किशनलाल का ध्यान भी विश्वास की ओर आकृष्ट कर दिया। वह भी उसे वहाँ देखकर आश्चर्यचकित रह गया। और इसी स्वर मुद्रा में बोला- 'अरे बेटे! तुम यहाँ कैसे? कितना परेशान हो रहा हूँ मैं तुम्हारे लिये?'

इस सारी नाटकीय बातचीत को सुनकर वहाँ उपस्थित भारी भीड़ का गुस्सा ठंडा पड़ गया। महादेव भाई के भी आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। इसी मनःस्थिति को स्पष्ट करता हुआ वह बोला- ''अरे किशनलाल! तुम्हारा बेटा तो वास्तव में बहुत योग्य डॉक्टर है। हम कितने परेशान थे, आरती के इलाज के लिए। इसने तो एक ही टक्कर में, हमारी सारी परेशानियों का इलाज कर दिया।''

किशनलाल उसे कुछ उत्तर देता, इसके पूर्व ही, महादेव भाई फिर उससे बोला- 'ओ लाला किशनलाल! बिना विज्ञापन छपवाये ही तुम्हारा लड़का तुम्हें मिल गया। इस उपलक्ष्य में मिठाई तो खिलाओ भाई!'

'भगवान की कृपा है महादेव भाई! देखो, जब दुःख आये तो एक साथ। और अब सुख भी आया तो वह भी एक साथ। इधर आरती बिटिया भली चंगी हो गई, और उधर विश्वास भी अचानक आ मिला।' अब किशनलाल ने विश्वास की ओर मुँह किया, और पश्चात्ताप भरे स्वर में उससे कहा- 'बेटे! मुझे क्षमा कर दो। मैंने बहुत बड़ी भूल की थी जो तुम्हें घर से निकल जाने के लिये कह दिया था। .....अब, मैं तुम्हें अपने साथ ले जाने के लिए यहाँ आया हूँ।'

'पिताजी!' भावातिरेक में विश्वास इतना ही कह सका।

'बेटे! तुम्हारी माँ कितनी चिन्ता कर रही है। तुम्हारे चले आने के बाद से मेरे साथ क्या-क्या घटित नहीं हुआ। अभी मेरे साथ चलोगे, तब सब पता चल जायेगा।'

'कहाँ ठहरे हुए हैं आप?'

इन महादेव भाई के घर पर। दादर में, जैन मंदिर के पास।...अरे हाँ! बहू कैसी है?'

'ठीक है।

अब तक भीड़ छंट चुकी थी। पर, पुलिस के कुछ सिपाही अब भी वहाँ खड़े थे। महादेव भाई ने उन्हें कुछ संकेत किया, तो वे भी हट कर चले गये।

'तुम बहू को लेकर वहाँ आ जाओ। हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।'- किशनलाल ने विश्वास से कहा- 'बेटे जल्दी आना। मैं तुम्हारी माँ को भी यह सब बता दूँगा।'

'जी बस, गया और आया। आप वहाँ पहुँचिये।' विश्वास ने पिता को आश्वासन दिया। फिर आरती से झिझकते हुए पूछा-'आरती! तुम मेरे साथ नहीं चलोगी क्या?'

'क्यों नहीं भैया! ..... पापा! मैं भैया के साथ जाऊँ?'

'हम एक काम करते हैं किशनलाल।'- महादेव भाई ने बीच में बोलते हुए अपनी राय प्रकट की-' हम लोग, बहू को साथ लेकर ही चलते हैं।'

'यह तो और भी अच्छा रहेगा।'- किशनलाल ने अपनी सहमति प्रकट की।

'तब आप लोग आइये। शान्ताक्रुज ईस्ट में अस्पताल है। वहीं निवास भी है।'- विश्वास ने उन्हें बतलाया, फिर आरती से कहा- 'आरती! आओ! मेरी गाड़ी में बैठो।'

'भैया! फिर से तो कहीं टक्कर नहीं लगा दोगे?'

'यह टक्कर तो बड़ी शुभ रही है बेटी! वरना तुझे लिये हुए न जाने अभी तक कहाँ-कहाँ घूमते-फिरते होते हम लोग!'-महादेव भाई ने उसे उत्तर दिया।

'क्यों, क्या हो गया था इसे?'-विश्वास ने आश्चर्य से पूछा।

'लम्बा किस्सा है बेटे! फिर बतलाऊँगा। पहिले घर चलो।' किशनलाल ने उत्तर दिया।

महादेव भाई और किशनलाल, अपनी कार में बैठ गये। आरती और विश्वास, अपनी कार में बैठ गये। अब, विश्वास की कार के पीछे-पीछे अपनी कार लगाये महादेव भाई, घटनाचक्र की विलक्षणता पर चिन्तन-मनन करता

हुआ, मस्ती से गाड़ी चलाने लगा।

अस्पताल के सामने अपनी गाड़ी रोककर, उसमें से उतरते ही, विश्वास लगभग दौड़ता हुआ सा अपने फ्लैट में पहुँचा, और पत्नी से बोला- मीनाक्षी! ओ मीनाक्षी!'

'क्या बात है? बड़े खुश नज़र आ रहे हैं आज आप!'

'प्रसन्नता की बात ही है मीनाक्षी! पिताजी आये हैं, हमें लेने के लिये।'

'सच कह रहे हो?'- आश्चर्य से पूछा मीनाक्षी ने।

'अरे! अन्दर से ही क्यों बोल रही हो? बाहर आओ देखो मेरी बहिन आरती खड़ी है।'

मीनाक्षी, खुशी से पागल हिरणी जैसी बाहर आ गई।

'अरे भैया! इतनी सुन्दर भाभी लाये हो, और हमें सूचना तक नहीं दी? पापा ने भी कुछ नहीं बतलाया?'

'तुझे पसन्द तो आ गई?'

'एकदम सोलह आने'- आरती ने अपनी एक्टिंग के साथ, मीनाक्षी की ओर देखते हुए कहा।

'जल्दी करो मीनाक्षी! बाहर पिताजी खड़े हुए हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। माँ के पास चलना है। वह भी मुम्बई आई हुई है।'

'सचमुच?'

'नहीं तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ?'

'मैं पाँच मिनट में तैयार होकर आती हूँ बस।'-कहती हुई वह अन्दर चली गई।

'चलिए! मैं तैयार हूँ।'- पाँच मिनट बाद बाहर आकर मीनाक्षी ने कहा।

तीनों, क्वार्टर से नीचे उतरकर आ गये। मीनाक्षी ने किशनलाल और महादेव भाई को देखकर उनके चरण स्पर्श किया।

'सुखी रहो बेटी! मुझे क्षमा करना।...चलो बेटे! गाड़ी में बैठो। अब हम आगे रहेंगे। तुम पीछे-पीछे आना।'

किशनलाल और महादेव भाई की गाड़ी आगे-आगे, तथा विश्वास, मीनाक्षी व आरती की कार उनके पीछे-पीछे भागती हुई, दादर के रास्ते की ओर चलने लगी। (क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

भ्रूणहत्या : एक जघन्य अपराध

सुश्री मीनाक्षी जैन

आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत हैदराबाद समिति द्वारा आयोजित अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ चयनित निबन्ध को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है-**सम्पादक**

क्या है भ्रूण-हत्या- एक नन्हीं सी जान जो अभी दुनियाँ में आयी ही नहीं है, उसे चहकने से पूर्व ही समाप्त कर दिया जाता है। एक कली जो खिलना चाहती है, खिलकर फूल बनना चाहती है, लेकिन उसे फूल बनकर खिलने से पहले ही मसल दिया जाता है, यही है भ्रूण हत्या। किसी स्त्री को पता लगे कि वह गर्भवती है और इस गर्भ में पल रहे भ्रूण को वह मरवाकर अपने गर्भ से गिरा दे, यह भ्रूण हत्या है। यदि उसने भ्रूण कन्या होने की वजह से गर्भपात करवाया है तो यह कन्या भ्रूण हत्या है।

क्या भ्रूण में जीव होता है- यह सर्वविदित है कि गर्भस्थ शिशु का भ्रूण प्राणवान होता है अर्थात् गर्भ में पल रहे भ्रूण में जीवन होता है। उसे पंचेन्द्रिय जीव माना जाता है। जब जीव को मानव शरीर में जन्म लेना होता है तो वह अपने पूर्व कर्मानुसार मानव शरीर पाने के लिए स्त्री के गर्भ में प्रवेश करता है। श्रीमद् भागवत में तो यहाँ तक लिखा है कि मात्र एक माह में ही गर्भस्थ शिशु का सिर निकल आता है। फिर भी आज कुछ लोगों का मानना है कि भ्रूण में प्रारम्भिक तीन माह तक जीवन नहीं होता है। जबकि भ्रूण में जीवन होने के साक्ष्यों से जैन एवं वैदिक शास्त्र भरे पड़े हैं और सच्चाई तो यह है कि गर्भाधान के समय से ही भ्रूण में जीवन होता है। अगर ऐसा न होता तो क्या गर्भ के अन्दर अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदन की कला सीख पाते? प्रभु महावीर अपनी माता की मनोदशा कैसे जान पाते? माता मदालसा अपने पुत्रों को गर्भ में ही शिक्षा, संस्कारादि कैसे दे पाती?

गर्भस्थ शिशु को तीन माह तक मात्र मांस का टुकड़ा मानना, सिर्फ एक भ्रम से ज्यादा कुछ नहीं है। जबकि गर्भस्थ भ्रूण की धड़कन, रोना, हंसना, पलक झपकना आदि सब हरकतें 4डी स्केनर मशीन से देखी जा सकती हैं। जब

किसी माँ को ज्ञात होता है कि वह गर्भवती है तब तक तो उसकी कोख में पल रहे शिशु का दिल बनना शुरू हो जाता है। पहले दूसरे सप्ताह में तो माँ द्वारा किए गए भोजन से नया जीव पोषण पाने लगता है। इसी तरह 6-7 माह तक तो भ्रूण का पूरा शरीर विकसित हो जाता है। अतः भ्रूण में जीव के अस्तित्व को नकारना मात्र कल्पना से अधिक कुछ भी नहीं है।

भ्रूण हत्या: एक महापाप- अब जबकि यह पूरी तरह से साबित हो चुका है कि भ्रूण में जीव होता है, तो फिर उस जीव की हिंसा को किसी पाप से कम क्यों माना जाए? जन्म-मरण तो प्रकृति के हाथ में होते हैं, फिर हमें क्या अधिकार है किसी जीव की हिंसा करने का? किसी भी जीव की हिंसा पाप है तो उस जीव को जन्म से पहले ही मार गिराना महापाप से कम नहीं है।

अगर जन्म देने वाली माँ ही हत्यारिन बन जाए तो फिर मानवता और दानवता के बीच क्या अन्तर रह जाता है? जिस भारत भूमि पर माँ के चरणों को देवताओं द्वारा भी वंदनीय पूजनीय माना जाता है, माँ की गोद को स्वर्ग से बढ़कर माना जाता है, उसी पवित्र भू पर माँ के हाथ अपनी संतान के ही लहू से रंगे जा रहे हैं, माँ की कोख कत्लखाने में तब्दील हो रही है, कैसे विडम्बना है।

माँ की कोख में आना विधि का एक विधान है और इस विधान को चुनौती देकर इसके विरुद्ध कार्य करने का दुस्साहस भला कैसे किसी जघन्य अपराध से कम आंका जाए। माँ अनिच्छित संतान से छुटकारा पाने हेतु यम की दूत बन जाए तो उसका यह कृत्य मातृत्व के अपमान से कहीं कम नहीं है। संसार के हर धर्म ने इसे महापातक माना है, नरक का द्वार माना है।

यत्पापं ब्रह्महत्यायाः द्विगुणं गर्भपातने।
प्रायश्चित्तं न तस्यास्ति तस्यास्त्यागो विधीयते॥

-पाराशर स्मृति, 4.20

अर्थात् ब्रह्म हत्या से जो पाप लगता है उससे दुगुना पाप गर्भहत्या करने से लगता है, इस गर्भहत्यारूपी पाप का कोई प्रायश्चित्त भी नहीं है। इसलिए गर्भहत्या त्याज्य है।

शिशुहत्या महत्पापं भ्रूणहत्या च भारते।
नानाजन्मसु स वृषस्ततः कुष्ठी दरिद्रकः।

-देवी भागवत, 2.34

अर्थात् भिक्षु हत्या एवं भ्रूण हत्या दोनों महान् पाप हैं। भ्रूण हत्या करने वाला व्यक्ति गिद्ध, सुअर, कौआ, सर्प, विष्ठा का कीड़ा बनकर बैल बनने के बाद दरिद्र कोढ़ी मनुष्य होता है।

न सिर्फ जैन बल्कि दुनियाँ का कोई भी धर्म इस पाप का समर्थन नहीं करता, फिर धर्मभूमि भारत के निवासियों द्वारा यह जघन्य अपराध किया जाना क्या किसी आश्चर्य से कम है? क्या खूब धर्म निभाया भारतवासियों ने। एक ओर तो मानव सेवा को अपना परम धर्म मानते हैं और दूसरी ओर कोख में पल रहे मानव भ्रूण को ही मौत के घाट उतारते हैं।

पेट के बाहर मारो तो हत्या, अन्दर मारो तो सफाई।
माँ-बाप की देखो चतुराई, करे हत्या और कहे सफाई॥

गर्भवती स्त्री को तो विषधारी सर्प भी नहीं डसता तो क्या आज मानव उस सर्प से अधिक ज़हरीला है?

एक मासूम कली एवं एक कच्चा फल तोड़ने में भी जहाँ पाप लगता है, वहाँ एक नन्हीं सी जान की जान ले लेना, क्या किसी महापाप से कम होगा? नहीं किंचित् मात्र भी एवं कदापि कम नहीं।

भ्रूणहत्या आखिर क्यों– हमारे देश में जिस गति से ये भ्रूण हत्याएँ हो रही हैं, इनका कारण जानना आवश्यक हो गया है, क्योंकि किसी भी समस्या का समाधान उसका कारण जानने के बाद ही संभव है। हमारी संस्कृति, हमारी शिक्षा के साथ होने वाला यह कैसा मजाक है कि भ्रूणहत्या विषय पर तो सब हो हल्ला मचा रहे हैं, परन्तु उसके आधारभूत कारणों की चर्चा नहीं की जा रही है। संयमित जीवन एवं ब्रह्मचर्य का इतना अनादर आज से पहले कभी न हुआ होगा जितना वर्तमान माहौल में किया जा रहा है। करुणामयी माँ अपने ही करों से अपनी कोख को कत्लखाने में बदल रही हो, ऐसा युग पूर्व में शायद ही आया हो।

आज की घड़ी में न केवल कन्या भ्रूणहत्या हो रही है, बल्कि नर भ्रूण हत्या भी बड़ी संख्या में हो रही है। कौन उत्तरदायी है इस नृशंस कृत्य का? क्यों हो रही है ये भ्रूण हत्याएँ? ये प्रश्न अतिविचारणीय है। वैसे तो इसके कई कारण हो सकते हैं, परन्तु कुछ मूल कारणों का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है:-

(1) पश्चिम का अनुकरण– आज हमारे देश में पश्चिम का बोलबाला है।

पश्चिमी संस्कृति ने हमारे संस्कारों को हरा दिया है। विश्वगुरु भारत का नागरिक आज योगी कम, भोगी अधिक हो रहा है। आधुनिकता की उपज यह भोगवादी जीवन शैली ही इस भ्रूण हत्या की मुख्य जिम्मेदार है। पाश्चात्त्य सभ्यता का अनुकरण करने के कारण यह जघन्य पाप हमारे समाज में हो रहा है।

आज पश्चिमी संस्कृति की तर्ज पर जीवनयापन करते-करते अधिकांश महानगरीय युवतियाँ छोटे-छोटे अभद्र कपड़ों में ही रहती हैं, विवाह पूर्व ही गर्भवती हो जाती हैं, और पता लगने पर गर्भपात कराने से बिल्कुल भी नहीं हिचकती हैं। आखिर उनके मन में कहीं न कहीं भारतीय समाज द्वारा किए जाने वाले विरोध का भय जो रहता है और इसी भय के चलते सफाई करवाने के गंदे काम को अंजाम देकर मानवता से दानवता की ओर अपने कदमों को अग्रसर कर रही हैं।

(2) लड़के की चाह- बात जहाँ कन्या भ्रूण हत्या की हो, वहाँ लड़के की चाह से बड़ा कारण ढूँढ पाना नामुमकिन है। आज का मनुष्य भले ही चाँद पर पहुँच गया हो, मंगल पर झण्डे गाड़ दिए हों, परन्तु रूढ़िवादी विचारधारा से मुक्त अभी तक नहीं हो पाया है। पुत्र न हो तो वंश कैसे आगे बढ़ेगा, पुत्र न हो तो कुल का नाम कौन रोशन करेगा, पुत्र के बिना बुढ़ापे की लाठी कौन बनेगा आदि मान्यताएँ लेकर पुत्र एवं पौत्र की चाह में न जाने कितनी मासूम कन्याएँ जन्म से पूर्व ही गर्भ में मार दी जाती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रतिवर्ष एक करोड़ कन्याओं का कत्ल कोख में ही कर दिया जाता है, सिर्फ इसलिए कि वह कन्या है। कन्या को देवी मानकर पूजने वाले, मुँह में जय माता दी, राधे-राधे रटने वाले हिन्दू परिवार ही सर्वाधिक कन्या भ्रूण हत्या करवाते हैं। पता नहीं इन्हें कब समझ आएगी कि लड़का-लड़की बराबर होते हैं। बुढ़ापे में लड़कियों से ज्यादा सहारा शायद ही किसी पुत्र ने दिया है। पुत्र तो केवल एक कुल का नाम रोशन करेगा, जबकि पुत्रियाँ दोनों कुलों का नाम रोशन करती हैं। किसी ने यूं ही नहीं कहा है कि पुत्र विवाह से पहले तक पुत्र रहता है, जबकि पुत्री तो विवाह के पश्चात् भी जीवन भर पुत्री ही रहती है। कल्पना चांवला, सुनीता विलियम्स, लता मंगेशकर, मदर टेरेसा, सोनिया गांधी, प्रतिभा पाटिल आदि ऐसी कई स्त्रियाँ हैं जो कुल का क्या पूरे देश का नाम रोशन कर रही हैं। अगर इनको इनके माँ-बाप ने जन्मपूर्व ही मार दिया होता तो कहाँ से मिलती हमें यह शख्सियतें।

लेकिन इतना सब कुछ जानते हुए भी आज कन्याओं के भ्रूण कभी किसी गंदे नाले में मिलते हैं तो कभी सड़क के किनारे। इस लड़के की चाह ने न जाने कितने मासूम कन्या भ्रूणों को गर्भ में ही मार दिया होगा। क्योंकि आज भी हमारे देश में कन्या को बोझ ही माना जाता है।

असंयम तथा अविवेक– आज इंसान इतना लाचार हो गया है कि वह अपनी इन्द्रियों को अपना गुलाम बनाने के बजाय स्वयं ही उनका गुलाम बनता जा रहा है। विवेकपूर्ण एवं संयमित जीवन जीना तो जैसे वह भूल ही गया है। वह सोचता है कि उसके पास जब तक भ्रूण हत्या का विकल्प है उसे विवेक रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। वह शायद यह भूल जाता है कि उसकी इस जरासी असावधानी से किसी मासूम को मौत के घाट उतारा जा सकता है, वह भी बिना किसी कसूर के। कसूर स्वयं का, हत्या बेकसूर की, क्या अन्याय है?

कत्ल हो गया कोख में, बेचारा मजबूर था।
गला घोंट दिया गर्भ में, उसका क्या कसूर था?

3. व्यभिचार– यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि समय के साथ-साथ इस शब्द के भी मायने बदल गए हैं। कुछ समय पहले जो व्यभिचार था, आज वह आदमी का मज़ा बनता जा रहा है। आमोद-प्रमोद का ऐसा स्वांग आज व्यभिचार की श्रेणी में नहीं माना जाता है। यह सब अपनी ही पवित्र संस्कृति की अनदेखी एवं पश्चिमी सभ्यता से प्यार का नतीजा है। इस आमोद-प्रमोद रूपी व्यभिचार के कारण ही कई युवतियाँ असमय गर्भवती हो जाती हैं, और इसी से निजात पाने के लिए वह भ्रूण हत्या करवाने में बिल्कुल नहीं हिचकती हैं।

'आपका मजा, बेचारे को सज़ा।।'

स्पष्ट है कि रूढ़िवादी विचार, वंश-परम्परा हेतु लड़के की चाह, सामाजिक परिस्थिति, मति भ्रष्टता, पाश्चात्त्य संस्कृति का अनुकरण, काम-सुख और अपनी संस्कृति की अवहेलना करने के कारण ही यह जघन्यतम पाप हमारे समाज में घर कर गया है।

भ्रूण हत्या का प्रभाव– जितनी भयंकर यह करणी है, उससे कहीं ज्यादा इसकी भरणी है। यह महापाप अपना क्या-क्या प्रभाव छोड़ता है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह कृत्य व्यभिचार को अपने चरम पर

पहुँचाने का कार्य कर रहा है। इसी से समाज में संस्कारों की होली जल रही है। सदाचारी जीवन की जड़ों को हिलाकर हमारी संस्कृति का मखौल उड़ाया जा रहा है। भ्रूण हत्या के प्रभाव से ही भारत भूमि की बरकत जाती रही। क्योंकि उस भ्रूण ने मरते वक्त जो वेदना सही है, स्वाभाविक है कि वह हर पल बद्दुआ ही दे रहा होगा। अबोध एवं निर्दोष प्राणी की पुकार पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता।

दुनिया से भले ही छिपकर यह पाप कर लो, परन्तु परमात्मा की नजरों से नहीं बच पाओगे। इसी पाप के कारण कंस का विनाश हुआ। रावण के अट्टहास से गर्भ गिर जाया करते थे। रावण का सर्वनाश हुआ। प्रकृति के नियम में बाधा डाली तो पृथ्वी थर-थर कांप उठी।

''जननी ना होगी, तो धरती भी ना होगी।''

कन्या भ्रूण हत्या से लिंगों में जो आनुपातिक अन्तर आया, वह स्वाभाविक है। वर्ष 2001 की जनगणनानुसार प्रति 1000 पुरुषों पर 927 स्त्रियाँ ही हैं। यह चिन्ता का विषय है। प्राकृतिक आपदाएँ चीन, भारत, जापान, अमेरिका, इंग्लैण्ड में ही क्यों? क्योंकि सर्वाधिक गर्भपात इन्हीं देशों में होते हैं। मासूम निरीह शिशुओं को काल कवलित करने जैसे प्रयोग इंसानों ने किए, ठीक वही तरीका प्रकृति ने अपनाया। आवाज भी न दे पाए, भाग भी न पाए, सिसकते हुए, तड़पते हुए सहायता के लिए पुकारते रहे। आवाज मलबे के नीचे दबकर रह गयी। ठीक वैसे ही जैसे गर्भस्थ शिशु की मूक चीख अपनी माता के पेट में दब जाती है।

गर्भपात करवाने में जरा भी शर्म नहीं आती है।

जो माँ बच्चे को गर्भ में मारे वो डायन कहलाती है।

गर्भपात से होने वाले रोग- अत्यधिक रक्तस्राव से माँ की मृत्यु, रोग-संक्रमण, बच्चेदानी में छेद, आंतों में सुराख, मृत या अपंग बच्चे पैदा होना, कैंसर, कमरदर्द, श्वेतप्रदर आदि असाध्य बीमारियों से कभी संतान पैदा न कर पाना आदि रोग इसी भ्रूण हत्या की देन हैं। कहा गया है-

अपने ही जीवित अंग के टुकड़ों को कचरे में फिंकवाओगे,

तो सुख से कभी ना रह पाओगे।

कन्याएँ कुचल-कुचल फिंकवाओगे,
तो सुख से कभी न रह पाओगे।

मदर टेरेसा ने भी कहा है कि गर्भपात आज विश्व की शांति नष्ट करने का सबसे बड़ा कारण है। इस महापाप के प्रभावों को देखकर कोई आश्चर्य नहीं होता है, क्योंकि जैसा आप बोओगे, वैसी ही फसल कटेगी। कहा भी गया है-

बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय।।

समस्या का निदान, कानूनी प्रावधान- भ्रूण हत्या जहाँ आध्यात्मिक दृष्टि से घोरतम पाप है वहीं कानूनी दृष्टि में जघन्यतम अपराध है। इस समस्या से तभी निजात मिल सकती है जब हर माँ अपनी सृजनशक्ति का दुरुपयोग न करते हुए, न तो अपने भ्रूण का परीक्षण कराए, न लड़की होने पर उसे गर्भ में गिराकर महापाप एवं घृणित कार्य करे। वह कानून को तोड़ने का दुःस्साहस न करे, क्योंकि यही प्रकृति का भी कानून है। नारी को नारी का दुश्मन बनते हुए गर्भ में ही मारने की बजाय करुणाशील माँ बनकर उसे जन्म देना चाहिए। क्योंकि किसी भी माँ की रजामंदी के बगैर गर्भपात का फैसला नामुमकिन है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ अनपढ़, नासमझ महिलाएँ गर्भपात करवाती हैं, बल्कि शायद इनसे ज्यादा गर्भपात तो पढ़ी-लिखी महिलाओं द्वारा करवाया जाता है। अतः शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ-साथ जनमानस में जागृति उत्पन्न की जानी चाहिए।

हमारे देश के कानून ने भी इसको एक अमानवीय अपराध मानकर इसके लिए दण्ड निर्धारित किया है। भारतीय दण्ड संहिता की धारा 312 से 315 में इसके लिए प्रावधान किए हुए हैं। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि सोनोग्राफी मशीनों का उपयोग केवल गर्भस्थ शिशु की विकृतियों को समय पर जानकर दूर किए जाने के लिए ही किया जाना चाहिए, न कि लिंग-परीक्षण करके कन्याओं को मौत के घाट उतारने के लिए।

अगर देश की स्त्रियाँ भ्रूण हत्या न करवाने की कसम लें लें तो इसके दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है तथा लैंगिक अनुपात पुनः सामान्य स्तर पर आ सकता है। अन्यथा भ्रूण हत्या के इस महापाप को एक मासक्षमण से भी नहीं भरा जा सकता है।

''कर्म फल आज नहीं तो कल भोगना ही पड़ेगा।''

7. उपसंहार– भ्रूण हत्या का महापाप मानवता के माथे पर लगा हुआ एक कलंक है, जिसे मिटाना हमारा परम कर्त्तव्य है। अगर किसी को जन्म देने की शक्ति हममें नहीं है तो क्या हक है किसी को मौत के हवाले करने का?

उपर्युक्त लेख का सार यही है कि ममतामयी माँ को शिशु के गर्भकाल में सादा संयमित जीवन जीते हुए अपनी कोख में सांस ले रहे शिशु को चाहे पुत्र हो या पुत्री, अच्छे संस्कार देकर सृष्टि में जन्म देना चाहिए, ताकि जीवन में सुख-शान्ति एवं समृद्धि बनी रहे, बजाय उसे मारकर विश्व अशांति का कारण बनने के। अन्यथा न उसकी आत्मा चैन से सो पाएगी न विश्व में शान्ति हो पाएगी।

-सुराना की बड़ी पोल, नागौर-341001(राज.)

अंतर अभिलाषा

श्री हरकचन्द ओस्तवाल 'हर्ष'

(तर्ज :- पदम प्रभो पावन नाम तिहारो)

मिथ्या ज्ञान निवारो, जिनेश्वर भवजल पार उतारो।।टेर।।
देव गुरु धर्म तत्त्व न जान्यो, नव तत्त्व नाही पिछाण्यो,
यथार्थ श्रद्धा मन नाही आणी, किणविध हो निस्तारो।।1।।
जिनेश्वर भवजल पार उतारो.....।
बारह व्रत भगवन् फरमाया, श्रावक कुल आचारो,
दृढ़तायुत व्रत एक न धार्यो, कैसे होय उद्धारो।।2।।
जिनेश्वर भवजल पार उतारो.....।
सामायिक अरू स्वाध्याय बल, आज पुनः अपनार्ये,
ज्ञान क्रिया की निर्मलता बिन, छायो घोर अंधारो।।3।।
जिनेश्वर भवजल पार उतारो.....।
गृह त्यागी बन संयम धार्यो, आतम भान भुलायो,
त्यागवृत्ति वैराग्य भाव बिन कैसे होय सुधारो।।4।।
जिनेश्वर भवजल पार उतारो.....।
करबद्ध आत्मनिवेदन मेरा, तब चरणों में भगवन्,
'हर्ष' बनूं जिनमार्गानुगामी काटूँ कर्म जंजीरो।।5।।

-चैन्नई (तमिलनाडु)

युवा-स्तम्भ

मद्यपान के नुकसान

डॉ. दिलीप धींग

भारत जैसे उष्णकटिबन्धीय तथा आध्यात्मिक देश में युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति किसी महामारी से कम नहीं है। यौवन का जो स्वर्णिम समय व्यक्ति-निर्माण से विश्व-निर्माण की अद्भुत क्षमता रखता है, वह मद्यपान और नशे से शीघ्र नष्ट हो जाता है। मदिरापान से तन, मन और मस्तिष्क पर अत्यन्त विपरीत असर होता है और मानव की अन्तर्शक्ति क्षीण हो जाती है। युवावस्था ही क्या, नशा जीवन की हर अवस्था को अव्यवस्थित कर देता है। संसार के सभी धर्मशास्त्रों, महापुरुषों और विचारकों ने मद्यपान को हानिकारक बताया है।

जैन धर्म के अनुसार

जैनाचार्यों ने जिन सात व्यसनों को छोड़ने की सलाह दी है, उनमें एक मदिरापान भी है। मूल आगम दशवैकालिक सूत्र में मदिरापान का निषेध करते हुए कहा गया है कि वह लोलुपता, छल, कपट, झूठ, अपयश, अतृप्ति आदि दुर्गुणों को पैदा करने वाला और दोषों को बढ़ाने वाला है। आठवें अंग-आगम अन्तकृद्दशा के अनुसार शराब उच्छृंखलता पैदा करती है। शराब की वज़ह से वासुदेव श्रीकृष्ण की स्वर्णपुरी द्वारिका नगरी का भी विनाश हो गया था। मूलाचार में मद्य-मांस को महाविकृति कहा है तथा उन्हें काम, मद, हिंसा आदि का जनक बताया है। हेमचन्द्राचार्य के अनुसार शराब से विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य, शौच, दया आदि गुण नष्ट हो जाते हैं। आचार्य हरिभ्रद ने मद्यपान के निम्नांकित दुष्परिणाम बताये हैं-

1. शरीर का विद्रूप होना एवं विविध रोगों का आश्रय स्थल बनना।
2. परिवार व समाज से तिरस्कार होना।
3. समय पर कार्य करने की क्षमता का नहीं रहना।
4. अन्तर्मन में द्वेष पैदा होना।
5. ज्ञानतन्तुओं का धुन्धला होना व स्मृति क्षीण होना।
6. बुद्धि का भ्रष्ट होना।

7. शक्ति का न्यून होना।
8. सज्जनों से सम्पर्क नहीं होना और दुर्जनों से सम्पर्क बढ़ना।
9. वाणी में कठोरता।
10. कुलहीनता व उत्तम संस्कारों का क्षरण।
11. धर्म, अर्थ और काम का नाश होना।

व्यक्ति के पतन के लिए इतने सारे दुर्गुणों में से कुछ ही पर्याप्त हैं। ये ही दुर्गुण समाज और देश को भी शक्तिहीन और विपन्न बनाते हैं। जैन दिवाकर मुनि चौथमल जी ने कहा था "जिन भले आदमियों को इहलोक और परलोक न बिगाड़ना हो, उन्हें मदिरापान से सदैव बहुत दूर ही रहना चाहिये। शराब सौभाग्य रूपी चन्द्रमा के लिए राहू के समान है। वह लक्ष्मी और सरस्वती नष्ट करने वाली है।"

अन्य धर्मों के अनुसार

मांसाहार और मद्यपान सहवर्ती बुराइयाँ हैं। अथर्ववेद में मांसभक्षण के साथ मद्यपान को भी बुरा बताया गया है। गीता में कहा गया है कि जितने मादक पदार्थ हैं वे तमाम तमोगुणी हैं, अतः विवेक को नष्ट करने वाले हैं। ऐसे पदार्थों में शराब सिरमौर है। दयानन्द सरस्वती के अनुसार मदिरा मनुष्य को राक्षस बना देती है। सन्त तिरुवल्लुवर ने कहा था, "जिन लोगों में शराब की लत पड़ जाती है, उनसे सुन्दरी लज्जा अपना मुँह फेर लेती है अर्थात् वे निपट निर्लज्ज/ बेहया हो जाते हैं।" बाइबिल में लिखा है- 'शराबी का प्रभु के राज्य में प्रवेश निषिद्ध है।' कुरान के अनुसार "ईमान वाले और ईमान को जानने वाले शराब को नापाक मानकर उसका त्याग करते हैं।" चीनी सन्त लाओत्से के अनुसार "पहले आदमी शराब को पीता है और फिर बाद में शराब उसका खून पीती है।" जापानी संत कागावा ने कहा कि "कटी हुई पतंग, झूमता हुआ शराबी, गिरता हुआ तारा और मझधार में फँसा जहाज कहाँ जाकर टकराएगा। कोई नहीं बता सकता?" आध्यात्मिक उन्नति में मद्य बाधक तत्त्व है, इसलिए सभी धर्मों में मद्यपान का निषेध किया गया है।

विचारकों द्वारा निन्दनीय

दुनियाभर के महापुरुषों और विचारकों ने शराब को निन्दनीय बताया है।

जिन लोगों को मद्यपान का व्यसन लगा हुआ है, उनके शत्रु उनसे कभी नहीं डरते हैं। सुकरात ने कहा "प्रचुर रेशमी वस्त्र, शराब और व्यभिचार की सुविधाएँ उपलब्ध करवा देने से शीघ्र ही किसी भी कौम या मुल्क को हथियार उठाए बगैर खत्म किया जा सकता है।" वाल्तेयर ने मांसाहार और मद्यपान को संयुक्त बुराई बताते हुए लिखा-"जो मनुष्य पशुओं के मृत शरीर का भक्षण करता है और खूब मद्यपान करता है, उसका रक्त दूषित हो जाता है और वह उसे पागल कर देता है।" विश्व इतिहासकार टॉयन्बी का निष्कर्ष बहुत भयावह है- "अति प्राचीनकाल से अस्तित्व में आई कुल इक्कीस संस्कृतियों में से उन्नीस संस्कृतियों के पतन का कारण शराब है।" कश्मीरी कवयित्री लल्लादेवी के अनुसार "घर को पत्थरों से भले ही भर दो; लेकिन शराबी को घर में किसी भी स्थिति में मत रखो।" शेक्सपिअर के अनुसार "शराब का जाम चेतना, बुद्धि, प्राण और सम्पदा को हरण करने वाले ज़हर की अपेक्षा कहीं अधिक भयंकर है।" डॉ. विलियम के अनुसार- "उबलते शीशे के घोल और शराब में कोई अन्तर नहीं है, दोनों बराबर हैं।" अमरीकी न्यायाधीश एडमंड डिलैंटी के अनुसार "नशाखोरी ने मुर्दों का शहर बसाने में; आग, अकाल, महामारी और तलवार से भी अधिक बड़ी भूमिका निभायी है।"

बीमारियों का द्वार

शराब से हृदय रोग, कैंसर, अनिद्रा, अल्सर, मधुमेह, नपुंसकता, जोड़ों में दर्द, लकवा, हेपेटाइटिस, उन्माद, मिरगी, यकृत-विकृति, गुर्दों की कार्य-शीलता में कमी आदि कई भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं। शराब स्वास्थ्य और सुख की भयंकर शत्रु है। पागलखानों के एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रति दस पागलों में से छह व्यक्ति बेहद शराब पीने के कारण पागल हुए थे। चरक संहिता के अनुसार "शराब सभी कुकर्म कराने वाली है। वह देह का सर्वनाश करती है। शराबी पर कोई औषधि असर नहीं करती। जो बुद्धिमान व्यक्ति मद्यपान नहीं करते हैं, वे इससे होने वाली शारीरिक और मानसिक व्याधियों से मुक्त रहते हैं।" गांधीवादी चिकित्सक डॉ. सुशीला नैयर के अनुसार "औषधिशास्त्र में अल्कोहल (शुद्ध मद्य) का कोई स्थान नहीं है। अमेरिका की मेडिकल ऐसोशिएसन के अनुसार भी अल्कोहल में चिकित्सा का कोई गुण नहीं है। शराब से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी बीमार होता है।

गरीबी का कारण

शराब से सरकारी खजाना भले ही भर जाए, किन्तु जनता निर्धनता और बेरोजगारी के गर्त में चली जाती है। शराब की आय से एक ओर राजस्ववृद्धि होती है, दूसरी ओर शराबजनित सामाजिक, शारीरिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकृतियों को दूर करने या उनसे जूझने पर सरकार को जो खर्च करना पड़ता है, वह आय की तुलना में कई गुना अधिक होता है। पुलिस और चिकित्सा पर भी अनाप-शनाप खर्च होता है। डॉ.नेमीचन्द जैन के अनुसार "शराब एक ऐसा अभिशाप है; जो व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, संस्कृति, नैतिकता, अर्थ तंत्र और राष्ट्रीय अनुशासन को नष्ट और क्षतिग्रस्त करता है।" काका कालेलकर ने कहा था-"शराब की प्याली में एक सम्पूर्ण परिवार की खाना खराबी समायी होती है।" आचार्य हीराचन्द्र जी महाराज के शब्दों में "जिनके द्वारों पर हाथी-घोड़े बंधे रहते थे, ऐसे सैकड़ों लक्षाधिपतियों, अमीर-उमरावों, ठाकुर-सरदारों, राजा-महाराजाओं, दुर्गाधिपतियों को शराब जैसे व्यसन ने बर्बाद कर दिया।" शराब सिद्धि और समृद्धि की राह में भयंकर अवरोध पैदा करती है।

तनावों की माँ

कई लोग तनाव से मुक्ति पाने के लिए शराब का सेवन करने लगते हैं। लेकिन मद्य से तनाव कम होने की बजाय स्थायी रूप से बढ़ जाते हैं। मद्यपान से स्नायु तंत्र, बौद्धिक क्षमता और विचार-शक्ति क्षीण हो जाती है। फलस्वरूप मनुष्य शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक रूप से कमजोर पड़ने लगता है। हम एक उदाहरण लें- दूध से पात्र आधा भरा है। पात्र को अग्नि पर रखने से दूध उफनता है। लगता है पूरा भर गया। जब अग्नि पर से उतारा जाता है तो दूध पहले से कम हो जाता है। यही होता है नशे में। लगता है कि शक्ति आ गई, किन्तु नशा उतरने के बाद पता चलता है कि अपार शक्ति का व्यर्थ ही क्षय हो चुका है। इस प्रकार धीरे-धीरे व्यक्ति अवसाद, कुण्ठा, थकान, चिन्ता और तनाव से घिरता चला जाता है।

अपराधों की जननी

शराब मर्यादा, संयम, विवेक, शिष्टाचार, अनुशासन जैसे मानवोचित गुणों को नष्ट करके अराजकता को जन्म देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने

कहा था, "मैं मद्यपान को चोरी, यहाँ तक कि वेश्यावृत्ति से भी अधिक निन्दनीय मानता हूँ, क्योंकि यह उक्त दोनों बुराइयों की जननी है। यदि मुझे एक घण्टे के लिए समूचे भारत का डिक्टेटर (अधिनायक) बना दिया जाए तो मैं पहला काम यह करूँगा कि शराब की तमाम दुकानों को बिना मुआवजा दिये बन्द करा दूँ।" व्यभिचार, महिलाओं पर अत्याचार, सड़क दुर्घटनाएँ, पारिवारिक कलह आदि अनेक समस्याओं का कारण मद्यपान और नशा है। न्यायाधीश टेकचन्द के अनुसार "शराब नैतिक, आत्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सामरिक एवं सुरक्षा द्वारों को खुला छोड़ देती है।" कई सड़क-दुर्घटनाओं में शराब भी निमित्त बनती है। एक अनुमान के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष 80000 से अधिक व्यक्ति सड़क-दुर्घटनाओं में काल के ग्रास बन जाते हैं तथा 12 लाख से अधिक घायल हो जाते हैं। इन सड़क-दुर्घटनाओं की वजह से देश को 55000 करोड़ रुपयों की आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। अखबारों में आये दिन जहरीली शराब से मौतों की खबरें आती रहती हैं। मार्क ट्वैन ने लिखा- 'दुनिया की तमाम सेनाओं ने मिलकर जितने आदमी और जितनी सम्पत्ति नष्ट नहीं की है। उससे कई गुना शराब की लत ने की है।"

नशाखोरी के कारण

स्पष्ट है कि नशा विष से अधिक अनिष्टकारी है। नशा हर देश और समाज के लिए हानिकारक है। इस कुटेव के लिए निम्न व्यक्ति और घटक दोषी हैं-

1. वे माता-पिता जो अपनी सन्तान को जीवन-निर्माणकारी सुसंस्कार नहीं देते।
2. वे गुरु/ अध्यापक जो अपने शिष्यों/विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमेतर सद्शिक्षाएँ नहीं देते।
3. स्कूल-कॉलेजों की बिगड़ैल मित्र-मण्डली तथा अन्य कुमित्र।
4. सिनेमा, मीडिया और विज्ञापनों के नशे को प्रोत्साहित करने वाले दृश्य।
5. वे समाज जिनमें मदिरा को किसी न किसी रूप में सामाजिक मान्यता प्राप्त है।
6. वे ख्यातिप्राप्त और धनाढ्य लोग जो नशे से परहेज नहीं करते और युवा मन को दुष्प्रेरित करते हैं।
7. नशे को अंजाम देकर किये जाने वाले व्यावसायिक सौदे।

8. पारिवारिक कलह, बेरोजगारी या किसी असफलता से उपजी हताशा।

शराब की भाँति भांग, गांजा, अफीम, चरस, ताड़ी, हैरोइन, ब्राउन सुगर, कोकीन आदि अन्य नशीले पदार्थ भी मानव के सुख-सौभाग्य को घटाते हैं। नशे को लेकर समाज और युवाओं में फैली भ्रान्तियों का निराकरण अत्यावश्यक है। युवाओं को किसी भी प्रकार का कोई भी कारण या निमित्त उपस्थित होने पर भी नशे की ओर कभी भी प्रवृत्त नहीं होना चाहिए। यदि व्यक्ति सुसंस्कारित, उच्च आचरण और दृढ़ मनोबल वाला हो तो किसी भी परिस्थिति में वह नहीं भटकेगा। किसी भी समाज या राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए उसके यौवन को बचाना अत्यावश्यक है। यह जानकर कि 'शराब खराब है' और 'नशा नाश का द्वार है', मद्यपान का परित्याग कर देना चाहिये। जिन समाजों में मद्य का निषेध है, वे समाज उन्नत, सुखी और संतुष्ट हैं।

-इण्टरनेशनल लॉ सेण्टर,

61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

आवश्यक सूचना

1. जिनवाणी पत्रिका प्रत्येक माह की 10 तारीख को प्रकाशित होती है। डाक में स्तम्भ, आजीवन आदि सभी सदस्यों को जिनवाणी पत्रिका उक्त तारीख को प्रेषित कर दी जाती है। कभी-कभी पता लिखा लिफाफा फटने आदि कारणों से अथवा अन्य कारणों से जिनवाणी समय पर नहीं मिल पाती है तो आप जिनवाणी कार्यालय, जयपुर से सम्पर्क कर सकते हैं। **-कार्यालय प्रभारी,** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन : 0141-2575997
2. जिनवाणी पत्रिका में प्रकाशनार्थ रचनाएँ हमें प्रत्येक माह की 15 तारीख तक मिल जानी चाहिए। अन्य समाचार आदि माह की 24 तारीख तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय, जयपुर को तथा 25 तारीख तक सम्पादक, जोधपुर को प्राप्त हो जाने चाहिए। इसके पश्चात् प्राप्त समाचारों को 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका में स्थान नहीं दिया जा सकेगा।

डॉ. धर्मचन्द जैन
सम्पादक, जिनवाणी

विरदराज सुराणा
मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

श्रद्धापुंज-संस्मरण

ज्ञाता गुरुवर उपकारी

श्री नेमीचन्द नाहर

मेरे पिताजी श्री कुन्दनमल जी नाहर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज के परमभक्त थे। वे वर्षों तक प्रतिवर्ष चातुर्मास के चार माह आचार्य श्री की सेवा में रहे एवं वहाँ लेखनादि का साहित्यिक कार्य करते रहे। बात उस समय की है, जब आचार्य श्री का सन् 1986 का चातुर्मास पीपाड़ में था। पिताजी का मन जयपुर आने का हो रहा था। उनके दो-तीन पत्र भी आए। हम लोग जयपुर में रहते थे। माताजी के कहने से मैं पिताजी को लेने पीपाड़ चला गया। पिताजी बड़े खुश हुए तथा कहा कि पहले आचार्य श्री से अनुमति ले लूँ। पिताजी मुझे साथ लेकर आचार्य श्री के पास पहुँचे। आचार्यश्री ने फरमाया- "तेरा बेटा आया है, जयपुर जाना चाहता है?" आचार्य श्री के शब्द इस प्रकार के थे जैसे मानो उनको सब ज्ञात था कि पिताजी जयपुर जाना चाहते हैं। अभी आचार्य श्री का संकेत नहीं था, अतः मैं पिताजी को साथ लिये बिना जयपुर लौट गया। किन्तु दूसरे दिन ही पिताश्री सम्पूर्ण सामान सहित जयपुर आ गए तो हमें आश्चर्य हुआ। पिताजी से पूछने पर ज्ञात हुआ कि उन्हें आचार्य श्री ने मांगलिक दिया था। पता नहीं गुरुदेव ने क्या देखा कि दूसरे दिन पिताजी को अनुभूति प्रदान कर दी। मुझे उसी दिन शाम को कार्यवश एक दिन के लिए दिल्ली जाना था। पिताश्री जिनवाणी कार्यालय, जयपुर में गए तथा सबसे संवत्सरी सम्बन्धी क्षमायाचना की।

घटनाएँ कैसे घटित होती हैं, हमें ज्ञात नहीं होता। मैं दिल्ली से रात्रि में चलकर प्रातःकाल जयपुर आ सकता था, किन्तु एक नई गाड़ी पिंकसिटी एक्सप्रेस में बैठने के चाव के कारण रात्रि में होटल में रुका रहा। रात्रि में 12 बजे एक सफेद कपड़े धारण कर लाल साफा पहने लम्बा से व्यक्ति आया। उसने मुझे जगाया कि तुझे तो जयपुर जाना था और तू यहां सो रहा है। उस सज्जन ने

दो-तीन बार कहा कि जितना जल्दी हो सके, जयपुर जा। मैंने उसकी नहीं सुनी तथा पिंकसिटी की रट लगाता रहा कि यह ट्रेन नई चली है एवं सवेरे पाँच बजे चलकर जयपुर 11 बजे पहुँचा देगी, उससे जाऊँगा। उन सज्जन ने कहा कि जाना है तो अभी जा, बाकी तेरी मरजी। उन सज्जन के चले जाने पर मुझे ठीक से नींद नहीं आयी। उल्लेखनीय है कि अर्धरात्रि में उसी समय मेरे पिताश्री का जयपुर में हृदयाघात होने से देहावसान हो गया था। वह सज्जन कौन था, मुझे यह ज्ञात नहीं। किन्तु उस संकेत को मैं नहीं समझ सका। रात मैं 2.30 बजे मेरे छोटे भाई केवलचन्द नाहर के ससुर श्री इन्दरचन्द जी संखवाल मेरे होटल आए और मैनेजर से पूछताछ करने लगे। मैंने रात को ही होटल का पैसा जमा करा दिया था, अतः मैनेजर ने उन्हें कहा कि नेमीचन्द नाहर तो कमरा खाली कर गए। मैं सवेरे जब पिंकसिटी से जयपुर पहुँचा तभी मुझे ज्ञात हुआ कि पिताश्री नहीं रहे।

आचार्य श्री दिव्यद्रष्टा महापुरुष थे। पिताजी का दूसरे दिन आना इसका संकेत है। मुझे दिल्ली में उनके मरण के संकेत भी मिले, किन्तु मैं नहीं समझ पाया। पिताश्री हमेशा कहा करते थे कि जब भी परेशानी हो, तुरन्त आचार्य श्री की सेवा में चले जाना, संकट मुक्त हो जाओगे। और हम इसका पालन करते रहे। हमारा परिवार (नाहर परिवार) जो किशनगढ जिला अजमेर में निवास करता था, उन्हीं आचार्यश्री की देन है जिनके कारण हम 1965 से जयपुर में रह रहे हैं एवं सभी वैल सेटल्ड हैं। पिताश्री किशनगढ़ में नगरपालिका में लेखाकार के पद पर कार्यरत थे। आचार्यश्री की प्रेरणा से उन्होंने नौकरी छोड़कर जयपुर बसने का मानस बनाया और1965 से श्रीमान् पूनमचंद जी हरीशचन्द्र जी बडेर के यहां कार्यरत रहे एवं जीवन के आखिरी वर्षों में सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर में लेखाकार रहे। आज भी हम आचार्यश्री हस्तीमल जी महाराज साहब को हृदय से भगवान् की तरह स्मरण करते हैं। आचार्य श्री ने ही हमें ज्ञान की राह दिखाई तथा इस मुकाम तक पहुँचाया। अतः शत-शत वंदन व नमन।

-1803, फतेहपुरियों का दरवाजा, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)

श्रद्धा-संस्मरण

श्री बलभद्र मुनि जी मन भाए

श्री संदीप ओस्तवाल एवं श्री वीरेन्द्र कांकरिया

वैसे तो महापुरुषों की कृपा सभी जीवों पर समान बरसती है, फिर भी हमें यह महसूस होता है कि हमारी कुछ विशेष पुण्यवानी रही होगी कि पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने सन् 2005 के चेन्नई चातुर्मास में हमें पूज्य श्री बलभद्रमुनि जी का विशेष लाभ मिला। कुछ अविस्मरणीय स्मृतियाँ हमारे जीवन में यादगार रूप में हैं।

चातुर्मास से करीब दो महीने पूर्व से हमें उनके सान्निध्य में ज्ञानार्जन करने का सौभाग्य मिला। पढ़ाते-पढ़ाते लगभग 20 दिनों के बाद उन्होंने किसी कारणवश हमारा नाम पूछा, तब पता चला कि आत्मार्थी साधक कभी गृहस्थ से विशेष परिचय नहीं रखते। जब गुरुदेव साहुकारपेट स्थानक विराज रहे थे, तब एक दिन श्री बलभद्रमुनि जी बाहरी भूमिका के लिये पधारने लगे, तो हम दोनों भी उनके पीछे चलने लगे तब म.सा. ने रुककर हमसे पूछा कि कहाँ जा रहे हो? हमने कहा- "आपके साथ चलने की भावना है"। तब उन्होंने फरमाया- "मुझे रास्ता मालूम है और मैं पूर्ण सजगता से जा सकता हूँ, पर आप साथ चलोगे तो हो सकता है कि सजगता की कमी के कारण आपसे जीवों की विराधना हो जाए, इसलिये आप दया पाल लें।" हर क्षण अप्रमत्तता एवं जागरूकता।

चातुर्मास काल में प्रार्थना, व्याख्यान और दोपहर को आगम वाचना के बाद आप हमेशा ज्ञानार्जन कराते थे। आपकी कृपा से हमने प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल एवं कई थोकड़े सीखे। चातुर्मास बाद एक बार संतों का अयनावरम, चेन्नई विराजना था, तब एक रात को हम दर्शनार्थ गये। वहाँ पता लगा कि आपको टायफाइड है और अगले दिन विहार की संभावना कम है। अगले दिन सुबह जब हम दर्शन करने गये तो पता लगा कि कुछ देर पूर्व ही संतों का विहार हो गया है। लगभग 10 किमी का विहार करके संत अंबतूर पधारे। हमने वहाँ उनकी सुखसाता पूछी तो उन्होंने फरमाया- "कभी शरीर की चिंता नहीं करना। बुखार तो पावणे की तरह है, आता है, जाता है।"

चातुर्मास बाद हम जब भी गुरुदेव की सेवा में जाते तो वे हमेशा एक बात कहते- "आगे बढ़ते रहो, पुराना सीखा हुआ फेरते रहो, कमाई हुई पूँजी को

सुरक्षित रखो।'' सुखसाता पूछने पर कहते थे-''साता कर्माधीन है, आनंद आत्माधीन है, संयम में खूब आनंद है।'' बंगारपेट चातुर्मास में एक बार हम दर्शन कर वापस चेन्नई लौट रहे थे तो हमने उनसे कहा कि दीपावली पर दर्शनार्थ आने के भाव हैं। तब महाराज सा ने फरमाया-''हम तो आने का भी नहीं कहते जाने का भी नहीं कहते।'' शरीर से ऊपर उठकर आत्मा की साधना करने वाले आत्मार्थी संत थे वे। उनकी आत्मा अति शीघ्र ही अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करेगी, ऐसी आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है।

-407-मिण्ट स्ट्रीट, चेन्नई-600079

भेद-विज्ञान

श्रीमती माया कुम्भट

भेद विज्ञान में घट जाता है अन्तर
तत्त्व बात पहचान जाता है नर
फिर मोह का परदा पड़ता नहीं
ममता विचलित करती नहीं
मद में आदमी झूलता नहीं
पाप में नर पड़ता नहीं
कथनी और करनी एक हो जाती है
घर बाहर का सत्य एक हो जाता है
पर्दा कोई पड़ता नहीं
तब इन्सान सही माइने में इन्सान हो जाता है
निर्णय देने में गलती होती नहीं
निर्णय लेने में गफलत होती नहीं
आँख पारदर्शी हो जाती है
हाथ में सम्यक्त्व की बड़ी पड़ जाती है
पाँव गलत दिशा में उठता ही नहीं
इन्सान, इन्सान से उठ महान बन जाता है
नीतिमान बन जाता है।

-'राजमाया', 6 ए/1, अम्बामाता, उदयपुर-313001 (राज.)

विशिष्ट व्यक्तित्व

राज्यसभा सदस्य

श्री ईश्वरलाल जी जैन : जैन समाज के गौरव

श्री पी. शिखरमल सुराणा

यह समस्त जैन समाज के लिए बड़े ही गौरव की बात है कि अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व कार्याध्यक्ष श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी (जैन) राज्यसभा सांसद के रूप में महाराष्ट्र से निर्विरोध चुने गये हैं। 'बाबूजी' तथा 'ईश्वरबाबू' के नाम से विख्यात उद्योगपति श्री ललवाणी का राज्यसभा सदस्य बनना समाज और देश के लिए कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यह सिर्फ रत्नसंघ और जैन समाज के लिए ही गौरव की बात हो, ऐसा नहीं है। यह देश के लिए भी गौरव की बात है कि पीढ़ियों से देश और समाज को समर्पित एक निष्ठावान कुटुम्ब के अनुभवी व्यक्ति को राज्यसभा में प्रतिनिधित्व मिला है।

देशभक्त कुटुम्ब

श्री ईश्वरबाबू के दादा स्वतंत्रता सेनानी श्री राजमल लखीचन्द जी ललवाणी 1936 में तत्कालीन संसद में संसद-सदस्य रह चुके थे। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे बॉम्बे प्रोविंस में कई वर्षों तक विधायक भी रहे। जब सारी गतिविधियाँ अंग्रेजी में सम्पन्न की जाती थीं, तब वे निर्भीकता से हिन्दी में भाषण देने वाले संसद और विधानसभा के प्रथम सदस्य थे। हिन्दी के माध्यम से जन साधारण तक उन्होंने देशभक्ति और आजादी का सन्देश पहुँचाया था।

उज्ज्वल विरासत के धनी

पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के जलगाँव में दो वर्षावास हुए। प्रथम सन् 1979 में तथा द्वितीय 1982 में। दोनों ही वर्षावासों तथा वर्षावास से पूर्व और बाद की विहार-यात्राओं में श्री ईश्वरबाबू, उनके पिता श्री शंकरलाल जी ललवाणी तथा परिवारजनों का भी सहयोग/सहकार बना रहा। जलगाँव में दूसरे वर्षावास से पहले स्वयं आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. अपने शिष्य परिकर सहित जामनेर से विहार करके ललवाणी जी के बंगले पर ठहरे थे। 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' के अनुसार सन् 1982 के वर्षावास में श्री ईश्वरबाबू के पिता

सुश्रावक श्री शंकरलाल जी ने 103 दिवसीय अखण्ड मौनपूर्वक जप-तप-संवर-साधना करके तपाराधना के क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया था। यही वजह है कि 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' में श्री ईश्वरबाबू को 'उज्ज्वल विरासत के धनी' के रूप में उपमित किया गया है। रत्नसंघ के वर्तमान आचार्यश्री, उपाध्यायश्री तथा सभी चारित्रात्माओं के प्रति श्री ईश्वरबाबू तथा उनके परिवार की पूरी आस्था है।

धर्मनिष्ठ परिवार

आपकी जीवनसंगिनी सरलमना श्रीमती पुष्पादेवी आपकी सच्ची धर्मसहायिका और संघ समर्पित सुश्राविका हैं। उन्होंने धर्मानुराग, प्रेम, सद्भाव और समरसता जैसे सद्गुणों से अपने परिवार को एक आदर्श परिवार के रूप में स्थापित किया है। धर्म व धर्मसंघ के प्रति आपके समर्पण का एक ही उदाहरण पर्याप्त है कि श्री ईश्वरबाबू, उनकी धर्मपत्नी, दोनों पुत्र (मनीष एवं अमरीष) तथा दोनों बहुरानियाँ (नैतिका एवं रुचि); ये छहों सदस्य श्री गजेन्द्र निधि ट्रस्ट के न्यासी हैं। आपके तीन सुपौत्र व एक सुपौत्री भी सुसंस्कारित हैं। यह कितना अनूठा संयोग है कि आपकी इकलौती सुपुत्री मनाली का विवाह वर्तमान में रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा के इकलौते सुपुत्र उपेन्द्र जी के साथ हुआ है।

बहुआयामी व्यक्तित्व

प्रगतिशील सोच तथा सदाबहार व्यक्तित्व के धनी श्री ईश्वरबाबू बिल्कुल ही रूढ़िवादी नहीं है। लेकिन वे श्रेष्ठ परम्पराओं और कौटुम्बिक मर्यादाओं का पूरा आदर करते हैं। उनकी सफलताओं के पीछे उनके व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ रही हुई हैं। वे एक स्पष्टवादी, तुरन्त निर्णय लेने वाले तथा ऊर्जावान व्यक्ति हैं। चौंसठ वर्ष की उम्र में भी उनमें युवा जैसी सक्रियता और कर्मठता है। यह उनके सात्त्विक आहार, धर्ममय जीवन शैली तथा तनावमुक्त जीवनचर्या का सुफल है। यही वजह है कि वे धर्म, राजनीति, व्यवसाय और समाज की बहुविध जिम्मेदारियों को कुशलता से निभा लेते हैं।

लोकप्रिय जनप्रतिनिधि

श्री ईश्वरबाबू का राजनीतिक सफर भी बहुत सफलताओं तथा उपलब्धियों से भरा रहा है। वर्ष 1978 में जब सर्वत्र कांग्रेस-प्रत्याशी हार रहे थे, उस समय वे जलगाँव जिले की 12 विधानसभा सीटों में से जलगाँव से विजयी होने वाले एकमात्र कांग्रेस प्रत्याशी थे। दलीय राजनीति से ऊपर यह उनके व्यक्तिगत

गुणों और जनता में उनके प्रति अपार विश्वास की जीत थी। दो वर्ष बाद ही 1980 में पुनः हुए चुनाव में भी वे जामनेर से विधायक चुने गये। 1978 में महाराष्ट्र की एस्टीमेट समिति के अध्यक्ष रहे श्री ईश्वरबाबू 1992 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यकारिणी सदस्य चुने गये। इससे पहले और बाद में भी उन्होंने महाराष्ट्र तथा देश की राजनीति तथा कांग्रेस पार्टी में कई पदों पर रहकर यादगार सेवाएँ दी हैं। वर्तमान में वे नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (NCP) के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष हैं।

समर्पित समाजसेवी

श्री ईश्वरबाबू ने शिक्षा, चिकित्सा, सेवा, जीवदया, व्यवसाय आदि क्षेत्रों की दर्जनों संस्थाओं और संगठनों में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर रहते हुए अनेक उल्लेखनीय कार्य किये हैं तथा वर्तमान में भी कर रहे हैं। आपके दादा की स्मृति में स्थापित राजमल लखीचन्द चेरिटेबल ट्रस्ट निर्धन मेधावी विद्यार्थियों के उत्थान के लिए समर्पित है। सम्प्रति आप महाराष्ट्र स्टेट कॉ-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के निदेशक, 1981 से जामनेर कॉ-ऑपरेटिव इण्डस्ट्रियल एस्टेट के अध्यक्ष, इन्दिरा ललवाणी हाई स्कूल, जामनेर के संस्थापक सदस्य और मुख्य स्तम्भ, जामनेर तालुका शक्कर कारखाना के मुख्य प्रवर्तक तथा अध्यक्ष जैसे अनेक पदों पर सेवाएँ दे रहे हैं।

यादगार क्षण

वर्ष 2005 में पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म. सा. का जब चेन्नई में चातुर्मास था, तब चातुर्मास स्थल के समीप ही मैंने चार माह के लिए चौका कर रखा था। एक दिन अचानक राजा श्रेणिक एवं रानी चेलना जैसे सुन्दर व हँसमुख दम्पती का मेरे घर पदार्पण हुआ। मुस्कराते हुए वे बोले - "मैं ईश्वरलाल ललवाणी तथा यह मेरी धर्मपत्नी। हम जलगाँव से आए हैं। सुमेरसिंह जी बोथरा मेरे संबंधी हैं।" उनसे मिलकर असीम प्रसन्नता हुई। उनकी सरलता, सादगी व आत्मीयता प्रभावित कर गई। वर्ष 2006 में महाबलेश्वरम् में रत्नसंघ के प्रबुद्ध श्रावकों का त्रिदिवसीय चिन्तन-शिविर था। जिनशासन और संघहित में उन्होंने जो खरे सुझाव रखे, वैसे सुझाव एक सुलझा हुआ, निडर और संघ हितैषी व्यक्ति ही रख सकता था। उनके विचारों से मैं प्रभावित हुआ। मुम्बई में आयोजित संघ-सम्मेलन में पदाधिकारियों के साथ मैं मंच पर था। ईश्वरबाबू सामने पहली पंक्ति में बैठे हुए थे।

अचानक उन्होंने मेरे पास बैठे-बैठे झपकी ले रहे एक पदाधिकारी को जगाते हुए कहा - "सोना नहीं चाहिये।" वास्तव में वे स्वयं भी जागरूक हैं तथा अपने साथियों को भी जागरूक रखते हैं। संघ की जागरूकता और सक्रियता के लिए यह आवश्यक है।

ऐसे यशस्वी व्यक्तित्व के धनी श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी का राज्यसभा सदस्य बनना सबके लिए अत्यन्त हर्ष और गौरव का विषय है। समाज व संघ की किसी भी प्रकार की सेवा के लिए आप सदैव समर्पित हैं। राज्यसभा में उनका छः वर्षीय कार्यकाल समाज, देश और अहिंसा-धर्म की दृष्टि से विशिष्ट उपलब्धियों से भरा रहे तथा उनका प्रेरक व्यक्तित्व व कृतित्व दूसरों के लिए अनुकरणीय व चिरस्मरणीय बने, यह मंगलकामना है।

अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

उभयकाल प्रतिक्रमण कीजिए और घर में स्वर्गानुभव लीजिए

श्री लक्ष्मीचंद जैन

1. आचार्यप्रवर पूज्यपाद श्री हस्तीमल जी म.सा. ने अपने जीवन में स्वाध्याय और सामायिक-साधना को सदैव विशेष महत्त्व दिया।
2. उनकी इस पवित्र सद्भावना को वर्तमान में उनके पट्टधर हीराचार्य जी आगे बढ़ा रहे हैं। स्वाध्याय और सामायिक के इस अभियान में साधक का आत्मकल्याण सन्निहित है।
3. वर्तमान की व्यस्तता में सामायिक स्वाध्याय के लिए समय निकालने का सर्वोत्तम तरीका है- उभयकाल (संधिकाल) प्रतिक्रमण की भावना से सामायिक कीजिए।
4. सुबह 5 से 7 और सायंकाल 6 से 8 बजे के मध्य आप दो-दो मुहूर्त्त की साधना के लक्ष्य से निश्चित रूप से निश्चिन्त होकर आसन बिछाकर मुँहपत्ती बांधकर पूर्वाभिमुखी बनकर सामायिक ग्रहण कर प्रतिक्रमण कीजिए।
5. याद नहीं है तो कंठस्थ करने का प्रयास करते रहिए। आपके पूरे परिवार को अद्भुत-चामत्कारिक ढंग से स्वर्गानुभव के आनन्द का सहज ही अनुभव होने लगेगा। *-छोटी कसरावद, जिला-खरगोन-451228 (म.प्र.)*

बाल-स्तम्भ

समझदार बहू

श्री चन्दन मुनि

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 सितम्बर 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

सूरत शहर निवासी एक सेठ पर लक्ष्मीदेवी की पूर्ण कृपा थी। उसका व्यापार बहुत अच्छा चलता था। सेठजी बहुत उदार तथा दानी थे। दूसरों के सुख-दुःख में सहभागी बनने वाले थे। पूरे शहर में सेठजी की अच्छी इज्जत थी। वैसे देखा जाय तो सूरत शहर बहुत पुराना है। बम्बई तो उसके बाद आबाद हुआ है। सूरत की बहुत-सी चीजें आज भी वैभवशीलता की द्योतक हैं। सेठ की जाहो-जलाली देखकर सूरत के तत्कालीन राजा के मन में ईर्ष्या की आग उठी। कुछ दुर्जन भी ऐसे होते हैं, जो दूसरों की उन्नति सहन नहीं कर सकते। उन्होंने भी राजा के कान भरे- "राजन्! आप तो नाम के राजा हैं। यहाँ का असली राजा तो अमुक सेठ है। अमीरी रहन-सहन, शानदार हवेली, अनेक नौकर-चाकर, उसका तो निराला ही ठाट है।" राजा के मन में कुबुद्धि पैदा हुई कि किसी तरह इस सेठ की सम्पत्ति हथियानी चाहिये। उसने कुछ दुर्बुद्धि जनों की सलाह से एक युक्ति खोज निकाली। राजसभा में सेठजी का भी आसन था तथा समय-समय पर सेठजी राजसभा में आया करते थे।

एक दिन अवसर देखकर सूरत-नरेश ने कहा- "सेठ साहब! आप बहुत बुद्धिमान हैं। आपकी सूझ-बूझ निराली है और इसी से आप करोड़ों का व्यापार करते हैं। हम आपसे चार सवाल पूछना चाहते हैं, जिनका

आपको सही-सही जवाब देना होगा। यदि सही जवाब नहीं दे पाये तो फिर कुशल क्षेम नहीं है। आपकी सारी सम्पत्ति, जमीन-जायदाद आदि जब्त कर ली जाएगी। हाँ, यदि प्रश्नों के सही उत्तर मिले तो आपका सम्मान और बढ़ा दिया जायेगा।

सेठ राजा की कुटिल नीति को भांप गया, पर अन्य कोई मार्ग न देखकर बोला- "महाराज! बतलाइये वे चार सवाल कौन से हैं?" राजा ने अपने चार प्रश्न सुना दिये-

1. वह कौनसी वस्तु है, जो घटती ही घटती है?
2. वह कौनसी वस्तु है, जो बढ़ती ही बढ़ती है?
3. वह कौनसी वस्तु है, जो घटती भी है और बढ़ती भी है?
4. वह कौनसी वस्तु है, जो न घटती है और न बढ़ती है?

सेठ इन जटिल प्रश्नों को सुनकर स्तब्ध सा रह गया। सेठ ने राजा से सात दिन का समय मांगा और कहा- "नरेश्वर! मैं सोचकर आपके प्रश्नों का उत्तर सात दिन बाद दूँगा।" ऐसा कहकर सेठ अपने घर आ गया। इस व्यर्थ की आफत से वह परेशान था। क्या किया जाय, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। प्रश्नों के उत्तर तो क्या उनका हार्द ही वह समझ नहीं पा रहा था। एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत गये। न भोजन का मन होता, न नींद ही आती।

सेठ की पुत्रवधू बड़ी विदुषी, प्रवीण और कुशाग्रबुद्धि थी। यद्यपि सेठ ने उसको कोई भेद नहीं बताया, पर सेठ के इंगित-आकार से वह ताड़ गई कि श्वसुर साहब किसी भारी चिंता से व्यग्र हैं। इन तीन चार दिनों में ही उनके चेहरे का रंग ही बदल गया है। यद्यपि लल्जाशील बहू ससुर के सम्मुख स्थिति का खुलासा करने में संकोच महसूस करती थी, पर आखिर उसे संकोच तोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। उसने विनयपूर्वक कहा- "आप मेरे पिता तुल्य हैं, मैं आपकी पुत्री हूँ। आपको किस बात का गम है? अगर कोई आपत्ति न हो तो कृपया अवगत कराने का कष्ट करें।"

सेठ ने निःश्वास छोड़ते हुए कहा- "बहू! तुम ठीक कह रही हो, मैं अत्यन्त चिन्ताग्रस्त हूँ। मुझे ऐसा दिखाई देता है कि सब कुछ नष्ट होने

वाला है।'' ऐसा कहकर सेठ ने राजा की कुटिल नीति का जिक्र करते हुए राजा द्वारा दिये गये प्रश्न सुनाये। प्रत्युत्पन्नमति बहू ने साहस के साथ कहा- ''पिताजी! आप इन प्रश्नों को लेकर इतने व्यथित, गमगीन क्यों हैं? इनका उत्तर तो मैं आसानी से दे सकूँगी। आप तो राजा से यही कह दें कि इन नगण्य प्रश्नों का उत्तर मैं क्या दूँ, इनका उत्तर तो मेरी पुत्रवधू ही दे देगी।''

सेठ ने कुछ शंका व्यक्त करते हुए कहा- ''बहू! मैं कह तो दूँगा, पर क्या तुम हमारी शान रख सकोगी?''

बहू बोली-''निःसन्देह हमारी सवायी इज्जत बढ़ेगी।''

सेठ कुछ आश्वस्त हुआ। सात दिन जाते क्या देर लगती है। आठवाँ दिन आया। सेठ समय पर राजसभा में पहुँचा। राजा ने याद दिलाते हुए कहा- ''सेठ! आज आठवां दिन है।'' सेठ ने अनभिज्ञ की तरह होकर कहा- ''फिर? आप क्या पाना चाहते हैं?'' राजा ने कहा- ''उन चार प्रश्नों के उत्तर।'' सेठ ने कहा- ''उन मामूली प्रश्नों के उत्तर मैं क्या दूँ? उनके उत्तर तो मेरी पुत्रवधू भी दे सकती है।'' आश्चर्य चकित राजा ने कहा- क्या तुम्हारी पुत्रवधू इतनी बुद्धिमती है?'' स्वाभिमान के साथ सेठ बोला- ''यह तो आप उसके उत्तर सुनकर ही जान पायेंगे।''

राजा ने सेठ की पुत्रवधू को राजसभा में बुलाने की व्यवस्था का आदेश दे दिया। पालकी भेजकर ससम्मान सेठ की बहू को सभा में आमन्त्रित किया गया। बीच में कनात लगाकर सभा-मण्डप में ही उसके बैठने की व्यवस्था की गई। बहू अपने स्थान पर बैठी। सेठ ने कहा- ''राजन्! अब आप अपने प्रश्न उपस्थित कीजिये।'' राजा ने पहला प्रश्न पूछा- ''वह क्या वस्तु है, जो घटती ही घटती है?''

तुरन्त कनात के भीतर से आवाज आई-''राजन्! व्यक्ति की उम्र प्रतिपल घटती ही घटती है। जब से बच्चा जन्म लेता है, हर श्वासोच्छ्वास के साथ उसकी उम्र घटती जाती है। वह एक क्षण के लिये भी विश्राम नहीं लेती।''

बहू का उत्तर सुनकर सारी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठी। सभी ने एक स्वर से बहू के उत्तर का स्वागत किया कि बिलकुल सही उत्तर है, जो प्रतिक्षण घटने वाली चीज है, वह आदमी की उम्र ही है।

सेठजी के चेहरे पर भी कुछ रौनक आ गई।

राजा ने दूसरा सवाल किया- "वह क्या वस्तु है, जो बढ़ती ही बढ़ती जाती है?"

तुरन्त प्रत्युत्तर मिला- "वह तृष्णा है, जो प्रतिपल बढ़ती ही जाती है। मांग पूरी होते ही दूसरी मांग खड़ी हो जाती है।" इस दूसरे उत्तर को सुनकर तो सारी विज्ञ-मण्डली चमत्कृत रह गई। सारी सभा ने सेठ की बहू की बुद्धिमत्ता पर उल्लास व्यक्त किया। राजा ने भी कहा-"सेठ! तुम्हारी बहू तो बड़ी प्रतिभाशील, अध्ययनशील लगती है, पर अभी दो प्रश्न और शेष हैं।" अब तक तो सेठ का धैर्य भी सुदृढ़ हो चुका था।

राजा ने तीसरा सवाल पूछा- "वह क्या चीज है, जो घटती भी है और बढ़ती भी है?"

वास्तव में बड़ा टेढ़ा सवाल था। बड़े-बड़े विज्ञ धुरन्धर अपने दिमाग दौड़ाने लगे कि इसका उत्तर क्या हो सकता है? तभी पुत्रवधू का स्वर गूँजा- "नरदेव! जगत् घटता भी है और बढ़ता भी है। जगत् शब्द का अर्थ ही यह है- "गच्छतीति जगत्" जो गमनशील, गतिशील या चंचल है, वह जगत् है। इसमें कहीं ह्रास हो रहा है तो कहीं समृद्धि। जहाँ सैकड़ों वर्षों पहले सागर लहराता था, वहाँ आज सघन आबादी विद्यमान है। जहाँ पहले भारी बस्ती थी, वह स्थल अब जल-जलाकार हो रहा है। इसलिए जगत् एक-रूप नहीं है। प्रतिक्षण नये-नये रूपों को धारण करता है।

तीसरे उत्तर को सुनकर विद्वान् सभासद् श्रद्धाभिभूत हो गये। तभी राजा ने चौथा सवाल पूछा- "वह क्या चीज है जो न घटती है और न बढ़ती है?"

बड़े शालीन स्वर में बहू ने कहा-"अन्नदाता! विधि की रेखा न घटती है, न बढ़ती है। वह तो यथावत् भोगनी ही पड़ती है। राम और कृष्ण जैसे महापुरुषों ने भी विधि की रेखाओं के कारण दुर्वह स्थितियों को भोगा, द्रौपदी का चीर खींचा गया और पांडव वनवासी बने। कितना कहा जाय, होनहार के आगे सभी को हार माननी पड़ती है। इसलिये संसार में कहावत है- होनहार को नमस्कार"। यह होनहार न घटती है, न बढ़ती है। इस

चौथे उत्तर को सुनकर सभा मंडप जय-जयकार से गूँज उठा। राजा की दुर्नीति सफल नहीं हो सकी। इन चारों प्रश्नों के समाधान के रूप में एक दोहा वयोवृद्ध मुनिजन फरमाया करते थे-

आयु घटै, तृष्णा बढ़ै, जग घट बधत हमेश।
विधि रेखा न घटे-बधै, सुण साहिब सुरतेश।।

('राम मेरे रूँ-रूँ में रम जाए' से संकलित)

प्रश्न :-

1. सूरत शहर कौनसे राज्य में है? उसकी क्या विशेषताएँ हैं?
2. राजा सेठजी से क्यों जलने लगे?
3. सेठजी क्यों परेशान थे?
4. कथा में पूछे गए प्रश्नों के अन्य संभावित उत्तर लिखें।
5. समास-विग्रह कीजिए- श्रद्धाभिभूत, अन्नदाता, कुशाग्रबुद्धि, प्रत्युत्पन्नमति, वयोवृद्ध, विज्ञ-मण्डली।
6. 'शील' प्रत्यय जोड़कर पाँच शब्द लिखें।
7. 'सुण साहिब सुरतेश' का अर्थ लिखिए।

बाल-स्तम्भ [जून-2010] का परिणाम

जिनवाणी के जून-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'आसमान में महल' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 58 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	चित्रा जैन-आलनपुर	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	कशिश जैन-कोटा	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	श्रेयांस जारोली-चितौडगढ़	19.25
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	सुजल जैन-जयपुर	19
	लविश जैन-आलनपुर	19
	चांदनी जैन-इन्दौर	19
	मेघना जैन-जोधपुर	18.5
	प्रिती जैन-जोधपुर	18.5

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (8)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह आठवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 सितम्बर 2010 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 400 से 475 तक से प्रश्न)

(अ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-(उत्तर 'ज' अक्षर से प्रारम्भ)

1. बलदेव उनके .....की प्रतीक्षा करते रहे।
2. मेजर.....फर्लांग ने ऐतिहासिक शोध के पश्चात् लिखा है।
3. आप सामान्य.....की तरह करुण विलाप क्यों कर रहे हैं?
4. भाषां ज्ञात्वा तयोरेवं.....वसुधाधिपः।
5. गगनभेदी.....को सुनकर मगधेश्वर भी आ पहुँचे।

(आ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-(उत्तर 'य' अक्षर से प्रारम्भ)

6. सबने बड़ी श्रद्धा और भक्तिपूर्वक भगवान् को वंदन किया और....स्थान ग्रहण किया।
7. नन्दनवन सा रम्य उद्यान.....का क्रीड़ा स्थल बन गया।
8. आप सांसारिक सुखों का.....उपभोग कीजिये।

9. मैं अभी उसे.....पहुँचाये देता हूँ।
10. नवनिधियों से ब्रह्मदत्त को....भोग सामग्री उपलब्ध हो जाती थी।

(इ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए- (उत्तर 'ह' अक्षर से प्रारम्भ)

11. पद्मनाभ ने सती द्रौपदी का.....कर लिया है।
12. राजगृह की.....से एक मदोन्मत्त हाथी उद्यान में आ पहुँचा।
13. .....प्रयत्न करने पर भी घोड़ों ने एक डग तक भी आगे नहीं बढ़ाया।
14. वरधनु गाँव में पहुँचा और एक.....को साथ लिए लौटा।
15. .....में श्री कृष्ण और अरिष्टनेमि का चचेरे भाई होना स्वीकार किया है।

(ई) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए- (उत्तर 'र' अक्षर से प्रारम्भ)

16. प्रभु ने उत्तर को सुनकर सभी श्रोता.....रह गये।
17. समृद्धिशाली श्रेष्ठिकुलों में थावच्चापुत्र का प्रमुख.....था।
18. उसने.....जल से भरे एक बड़े जलाशय को देखा।
19. थोड़ी ही देर में शीतलोपचारों से ब्रह्मदत्त पुनः..... हुआ।
20. निर्जल.....में पाषाण-शिला पर कमल लगा रहे हो।

(उ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए- (उत्तर 'ती' अक्षर से प्रारम्भ)

21. वर्षा की.....चुभने वाली शीत लहरों से दाँत बोलने लगे।
22. ब्रह्मदत्त बार-बार.....स्वर में कहने लगा ओ नीच कौए!
23. हंस मयंग.....सोवागा कासि भूमिए।
24. .....और महान् शक्तिशाली देव भी इनका निवारण करने में असमर्थ हैं।
25. चक्ररत्न ब्रह्मदत्त की.....कर आकाश में स्थित हो गया।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (6) का परिणाम

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती प्रमिला कैलाशचन्द जी मेहता-जयपुर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- श्रीमती सुशीला सुमतिलाल जी सुराना-नासिक (महा.)

तृतीय पुरस्कार- श्रीमती पुष्पा कांकरिया-रायचूर (कर्नाटक)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती पूजा नितिन जी बोरा-इचलकरंजी (महा.)
2. श्रीमती किरण विरेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर (राज.)
3. श्री जंयत पी. शाह-सूरत (गुजरात)
4. नीलू जैन-लुधियाना (पंजाब)
5. मंजु कांस्टिया-कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

रत्नसंघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं-

आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान

जैन आगम, जैन दर्शन तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन,शोध व जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान के लिए।

युवा प्रतिभा शोध सम्मान (उम्र 45 वर्ष अधिकतम)

प्रशासनिक चयन-राज्य स्तरीय एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।

प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउन्टेट, कम्पनी सचिव, एम.बी.ए. तथा अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।

शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)।

संघ-सेवा- चतुर्विध संघ सेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन आदि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका,एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)

कम से कम 10 वर्ष स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधना) के रूप में सक्रिय सेवा। युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकती है।

गुणी अभिनन्दन

तपस्या- कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।

अन्य- सेवा, साधना, संघ-उन्नयन में योगदान, चतुर्विध संघ-सेवा, विद्वान्।

नोट- उपर्युक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ 31 अगस्त 2010 तक संघ कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

पूरणराज अबानी, महामंत्री

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोडों का चौक, जोधपुर (राज.)

फोन नं. 0291-2636763

जिनवाणी की श्रेष्ठ रचनाओं के पुरस्कार घोषित

जिनवाणी के जनवरी से दिसम्बर 2009 के अंकों में प्रकाशित विभिन्न लेखों/रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ रचनाओं का चयन श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना की अध्यक्षता में एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी के सान्निध्य में सात सदस्य समिति ने किया है। परिणाम इस प्रकार हैं-

(1) आध्यात्मिक / नैतिक शिक्षा परक लेख

मैत्री भाव (सितम्बर 2009)
श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, जयपुर 5100/-

(2) शोधालेख / वैज्ञानिक लेख

परस्परोपग्रहो जीवानाम् और आधुनिक समाज (जुलाई 2009)
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर 5100/-

(3) आगमिक / तात्त्विक / जीवन शैली से सम्बद्ध लेख

जैन होने का गौरव (अगस्त 2009)
डॉ. दिलीप धींग, उदयपुर 5100/-

(4) अंग्रेजी भाषा की रचनाएँ

Empowering The Vegetarians (सितम्बर 2009)
डॉ. जीवराज जैन, जमशेदपुर 5100/-

(5) युवा स्तम्भ-

धर्म कहाँ से शुरू होता है (अगस्त 2009)
श्री रणजीत सिंह कूमट, मुम्बई 5100/-

(6) नारी स्तम्भ-

वैयावृत्त्य का आनन्द (अगस्त 2009)
श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर 5100/-

(7) बाल स्तम्भ-

कोई नहीं

(8) कविता-

सिद्धान्तों से नहीं है हटना (मार्च 2009)
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, जयपुर 3100/-

(9) संवाद स्तम्भ -

संवाद -24 (जून 2009)
श्री महेन्द्र तिल्लानी, रतलाम 3100/-

(10) प्रेरक प्रसंग

वह पानी मुलतान गया (सितम्बर 2009)

श्री जशकरण डागा 2100/-

(11) प्रासङ्गिक लेख

निर्ग्रंथ परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र : आचार्य हस्ती (सितम्बर 2009)

श्री पारसमल चण्डालिया, ब्यावर 5100/-

(12) नवीन लेखन

(1) द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव (फरवरी 2009)

(2) जैन परमाणुवाद (अप्रेल 2009)

श्री चिरंजीव 'अनेकान्त' लाडनूँ 5100/-

उपर्युक्त पुरस्कारों का वितरण यथावसर किसी समारोह में किया जाएगा। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमल जी सुराणा के सौजन्य से प्रदान की जाएगी। - *विरदराज सुराणा, मन्त्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

अध्यात्म चेतना वर्ष के अन्तर्गत चातुर्मास के चार माह के लिए सौ ब्रह्मचर्य व्रती बनाने हेतु पाली श्री संघ की सार्थक पहल

अध्यात्म योगी-युगमनीषी आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म-शताब्दी के प्रसंग पर गुरु हीरा अध्यात्म-चेतना वर्ष में श्रद्धालुओं को व्रती श्रावक बनने, शीलव्रत के खंद करने, रात्रि भोजन-त्याग जैसे कई-कई नियमों को जीवन-व्यवहार में अंगीकार करने की सतत और प्रभावी प्रेरणा करते आ रहे हैं। पाली श्री संघ ने चातुर्मास में मर्यादित समय-सीमा के साथ चार माह ब्रह्मचर्य व्रत के पालनार्थ लोगों को तैयार करने की भावना उजागर की है। पाली श्री संघ के सार्थक सद्प्रयासों से पचास से ऊपर दम्पतियों ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से चार माह के लिए ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने का नियम लिया है। पाली श्री संघ सौ की संख्या-पूर्ति हेतु प्रयत्नशील है। पाली श्री संघ का अध्यात्म-चेतना वर्ष में मर्यादित समय-सीमा के लिए ब्रह्मचारी बनाने हेतु प्रयास अनुकरणीय तो है ही, अनुमोदनीय भी है। *-नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी*

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा क्रियान्वित

सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक,इतिहास मार्तण्ड, युग प्रवर्तक, युगमनीषी, आचार्य श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष 2011 को उत्कृष्ट रूप से मनाने के लिए अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा पंचवर्षीय मेधावी छात्रवृत्ति योजना बनाई गई। इस योजना में मेधावी छात्रों को लाभान्वित कर उनका व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन करने का लक्ष्य है।

इस योजना के माध्यम से गत चार वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही हैं। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार हैं-

नियमावली

- आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।
- आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।
- आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।
- आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा।
- छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

- चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेगें। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।
- सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकुलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए। **आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-** B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.-044-42728476,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.com

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन पत्र Download कर सकते हैं।

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का भक्तिनगरी पाली में चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश

संघशिरोमणि-संघनायक पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 का सुराना मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश आषाढ़ शुक्ला दशमी, मंगलवार, दिनांक 20 जुलाई, 2010 को प्रातः करीब 10.30 बजे सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं के जय-जयकार के जयघोषों के साथ अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आदि ठाणा 2 जुलाई को घोड़ों का चौक से महामन्दिर जैन स्कूल में पधारे। यहाँ दो व्याख्यान हुए। यहाँ से संघ संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत के निवेदन पर रेनबो हाउस पधारे। संघ संरक्षक न्यायाधिपति श्री कृष्णमल जी लोढ़ा को मांगलिक प्रदान करने हेतु उनके बंगले पधारे। यहाँ से 4 जुलाई को लक्ष्मीनगर पदार्पण हुआ। प्रवचनादि का इस क्षेत्र के विभिन्न उपनगरों के श्रावक-श्राविकाओं को लाभ प्राप्त हुआ। दस वर्षों के अन्तराल के पश्चात् जोधपुर में पदार्पण होने से जोधपुरवासियों में अत्यधिक उत्साह देखा गया। प्रवचनादि में उपस्थिति उत्सवों जैसी रही। यहाँ से 5 जुलाई को रातानाड़ा क्षेत्र के पुष्प भवन में आपका मंगल पदार्पण हुआ तथा प्रवचन जैन भवन, रातानाड़ा में हुआ। 6 जुलाई को यहाँ से आपका सरस्वती नगर की ओर विहार हुआ। विहार में जोधपुर के अनेक श्रावक-श्राविका साथ चल रहे थे। यह क्षेत्र भी प्रवचन से उपकृत हुआ। 7 जुलाई को प्रो. धर्मचन्द जैन, मानद् सम्पादक, जिनवाणी के निवेदन पर आचार्यप्रवर ठाणा 5 से कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड पधारे तथा सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा 4 से अहिंसा रिसोर्ट पधारे। यहाँ से अपने संतरत्नों के साथ जोधपुर से ग्रामानुग्राम ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हुए 16 जुलाई को पाली के महावीर नगर स्थित महावीर भवन पधारे। विचरण-विहार में पाली-जोधपुर सहित कई क्षेत्रों के भक्तों ने विहार-सेवा का लाभ तो लिया ही, गुरु चरण सरोजों में व्रत-नियम की श्रद्धा भी समर्पित की। आचार्यप्रवर ने कई भक्तों की पुनः पुनः प्रार्थना के पश्चात् भी सुराना मार्केट स्थित

सामायिक स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश की तिथि नहीं बतलाई। 16 जुलाई की प्रवचन सभा में 17 जुलाई का व्याख्यान समता भवन में, 18 जुलाई का प्रवचन वीर दुर्गादास नगर में होने की सूचना से अवगत करा दिया गया। आचार्यप्रवर विगत कुछ वर्षों से अपने प्रवेश की तिथि पूर्व से नहीं फरमाते, अतः भक्तों की जिज्ञासा कम होने के बजाय बढ़ती रहती है। रविवार को दुर्गादास नगर में प्रवचन सभा में कल यानी 19 जुलाई का व्याख्यान यहीं है, सूचना श्रवण कर जन समुदाय 19 जुलाई के दिन प्रवचन पश्चात् उत्सुकता से 20 जुलाई के व्याख्यान की घोषणा-श्रवण के लिए बेचैन था।

आचार्यप्रवर ने मंगल पाठ पूर्व फरमाया कि कल यहाँ से करीब नौ-सवा नौ बजे विहार की भावना है। गुरु मुख से "विहार की भावना है" सुनकर भक्तों ने एक दूसरे को सूचना-रूप समाचार कर दिये कि दशमी 20 जुलाई को सुराना मार्केट स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश की संभावना है। जोधपुर, ब्यावर, नागौर, बालोतरा, बाड़मेर, गोटन, जयपुर, अजमेर, देशनोक, बैंगलुरू, सोजतरोड़ जैसे कई क्षेत्रों के श्रद्धालु दर्शन-वन्दन, विहार-सेवा और चातुर्मास के मंगल सन्देश श्रवण की आशा-आकांक्षा से पाली पहुँचे और विहार-यात्रा में हर्षित-उल्लसित मन से गगनभेदी जय-जयकार करते हुए विहार में साथ चल रहे थे। भक्तों ने भजन-गीतों से सूरजपोल से लेकर मुख्य बाजारों तक गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान का नाम गुंजित किया। वीर दुर्गादास नगर से विहार करते ही श्रमण संघीय महासती श्री सत्यसाधना जी म.सा. आदि ठाणा ने आचार्यप्रवर एवं मुनिप्रवरों के दर्शन-वन्दन व सुख-शांति पृच्छा का लाभ लिया। आचार्यप्रवर ने महासती मण्डल को मांगलिक सुनाई और आगे बढ़ गये।

सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में प्रवेश के पूर्व आचार्यप्रवर ने आज्ञा ली एवं कपड़ा बाजार स्थित सीढ़ियों से स्थानक में प्रवेश किया। भण्डोपकरण यथा स्थान रखकर आचार्य प्रवर आदि संत-मुनिराज प्रवचन सभा में पधारते तब तक श्रावक-श्राविकाओं में से कइयों ने सामायिक-साधना में तो कइयों ने खुले बैठकर अपना स्थान ग्रहण किया।

प्रवचन-सभा में संघनायक के पधारने पर जन समुदाय ने प्रमुदित हो खड़े होकर एवं जय-जयकार करके आचार्य श्री आदि मुनिराजों का स्वागत किया।

आचार्यप्रवर ने "अरिहन्त जय-जय, सिद्ध प्रभु जय-जय" प्रार्थना की एक कड़ी का उच्चारण किया तो जन समुदाय ने भक्तिभावना से स्वर में स्वर

मिलाकर प्रार्थना का आनन्द उठाया। **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.** ने सात-सात नमस्कार मंत्र के ध्यान का आह्वान किया तो उपस्थित भाई-बहिनों ने ध्यान किया एवं तीर्थंकर भगवन्तों की एवं गुरु भगवन्तों की जय के नारों से सामायिक स्वाध्याय भवन को गुंजायमान कर दिया।

पाली संघ मंत्री श्री ताराचन्द जी सिंघवी ने गुरु कृपा और पाली श्री संघ के सौभाग्य का चन्द शब्दों में उल्लेख करते हुए श्री संघ की ओर से संघनायक के स्वागत-सत्कार में गीत रखा। गीत के बोल थे- ''स्वागत करते हैं बारम्बार, हम सब पाली वाले''। पाली के आबाल-वृद्ध संघ सदस्यों ने स्वागत-गीत में तन्यमयता-एकाग्रता के साथ स्वर में स्वर मिलाकर गुरु का तहेदिल से स्वागत किया।

कार्यक्रम संचालक **श्री मांगीलाल जी चौपड़ा** ने वक्ताओं से आग्रह किया कि आप समय-सीमा का ध्यान रखते हुए अपने हृदयोद्गार संक्षेप में रखें। ब्यावर के **श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा** ने अपनी भावना व्यक्त करते कहा- देता है, उसे मिलता है। इस बात को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा- ''उपाध्याय प्रवर को ब्यावर चातुर्मास था तब चांतुर्मास की विनति में पाली और गोटन की पुरजोर विनती थी। पाली के प्रबुद्धजनों ने उपाध्यायप्रवर के ब्यावर चातुर्मास में एक तरह से सहयोग किया, श्री गोलेच्छा जी ने पाली श्री संघ का सार्वजनिक आभार यह कहते व्यक्त किया कि आपको यशस्वी आचार्यश्री का एक दशक पश्चात् राजस्थान पधारने पर पहला चातुर्मास मिला है, इसीलिये मैंने कहा जो देता है उसे मिलता है।''

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अतिरिक्त महामंत्री श्री नौरतन जी मेहता ने गुरु एवं पाली संघ के सन्दर्भ में कहा कि हमारे आराध्य आचार्य श्री साधना में रचे-पचे रहते हैं इसीलिये आपश्री के चेहरे पर सदा अपूर्व शांति रहती है। चेहरे पर ही नहीं, शांति के परमाणु आप जहाँ भी विराजते हैं, विद्यमान रहते हैं। आचार्य श्री के बाड़मेर-बालोतरा-जोधपुर-पाली क्षेत्रों में विहार में जैन-जैनेतर लोगों की भावना चित्रित करते कहा कि अजैन तक आपश्री के अतिशय से परिचित हैं इसलिये वे सेवा में तत्पर रहते हैं। गुरु चरणों में आकर हम शांति का एहसास करते हैं, इसलिए हम जब भी संसार के कामों से संत्रस्त होते हैं तब इन चरणों में आकर ताप-संताप भूल जाते हैं। पाली की बात निराली, पाली की भक्ति प्यारी, कहावतें कइयों ने कई-कई बार सुनी हैं, किन्तु मैंने अनुभव किया

कि भक्ति में शक्ति होती है यह कहावत पाली संघ ने चरितार्थ कर दिखाई है। व्यक्ति-व्यक्ति का संघ से जुड़ाव और गुरु भक्ति में तन-मन-धन से समर्पण के कारण जब चाहा तब पाली को चातुर्मास मिला। आगत श्रद्धालुओं को पाली से भक्ति में शक्ति की सीख लेनी है।

पाली के श्रावकरत्न **श्री राजेश जी चौपड़ा** ने "पाली नगर में आनन्द की बहार है" गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के **कार्याध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा** ने गुरु-भक्ति में युवकों द्वारा किए गये संकल्प का चित्रण किया और कहा कि हमें आज गुरु की चरण-सन्निधि का सुयोग चार माह के लिए मिला है। युवक परिषद् के सदस्य प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने का फिर से संकल्प कर रहे हैं जो चातुर्मास में साकार होगा। चातुर्मास के सुयोग को पाकर युवकों की प्रसन्नता उनके चेहरों पर दिखलाई दे रही थी। सुश्रावक **श्री मोहनलाल जी तलसेरा** ने गुरु की कृपा पर प्रमोद व्यक्त करते हुए धोवण पानी के उपयोग की प्रेरणा की। **श्री मोहनलाल जी देसरला** ने भी अपने हृदयोद्गार में चातुर्मास हेतु खुशी अभिव्यक्त की। गोटन के युवा साथी **श्री सुरेश जी ओस्तवाल** ने भक्ति भावना से गुरु गुणगान करके अपनी जिह्वा पवित्र की। **श्री प्रेमराज गांधी, श्रीमती रतन जी डोसी, श्री चंपालाल जी सुराना** और **श्री रतनलाल जी कूकड़ा** ने भी आचार्यप्रवर के चातुर्मास का लाभ प्राप्त होने पर हर्ष व्यक्त किया। ब्यावर के युवा **श्री ऋषभ जी गोलेच्छा** ने एवं पाली के **श्री पारसमल जी चौपड़ा** और **श्री गोविन्द जी अरोड़ा** ने भक्ति-भावना से सुन्दर विचारों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के संचालक श्री मांगीलाल जी चौपड़ा ने आचार्य श्री एवं मुनि मण्डल की कृपा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते कहा कि भीषण गर्मी में कठिन परीषह सहकर आपश्री चातुर्मास के लिए यहाँ पधारे हैं हम पालीवासी आपका उपकार सदा-सर्वदा याद रखेंगे। चातुर्मास में क्या-क्या कार्यक्रम होंगे संक्षिप्त जानकारी रखते हुए चौपड़ा साहब ने सकल जैन समाज का आह्वान किया कि हम घर आई गंगा से लाभ लेने में पीछे नहीं रहें।

आचार्य प्रवर के संकेत से **श्री मनीष मुनि जी म.सा.** ने मंगल-प्रवेश का चित्रण प्रस्तुत करते फरमाया कि आज का मंगल प्रवेश वेष का नहीं, प्रभु महावीर के संदेश का है। आज का मंगल प्रवेश चरण का नहीं, आचरण का है। आज जो प्रवेश हुआ है वह सत्ताधीशों का नहीं, सत्ताइस गुणों के धारी संतों का

प्रवेश है। आज का प्रवेश छत्र धारियों का नहीं, छत्तीस गुणों के धारी आचार्य भगवन्त का प्रवेश है। आज का प्रवेश मेहमानों को बुलाने का नहीं, जीवों पर महरबानी करने का है। मुनि श्री ने अपना पूरा वक्तव्य प्रवेश की परिधि में इस तरह बनाए रखा कि जन समुदाय अपलक मुनिश्री को सुनता रहा।

श्री योगेश मुनि जी म.सा. ने मंगल प्रवेश की पावन बेला में अपनी बात यह कहते रखी कि आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज ने अपना अन्तिम चातुर्मास पाली किया इसलिये यह भूमि आचार्य श्री हस्ती की पावापुरी है। मुनि श्री ने संक्षेप में किन्तु सारगर्भित शब्दों में प्रवेश को आत्मप्रदेश की जागृति के रूप में लेने का आह्वान किया।

तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने अपने मंगलमय उद्बोधन में कर्मों के उदय के कारणों का विवरण-विवेचन रखते फरमाया कि बिना बुलाये भी अनन्त कर्मों का प्रवेश आज से नहीं अनादिकाल से चलता आ रहा है, इसलिये हम संसार-चक्र में भटकते आ रहे हैं। तत्त्वचिंतक मुनि श्री ने मिथ्यात्व की ग्रन्थि के छेदन की प्रेरणा करते हुए तीर्थ में प्रवेश को सार्थक बताया। पाली की भक्ति के सन्दर्भ में कुछ सुनने को मिला, लेकिन एक दयामुनि जी की बात छोड़ दें तो कहना होगा पाली अभी खाली है। चातुर्मास की पहली उपलब्धि होती है बाहर को छोड़कर आत्मा में प्रवेश करना। आप संसार के संसरण का अन्त करना चाहते हैं तो महापुरुष के चातुर्मास से लाभ उठायें और संयम-साधना में प्रवृत्ति करें।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने अपने मनोगत भाव रखतें हुए फरमाया कि मननशील मानव की मनोवृत्ति होती है कि वह इच्छित वस्तु की प्राप्ति होने पर प्रशंसा की अभिव्यक्ति करता है। रत्नसंघ के पूर्वाचार्यों की पाली पर कृपा रही, अतः केवल आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज को छोड़कर सभी आचार्यों ने पाली में चातुर्मास किए। आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी महाराज ने ग्यारह चातुर्मास किए। पूज्य श्री दुर्गादास जी महाराज ने दस चातुर्मास पाली किए। श्रद्धेय श्री कनीराम जी महाराज, श्रद्धेय श्री चन्दनमल जी महाराज, श्रद्धेय श्री नन्दलाल जी महाराज, श्रद्धेय श्री बालचन्द जी महाराज आदि-आदि मुनिपुंगवों के ऐतिहासिक तथ्यों में मुनिश्री ने पाली में चातुर्मास, पाली में दीक्षा एवं पाली स्पर्श करने के उल्लेख किए, साथ ही कहा कि आप जो श्री दयामुनिजी महाराज की दीक्षा की बात कहते हैं, वे थे तो जोधपुर के, नौकरी के लिए पाली आए, फिर भी आप अपनी दीक्षा बता रहे हैं, कोई हर्ज नहीं। पाली में यों तो कई

संतों और सतियों की दीक्षाएँ हुई हैं, किन्तु पाली मूल के कौन हैं आप जरा बता तो दें। महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने आचार्यप्रवर के एक दशक पश्चात् राजस्थान में पदार्पण पर पहले चातुर्मास का जो सुयोग पाली को मिला है, पाली के प्रबुद्धजन इस चातुर्मास को दीप्तिमान बनाकर इतिहास कायम करें।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में फरमाया कि भयंकर गर्मी में लोग बादलों की ओर निहारते हैं। जहाँ कहीं भी बादल देखे जाते हैं, लोगों को लगता है कि ये बरसेंगे। गुजरात प्रवास के बाद जोधपुरवासियों को उम्मीद थी कि शायद ये बादल बरसेंगे, किन्तु सांचोर, बाड़मेर, बालोतरा के लोगों को वीतराग वाणी का सुयोग मिला। वर्षा होने के बाद लोग खेतों को हराभरा देखना चाहते हैं। वर्षा हो जाय और खेत सूखे पड़े हों तो.....? वीतराग वाणी की वर्षा पेट की नहीं, ठेठ की भूख-प्यास मिटाने वाली है। यह वाणी ताप का नहीं, पाप का मैल धोने वाली है। मोह के विकारों को नष्ट करने वाली है। अतः आप इस वर्षा से अपने खेत रूपी हृदय को हरा-भरा करके स्वयं आनन्दित हों, दूसरों को आनन्द पहुँचाने में निमित्त बनें। आचार्यप्रवर ने पालीवासियों को प्राप्त सुयोग से लाभ लेने का आह्वान किया।

कार्यक्रम संचालक महोदय ने आवश्यक सूचनाओं का प्रसारण किया जिसमें प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम का समय तो बताया ही, ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में और अध्यात्म-चेतना में उत्तरोत्तर आगे बढ़ने का आह्वान किया। आगत श्री संघों व श्रद्धालुओं के स्वागत के अनन्तर भोजन व्यवस्था की सूचना की गई एवं प्रत्याख्यान करवाये गये। आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाया।

पाली संघ मंत्री श्री ताराचन्द जी सिंघवी ने कहा कि अब तक हम पचरंगी से चातुर्मास का श्री गणेश करते आ रहे हैं, किन्तु इस वर्ष संघनायक का चातुर्मास है, इसलिये सप्त रंगी से चातुर्मास का शुभारंभ करें, आप अपने नाम नोट करवा दिरावें।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-250021

आवास व्यवस्था- (1) सुराणा सराय, पुराना बस स्टेण्ड के पास, पाली, फोन-02932-250944 (2) श्री जैन रत्न हितैषी छात्रावास, आनन्द नगर, मण्डिया रोड, पाली, फोन नं. 02932-230452 (विशेष वाहनों के लिए)

सम्पर्क सूत्र- (1) श्रीमान ताराचन्दजी सिंघवी, 7-गाँधी कटला, पाली- 306401, फोन-02932-222005 (2) श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, बी-60, केशर कुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली- 306401, फोन-02932-220603/94141-22304

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का गोटन में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 का महावीर कॉलोनी, गोटन स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में आषाढ़ शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, 16 जुलाई 2010 को प्रातः 8.30 के लगभग सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं के जयघोषों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मासार्थ प्रवेश के पावन प्रसंग पर जोधपुर, पीपाड़ भोपालगढ़, बारनी, हरसोलाव, कोसाना, मेड़तासिटी, ब्यावर, कंवलियास, अजमेर आदि ग्राम-नगरों के साथ चेन्नई तक के श्रद्धालुओं ने जे.के.सीमेन्ट फैक्ट्री पहुँचकर उपाध्यायप्रवर सहित मुनिपुंगवों के दर्शन-वन्दन का लाभ तो लिया ही, विहार-यात्रा में सम्मिलित हो गोटन श्री संघ की शोभा बढ़ाई। प्रातः करीब 7.30 बजे उपाध्यायप्रवर ने जे.के.सीमेण्ट फैक्ट्री से विहार किया, उपाध्यायप्रवर व संतों के पीछे जय-जयकार के गगनभेदी नारे गुंजायमान करते श्रावकों तथा उनके पीछे मंगल गीत गाती श्राविकाओं के स्वप्रेरित अनुशासनबद्ध चलने से विहार का आकर्षण मन भावन लग रहा था।

गोटन में उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास पाकर आबालवृद्ध और जैन-जैनेतर जन समुदाय के खिले चेहरे उनकी प्रसन्नता का इजहार कर रहे थे, इसलिये नहीं चलने वाले भी विहार-यात्रा में उमंग-उल्लास से जय-जयकार करते हुए चल रहे थे।

करीब एक घंटे पश्चात् उपाध्यायप्रवर महावीर कॉलोनी स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे, आज्ञा लेकर भवन में प्रवेश किया, भण्डोपकरण यथास्थान रखकर प्रवचन-सभा में पधारते तब तक जन समुदाय चातुर्मास मंगलप्रवेश पर उपाध्यायप्रवर एवं मुनिपुंगवों के मंगल सन्देश श्रवण करने की भावना से अपना स्थान पहले से ग्रहण कर चुका था।

उपाध्याय प्रवर संत-मुनिराजों के साथ प्रवचन सभा में पधारे तब भक्तों

ने हर्षित-उल्लसित भावों में खड़े होकर जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद कर स्वागत किया। उपाध्यायप्रवर ने "ऊँ शांति...शांति.....शांति, सब मिल शांति कहो" प्रार्थना का उच्चारण किया तो उपस्थित श्रावकों ने स्वर में स्वर मिलाकर भक्ति-भावना से प्रार्थना का आनन्द उठाया।

उपाध्यायप्रवर के संकेत से **श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा.** ने गोटन की पुण्यवानी की सराहना करते कहा कि आपकी भक्ति से यह चातुर्मास का सुयोग मिला है, आप इसका पूरा-पूरा लाभ उठाने में पीछे नहीं रहें। **श्री दर्शन मुनि जी म.सा.** ने कहा कि पांचम को पांच संतों का प्रवेश हो रहा है और 16 तारीख है अतः चातुर्मास सोलह आना सही रहे, ऐसा प्रयत्न रहे। मुनिश्री ने "छोटी-छोटी उम्र थांरी करले विचार" बोल में भजन के माध्यम से अपनी बात पूरी की। **श्री लोकचन्द्र जी म.सा.** ने "चेतन निज घर को भूल रहा, पर घर माया में झूल रहा" गीत के बोलों की प्रस्तुति देते हुए साधना में पुरुषार्थ करने की प्रेरणा तो की ही, लक्ष्य निर्धारण कर पुरुषार्थ करते रहने से कैसे लाभ होता है, बताया। मुनिश्री ने चातुर्मास को बाहर से भीतर में प्रवेश करने का मौका बताया। **मधुर-व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा.** ने धार्मिक नगरी गोटन में उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास के परिप्रेक्ष्य में फरमाया कि यहाँ के लोगों के मन में एक कल्पना थी, कि हमारे यहाँ इतने मंहगे-मूल्यवान-अतिशयधारी उपाध्यायप्रवर चातुर्मास करें। वर्षों से भावना थी। यहाँ पर मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी महाराज, युवाचार्य श्री मधुकर जी महाराज, बड़े लक्ष्मीचन्द जी महाराज के चातुर्मास हुए हैं। इस धर्मनगरी में बड़े-बड़े संतों का आवागमन भी होता रहा है। सौभाग्य है गोटन का, जो इस वर्ष उपाध्याय श्री का चातुर्मास मिला।

जो बात दवा से नहीं होती, वह दवा से होती है।
काबिले गुरु मिले तो हर बात खुदा से होती है।।

उपाध्याय श्री का परिचय देने की जरूरत नहीं। सूरज का क्या परिचय दूँ? सूरज जग को आलोकित करता है, प्रकाशित करता है। उपाध्याय श्री की सरलता, निश्छलता, मनमोहकता जनमानस को प्रभावित करने वाली है। गोटन श्री संघ को एक-दो दिन का नहीं, एक-दो महीने का नहीं, पूरे चार माह के लिए सुयोग मिला है। मुनि श्री ने एक रूपक के माध्यम से बताया कि एक गांव का आदमी तीर्थ यात्रा का विचार करने लगा। वह सोच में पड़ गया कि तीर्थयात्रा के लिए न जुगाड़ है और नही ही समय। पड़ौस में बैठे व्यक्ति ने कहा- भाई! तूं तो समुद्र में डुबकी लगा ले,

सारे तीर्थ हो जायेंगे क्योंकि सारी नदियाँ समुद्र में आकर ही तो मिलती हैं। वह बोला- ठीक है, मैं डुबकी लगा लूँगा, पर डुबकी तब लगाऊँगा जब ये लहरें बंद हो जायेंगी। लहरें कभी बन्द नहीं होती आप जानते हैं, इसी तरह संसार के काम कभी बन्द नहीं होने वाले हैं। आप चातुर्मास को यादगार बनाने के लिए प्रयास करें। यह आपका ही नहीं, चौखले का चौमासा है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने महती कृपा की, आपकी भक्ति भावना देखी, उमंग-उल्लास का रूप देखा, इसलिये चातुर्मास खोला है। आप ज्ञान सीखने में, तप साधना करने में और संघ दीप्ति में पूरी सजगता रखकर चातुर्मास के सुयोग का लाभ उठायें।

उपाध्यायप्रवर के मंगल उद्‌बोधन के पूर्व गोटन श्री संघ की बहिनों ने आगमन.....आगमन...शुभागमन, स्वागतम्.....सुस्वागतम् बोल में स्वागत गीत की सुन्दर प्रस्तुति दी। ब्यावर के सुश्रावक **श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा** ने उपाध्याय प्रवर के गोटन चातुर्मास पर अपनी खुशी का इजहार करते हुए गोटन श्री संघ द्वारा उपाध्याय प्रवर के ब्यावर चातुर्मास के समय प्रदत्त सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित किया।

सुश्रावक **श्री हस्तीमल जी डोसी-मेड़ता सिटी** ने उपाध्याय प्रवर के अतिशय प्रभाव का उल्लेख करते हुए गोटन चातुर्मास सफल रहेगा, मंगल भावना व्यक्त की। जोधपुर के भजन रसिक **श्री चंदन जी चौपड़ा एवं श्री हंसराज जी कांकरिया** ने "पलभर में मालामाल करे ऐसा व्यापारी आया है" बोल में गीत के माध्यम से गुणगान किए तो जन समुदाय भी गीत के बोलों में स्वतः साझीदार बन गया। गोटन की **श्राविका मण्डल** की बहिनों ने भी स्वागत-गीत की प्रस्तुति दी। **श्री महावीर जी ओस्तवाल** ने मान गुरु की शरण में अपने परिवार की भावना विषयक विचार रखे। ब्यावर महिला मण्डल की बहिनों ने भी गीत के माध्यम से गुणगान किए। पीपाड़ के स्वाध्यायी श्रावक **श्री धनपतजी मेहता** ने गोटन श्री संघ को मिले चातुर्मास पर विचाराभिव्यक्ति में इस सुयोग को गोटन के लिए श्रेयस्कर बताया। बालिका मण्डल, गोटन ने भी भजन के माध्यम से गीत की प्रस्तुति दी। **वीरभ्राता श्री महेन्द्र जी सेठिया**-जोधपुर द्वारा गुणगान की सुमधुर स्वरलहरी का प्रभाव ही कुछ ऐसा था कि जन समुदाय भी गीत के बोल में संयुक्त हो गया और गर्मी के कारण जो कुछ सुस्ती-सी अनुभव हो रही थी वह दूर हो गई।

गोटन के बुजुर्ग श्रावक **श्री रतनलाल जी कोठारी** ने गोटन में हुए पूर्व के

चातुर्मासों का विवरण रखते हुए इस वर्ष उपाध्याय प्रवर के चातुर्मास को नगर के लिऐ महान् पुण्यवानी का निमित्त बताया। गोशाला एवं बाजार वाले स्थानक निर्माण में सहयोग प्रदाता श्री पुनवानचन्द जी ओस्तवाल का भी उन्होंने आभार व्यक्त किया। पीपाड़ रत्नसंघ के मंत्री **श्री सुमतिचन्दजी मेहता** ने गोटन में उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इस चातुर्मास से पूरे चौखले में धर्म की प्रभावना होगी। **नागौर की श्राविका मण्डल** की बहिनों ने भी गीत के माध्यम से उपाध्यायप्रवर के गुणगान किए।

गोटन संघ के मंत्री **श्री चैनरूपचन्द जी बाफना** ने गद्य-पद्य भाषा-भाव में अपने मनोगत भावों को रखते हुए उपाध्याय प्रवर के चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश पर पधारे सभी श्रावक-श्राविकाओं के स्वागत में दो शब्द कहे और उपाध्याय प्रवर के मंगलपाठ के पश्चात् श्री संघ के चौके में पधार कर भोजन ग्रहण करने का अनुरोध किया। चातुर्मास में प्रवचनादि समय का उल्लेख करते हुए ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप में सबके सहयोग की कामना करते हुए गोटन श्री संघ की ओर से उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों के प्रति भी उन्होंने कृतज्ञता ज्ञापित की।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि आज का दिन कहने के बजाय, सुनने के लिए है। संत प्रतिदिन प्रवचन करते रहते हैं। आपने आज गुणगान किए, हमें गुणगान नहीं, ज्ञान-दर्शन-चारित्र में वृद्धि इष्ट लगती है। उपाध्याय श्री ने पानी और वाणी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए फरमाया कि इस चातुर्मास के लिए परोक्ष उपकार तो आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज का है और प्रत्यक्ष में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज का उपकार है, जिन्होंने आपकी भावना जान-समझ कर गोटन चातुर्मास खोला। यह वर्ष अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में हमारे सामने है। आप त्याग-प्रत्याख्यान करने में पीछे नहीं रहें और जिस उत्साह से चातुर्मास कराया है चार महीने वैसा ही उत्साह बनाए रखेंगे। यह चातुर्मास चौखले का चौमासा है। जोधपुर, पीपाड़, भोपालगढ़, मेड़ता चारों तरफ के गांवों के लोग धर्म ध्यान करें और शताब्दी वर्ष में कोई पीछे नहीं रहे। कार्यक्रम संचालक **श्री हंसराज जी चौपड़ा** ने आवश्यक सूचनाओं का प्रसारण किया, मंगलपाठ श्रवणकर जय-जयकारों के जयनादों के साथ चातुर्मास मंगल प्रवेश का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

गोटन श्री संघ ने श्रीमती शरदचन्द्रिका अतिथि भवन में भोजन की व्यवस्था रखी जहाँ पर श्रावक-श्राविकाओं ने एक दूसरे से आत्मीयता पूर्वक बात-

चीत की और प्रवेश पर अच्छी उपस्थिति की भी सराहना की। गोटन में सामायिक-स्वाध्याय भवन एवं अतिथिगृह-भोजनशाला देखकर आगत श्रद्धालुओं ने मन-ही-मन गोटनवासियों के दूरदर्शितापूर्ण चिन्तन को सीख लेने योग्य समझा।

उपाध्यायप्रवर के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश के दिन अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक **श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल** ने शीलव्रत का खंद किया वहीं श्रावकरत्न श्री अभयकुमार जी ने चार माह के लिए ब्रह्मचर्य पालन का नियम अंगीकार किया। चातुर्मास प्रवेश के साथ ही तपस्या का क्रम भी उमंग एवं उल्लास के साथ प्रारम्भ हो गया है। श्रीमती पूनमदेवी चौपड़ा, श्री सुशील जी बाफना एवं श्रीमती सिम्पलदेवी के अठाई तप सम्पन्न हो चुके हैं। श्रीमती प्रकाश देवी बाफना की दीर्घकालीन तपस्या का क्रम प्रारम्भ हो गया है। इससे लगता है गोटन कस्बा भले ही जैन समाज के घरों की दृष्टि से छोटा है, लेकिन वहाँ की धर्मभावना बलवती है।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज.

सम्पर्क सूत्र- (1) श्री भैरूंलालजी ओस्तवाल, रसाली स्टोर, पो.-गोटन-342903 (जिला-नागौर) राज., फोन-01591-230135/94141-18701/94144-84911 (2) श्री चैनरूपचन्दजी बाफना, स्टेशन रोड़, पो.-गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज., फोन-94131-69889

महासती मण्डलों के स्वीकृत चातुर्मास स्थलों पर संघ मर्यादानुकूल मंगलप्रवेश

साध्वी प्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा, 10 जो घोड़ों के चौक स्थानक विराजमान थे, दिनाँक 16 जुलाई को प्रातः पौषधशाला में प्रार्थना करके पौषधशाला से घोड़ों के चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में चातुर्मासार्थ पधारे। **तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4** का वर्षावास सरस्वती नगर स्वीकृत किया गया था, अतः उनका सामायिक स्वाध्याय भवन से 19 जुलाई को विहार हुआ और 20 जुलाई को जोधपुर के उपनगर सरस्वती नगर स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ।

सेवाभावी महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का

विजयनगर से 16 जुलाई को प्रातः विहार हुआ और गुलाबपुरा स्थानक में वर्षावास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। **व्याख्यानी महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9** का बालाघाट जिलान्तर्गत चांगोटोला जैन स्थानक में 16 जुलाई को चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश हुआ। **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 8** का 19 जुलाई को गांधीनगर सेक्टर 22 स्थित जैन स्थानक में प्रवेश हुआ। **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5** का 20 जुलाई को हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर से विहार हुआ और शहर के महावीर भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ। **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6** ने सियाट से विहार कर 19 जुलाई को सोजतरोड़ स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5** का 21 जुलाई को नागौर स्थित सामायिक -स्वाध्याय भवन में वर्षावास हेतु प्रवेश हुआ। **सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 4** ने मेड़तासिटी रेनीगेट से विहार किया और श्रीमालों के मौहल्ले स्थित स्वाध्याय भवन में चातुर्मास हेतु प्रवेश किया। **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 6** ने 16 जुलाई को मैसूर के अगरार क्षेत्र से विहार कर महावीर नगर स्थित जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 5** का 16 जुलाई को के.जी.एफ स्थित अम्बेडकर स्कूल से विहार हुआ और रोर्बटसनपेट के.जी.एफ स्थित स्थानक में वर्षावास हेतु प्रवेश हुआ। **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5** ने बालोतरा से विहार कर मध्यप्रदेश में नीमच शहर तक उग्र विहार की क्रमबद्धता बनाए रखते हुए 19 जुलाई को चौधरी मौहल्ला स्थित स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4** ने 20 जुलाई को श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन, पीपाड़ शहर में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। **व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4** ने 19 जुलाई को भोपालगढ़ श्री जैन रत्न विद्यालय से विहार कर सदर बाजार स्थित स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। **सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4** बड़नेरा रोड़ स्थित जैन स्थानक से विहार कर अमरावती के शारदा नगर स्थित स्वाध्याय भवन में वर्षावास हेतु पधारे।

मंगल-प्रवेश विहार की प्रमुख विशेषताएँ-

1. सभी स्वीकृत चातुर्मास स्थलों पर जय-जयकार के जयनादों से एवं विहार-सेवा में आबाल-वृद्ध सबकी उपस्थिति से चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश संघ समाचारी के अनुसार हर्षोल्लास पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ। हमारे शासनपति श्रमण भगवान से लेकर गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान एवं संत-सतीवृन्द के जय-जयकार, श्राविकाओं द्वारा मंगल गीतों का समधुर एवं समवेत स्वर में उच्चारण विहार-यात्राओं के आकर्षण रहे।
2. प्रचार-प्रसार से दूर जन-जन की आत्मीयता-अपनत्व के साथ विहार-यात्रा में भागीदारी का सुन्दर रूप अत्यन्त मनभावन रहा।
3. चातुर्मास प्रवेश पर स्थानीय अध्यक्ष-मंत्री आदि पदाधिकारियों ने चातुर्मास स्वीकृति के लिए आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की वहीं वक्ताओं ने चातुर्मासार्थ पधारने वाले महासती मण्डल के प्रति अपनी आस्था अभिव्यक्त करते हुए चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना के साथ व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने व आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत संघ दीप्ति में भागीदारी निभाने की बात प्रमुखता से कही।
4. संघाड़ा प्रमुख सहित महासतियाँ जी महाराज ने चातुर्मास में जन-जन में अध्यात्म-चेतना जागृति हेतु प्रभावी प्रेरणा की।
5. स्थानीय श्री संघों में आगत श्रद्धालुओं के लिए सर्वत्र स्वागत-सत्कार की सुन्दर भावना देखने-सुनने में आई और परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग का सुन्दर नजारे की सर्वत्र सराहना सुनने को मिली।
6. चातुर्मास हेतु प्रवेश के साथ ही ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन का क्रम प्रारम्भ हो गया है।

नोट- महासती मण्डलों के चातुर्मास-स्थलों के सम्पर्क सूत्रों हेतु जिनवाणी, जुलाई 2010 के पृष्ठ संख्या 84 से 93 तक द्रष्टव्य हैं।

आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड हेतु आमन्त्रण

करुणाहृदय पूज्य गुरुवर्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के स्मृति हेतु अहिंसा के प्रचार-प्रसार एवं दिन-ब-दिन बढ़ रही पशु-पक्षियों की हिंसा की रोकथाम के लिए गतिविधियों के तौर पर (1) प्राणी-रक्षा (2) शाकाहार प्रचार

(3) प्रवचन (4) कत्लखानों का विरोध (5) हिंसक वस्तुओं का निषेध आदि अहिंसा का महत्त्वपूर्ण कार्य तन-मन-धन से करने वाले महानुभावों को रतनलाल सी बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट की ओर से आचार्य हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड दिया जाता है। प्रत्येक को अवार्ड के रूप में 31000/- रुपये का पुरस्कार भव्य समारोह में विशिष्ट महानुभावों की उपस्थिति में दिया जाता है। अब अवार्ड की रकम 51000/- रुपये कर दी गई है। अहिंसा के क्षेत्र में कार्यरत महानुभावों से अनुरोध है कि वे अपने बायोडाटा व कार्य विवरण की पूरी जानकारी हमारे निम्नांकित पते पर प्रेषित करें। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दो अहिंसा कार्यकर्ताओं को दिया जायेगा। 15 सितम्बर 2010 तक हमें जानकारी मिलना आवश्यक है।

सम्पर्क सूत्र- रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगाँव-425001 (महा.), फोन- 0257-2223903, 2225903

मेवाड़ एवं पल्लीवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-यात्रा सम्पन्न

पोरवाल क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 23 जुलाई 2010 तक मेवाड़ क्षेत्र के भीलवाड़ा, पहुंना, सहाड़ा, खांखला, जुणदा, सुरपुर, भादसोड़ा, मावली जंक्शन, नवाणियां, डूंगला, बोहेड़ा, प्रतापगढ़, नीमच सिटी, सिंगोली, बेगूँ, पारसोली आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री नवरतन जी डागा-जोधपुर, स्वाध्याय संघ शाखा उदयपुर के परामर्शदाता श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, स्वाध्याय संघ के पूर्व संयोजक एवं मार्गदर्शक श्री चंचलमल जी चोरडिया, शाखा मेवाड़ के संयोजक श्री कन्हैयालाल जी जैन-भीलवाड़ा तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्रों की स्थापना की गई, आगामी परीक्षा 1 अगस्त 2010 हेतु आवेदन पत्र भरवाये गये, दो नये स्वाध्यायी बनाये गये, पुराने स्वाध्यायियों की इस वर्ष सेवा देने हेतु स्वीकृति प्राप्त की गई। पर्युषण में स्वाध्यायी भेजने हेतु 5 क्षेत्रों की मांगें प्राप्त हुईं। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के

जन्म-शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' के रूप में मनाने की जानकारी देने के साथ ही सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक व्रत-नियम ग्रहण करने की भी प्रेरणा की गई। आचार्य भगवन्त के जीवन ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आयोजित द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता की जानकारी दी गई तथा प्रश्नपुस्तिका एवं ग्रन्थ वितरित किए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्यायशिक्षा के सदस्य भी बनाये गये। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।

पल्लीवाल क्षेत्र- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ-जोधपुर के तत्त्वावधान में 24 से 27 जुलाई 2010 तक पल्लीवाल क्षेत्र के नसिया गंगापुर, गंगापुर सिटी, करौली, बरगमा, हिण्डौन सिटी, वर्द्धमान नगर हिण्डौन, महवा, मण्डावर, हरसाना, खौह, खेरली, नदबई, पहरसर, गोपालगढ़-भरतपुर, भरतपुर आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस प्रचार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, शाखा पोरवाल के परामर्शदाता श्री लल्लूलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, शाखा पल्लीवाल के संयोजक श्री कृष्णमोहन जी जैन-हिण्डौन सिटी तथा स्वाध्याय संघ कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुई। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में भाग लेकर ज्ञानवृद्धि करने, बच्चों हेतु संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने के साथ ही संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान 28 नये स्वाध्यायी बनाए गए। पर्युषण हेतु 6 मांगें भी प्राप्त हुईं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा हेतु प्रेरणा की गई तथा अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा संचालित पाठशालाओं की समीक्षा की गई तथा नई पाठशालाएँ खोली गईं। परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-शताब्दी वर्ष को 'अध्यात्म-चेतना वर्ष' के रूप में मनाने की जानकारी देने के साथ ही सभी क्षेत्रों में अधिक से अधिक व्रत-नियम ग्रहण करने की भी प्रेरणा की गई। आचार्य भगवन्त के जीवन ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आयोजित द्वितीय खुली किताब प्रतियोगिता की जानकारी दी गई तथा प्रश्नपुस्तिका एवं ग्रन्थ वितरित किए गए। जिनवाणी एवं स्वाध्याय शिक्षा पत्रिका के सदस्य भी बनाए गए। सभी स्थानों पर स्थानक में सामूहिक प्रार्थना, सामायिक एवं स्वाध्याय, शाकाहार तथा सदाचारी जीवन जीने की प्रभावी प्रेरणा से सब प्रमुदित थे।

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी 'अध्यात्म चेतना वर्ष'

बालकों के लिए आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन प्रतियोगिता

आचार्य श्री हस्ती का व्यक्तित्व बहुआयामी था और कृतित्व भी। आगममर्मज्ञ, इतिहास मनीषी, अध्यात्मयोगी, समाज-सुधारक और कुशल प्रवचनकार होने के साथ-साथ वे एक श्रेष्ठ कवि भी थे। उनके द्वारा रचित गीत, भजन, पद, काव्य आदि विविध शिक्षाओं एवं अनुभूतियों से अनुप्राणित हैं। विविध विषयों पर रचित उनके काव्य जीवन में शान्ति, आनन्द और पुनीत प्रेरणाओं का संचार करते हैं। जीवन के सुख-दुःख तथा खट्टे, मीठे क्षणों में आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित गीत, भजन, पद किसी भी व्यक्ति के चित्त को आलोकित कर सकते हैं। जन-जीवन में उनके भजन चर्चित बनें एवं समाज में संस्कार-सरिता बहती रहे, इसी मंगल-भावना से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर "आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन प्रतियोगिता" का आयोजन सभी उम्र के लिए पूर्व में किया गया। उक्त प्रतियोगिता में अपूर्व उत्साह प्रदर्शित हुआ। पूर्व में किये गये आयोजनों में वयस्क प्रतिभागियों के कारण बालकों को पूरा मौका नहीं मिल पाया, इस कारण कई संघों के आग्रह पर पुनः बालकों की अलग से प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। अतः पुनः **केवल 16 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं के लिए** उक्त प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

देश-विदेश में जहाँ-जहाँ भी संघ एवं संघ से सम्बद्ध संगठनों की शाखाएँ या उपशाखाएँ हैं वहाँ दिनांक **31 अक्टूबर 2010** को इस प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया है। इस प्रतियोगिता में **अधिक से अधिक बालक-बालिकाएँ भाग लें**, इस हेतु प्रयास अपेक्षित है।

प्रतिभागी बालक-बालिका को आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित कोई श्रेष्ठ गीत, भजन या काव्य कण्ठस्थ करना होगा तथा प्रतियोगिता के दौरान मंच पर सुर, लय और हावभावों के साथ प्रभावी प्रस्तुति देनी होगी। आचार्य श्री पर रचित भजनों, गीतों अथवा स्तुतियों को भी इसी प्रकार प्रस्तुत किया जा सकेगा, किन्तु आचार्य हस्ती रचित रचना की प्रस्तुति को प्राथमिकता रहेगी। प्रतियोगिता समिति द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ निर्णायकों द्वारा अंक दिये जायेंगे तथा प्रत्येक शाखा में तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहने वालों को क्रमशः 1100/-, 800/-, 500/- रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये

जायेंगे। कम से कम 20 प्रतिभागी होने पर ही किसी भी शाखा पर प्रतियोगिता आयोजित कराई जा सकेगी। बड़ी शाखाओं में न्यूनतम 30 प्रतिभागी होने चाहिए। सभी स्थानों पर विजेता रहे प्रतिभागी की एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समापक प्रतियोगिता आयोजित कराई जाएगी। समापक प्रतियोगिता में विजेता घोषित होने वाले को आकर्षक पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित भजन, गीत आदि निम्नांकित पुस्तकों में उपलब्ध हैं-(1) **गजेन्द्र पद मुक्तावली**-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित, फोन नं. 0141-2575997 (2) **नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं**- अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर से उपलब्ध, फोन नं. 0291-2636763 (3) स्वाध्याय स्तवनमाला (4) भजन की अनेक पुस्तकों में भी संकलन।

प्रतियोगिता हेतु शाखाओं से नाम 30 सितम्बर 2010 तक निम्नांकित पते पर प्राप्त हो जाने चाहिए। जो शाखाएँ या उपशाखाएँ इस प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहती हैं वे निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित करें।

विरदराज सुराणा, मंत्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

दूरभाष : 0141-2575997, फैक्स : 0141-2570753, मो. 9314012415

ईमेल- jinvani@yahoo.co.in, sgpmandal@yahoo.in

जयपुर में आयोजित प्रतियोगिता की रिपोर्ट एवं परिणाम

जयपुर- कभी गुरु के गुणगान करने से आह्लादित होता मन, तो कभी उनको याद करके नम होती आँखें, कभी हस्ती के उपदेशों को जीवन में उतार कर मुक्ति पथ पर चलने की प्रेरणा और कभी उनके संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प- ऐसा ही कुछ नज़ारा था 11 जुलाई, 2010 को जयपुर के सुबोध एम.बी.ए. कॉलेज के हॉल में। अवसर था आचार्य हस्ती भजन गीत गायन प्रतियोगिता का जिसका आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की प्रेरणा से श्री जैन रत्न युवक परिषद् की जयपुर शाखा ने बहुत सफलतापूर्वक किया।

इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों को आयु के आधार पर 'कनिष्ठ' एवं 'वरिष्ठ' दो वर्गों में विभाजित किया गया। दोनों ही वर्गों में 30-30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी ने ऐसे भावपूर्ण और मधुर स्वर में भजन गाये कि श्रोताओं की

स्मृति पटल पर पूज्य गुरुदेव का जीवन सजीव हो उठा।

इस अवसर पर अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा सहित अनेक गणमान्य श्रावक उपस्थित थे। प्रतियोगिता में निर्णायक गण के रूप में श्रीमती सविता जी चौपड़ा, श्रीमान् वीरेन्द्र जी झामड़, श्रीमान् नरेन्द्र जी मेहता एवं श्रीमान् महेन्द्र जी बोथरा ने अपनी सेवाएँ दीं। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा-

कनिष्ठ वर्ग

प्रथम- सुश्री संजना सुपुत्री श्री सुनील जी झामड़, **द्वितीय**- सुश्री लीशा सुपुत्री श्री राजेश जी मूथा, **तृतीय**- सुश्री मुस्कान सुपुत्री श्री सुरेन्द्र जी जैन, सुश्री सेहल सुपुत्री श्री पीयूष जी जैन।

वरिष्ठ वर्ग

प्रथम- श्रीमती निशा जी मेहता, **द्वितीय**-श्रीमती पूजा जी करनावट, **तृतीय**- श्रीमती सुमन जी ढढ्ढा।

अंत में "**आचार्य हस्ती जन्म शताब्दी वर्ष**" के जयपुर संभाग के संयोजक श्रीमान् सुरेशचन्द जी कोठारी ने उपस्थित सभी सज्जनों का आभार व्यक्त किया।

-प्रशान्त करनावट, शाखा सचिव

मुम्बई में छात्राओं के लिए हॉस्टल प्रारम्भ

मीना रांका फाउण्डेशन, मुम्बई ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु मुम्बई आने वाले छात्रों के रहने की समस्या को ध्यान में रखते हुए आधुनिक सुविधाओं से युक्त 'आचार्य श्री नानेश हॉस्टल' की वर्ष 2007 में पनवेल (नवी मुम्बई) में स्थापना की, जिसके द्वारा अब तक करीब 300 छात्र लाभान्वित हो चुके हैं। सभी सुविधाओं से सुसज्जित 54 कमरों वाले इस हॉस्टल में 108 छात्रों के निवास एवं शुद्ध शाकाहारी खान-पान की उत्तम व्यवस्था है। इस पुनीत कार्य को आगे बढ़ाते हुए मीना रांका फाउण्डेशन, मुम्बई ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु बाहर से मुम्बई आने वाली छात्राओं के लिए भी इस वर्ष मानसरोवर, कामोठे (पनवेल) में एक नये भवन 'आचार्य श्री रामेश हॉस्टल' का निर्माण करवाया है जिसमें सत्र 2010-11 के लिए प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गयी है। सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त 52 कमरों वाले इस हॉस्टल में 108 छात्राओं के रहने एवं खान-पान की उत्तम व्यवस्था है। हॉस्टल में छात्राओं के लिए इनडोर-आउटडोर गेम्स, योगा-मेडिटेशन, इन्टरनेट, कान्फ्रेन्स हॉल, लाइब्रेरी आदि की भी उत्तम सुविधा उपलब्ध

है। हॉस्टल में छात्राओं की सुरक्षा एवं पारिवारिक वातावरण का पूरा ध्यान रखा गया है। *-एच.एल. शर्मा, सलाहकार, मीना रांका फाउण्डेशन, फोन- 022-28802364*

आध्यात्मिक चेतना-आयाम शिविर मैसूर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में मैसूर (कनार्टक) में 17 से 19 सितम्बर 2010 को **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक चेतना-आयाम शिविर का आयोजन किया जा रहा है। भाग लेने की इच्छुक श्राविकाएँ सम्पर्क करें - *श्री महावीरचन्द जी सांखला, 369, Tyagraj Road, Mysore 09342342444, श्री सुभाषचन्द जी धोका- 09448539647, 0821-2525697, 2484423, श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई- 09382679660*

- मधु सुराणा, अध्यक्ष

प्रोफेशनल अध्ययन के लिए स्वर्णिम अवसर

प्रोफेशनल कोर्स करने के इच्छुक प्रतिभाशाली एवं साधारण वित्तीय स्थिति वाले विद्यार्थियों को अध्ययन करने के लिए चेन्नई महानगर में स्वर्णिम अवसर प्रदान किया जा रहा है। वे अपने जीवन में प्रोफेशनल बनकर समाज व देश की सेवा के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। पेशेवर अध्ययन के अन्तर्गत एडवोकेट, चार्टर्ड एकाण्टेन्ट, कोस्ट एकाउण्टेन्ट, कम्पनी सेक्रेटरी, इंजीनियर, टेक्नोक्रेट, प्रोफेसर, एम.बी.ए. आदि को सम्मिलित किया जाएगा। अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए चेन्नई में आवास, भोजन, फीस व पुस्तकों का खर्च वहन किया जा सकता है। इसके साथ कोचिंग व मार्गदर्शन की सुविधा भी उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जाएगा। नियमित रूप से सामायिक एवं स्वाध्याय भी अपेक्षित है। वांछित जानकारियों के साथं 12वीं उत्तीर्ण इच्छुक विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं-(1) शैक्षणिक प्रमाण-पत्र एवं अंकतालिकाओं की प्रमाणित प्रतियाँ (2) पारिवारिक परिचय एवं आय की सप्रमाण जानकारी (3) धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान की जानकारी (4) अन्य आवश्यक जानकारी। आवेदन एक बार में ही सम्पूर्ण जानकारी के साथ इस पते पर भिजवाएँ- The Trustee, Surana & Surana Trust, 61-63, Dr. Radhakrishnan Salai, Mylapore, Chennai-600004, Ph. 044-28120000/28120002

आचार्य हस्ती जन्म-शताब्दी ज्ञान-स्वाध्याय प्रतियोगिता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-शाखा, चेन्नई द्वारा प्रश्नव्याकरण सूत्र पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इस प्रतियोगिता के प्रायोजक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा हैं। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार-51000/-, द्वितीय पुरस्कार-31000/- तथा तृतीय पुरस्कार-11000/- रुपये देय है। सान्त्वना पुरस्कार के रूप में 1000/- के पाँच, 500/- के दस तथा 100/- के सौ पुरस्कार भी प्रदान किए जायेंगे। 500 प्रश्न की यह प्रश्न-पुस्तिका इन सूत्रों से प्राप्त की जा सकती है- *(1) पारसकंवर भण्डारी, 128, मिण्ट स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई (तमि.), 044-25297463, 09884800900 (2) डॉ. मंजुला जी बम्ब-जयपुर, 09314292229 (3) घोड़ों का चौक-जोधपुर, 0291-2636763 एवं (4) मंजू भण्डारी-बैंगलोर-093426770661*

'जैन सिद्धान्त परिचय' पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता

श्री सुधर्म जैन श्रीसंघ, खींचन तथा श्री आध्यात्मिक साधना सदन, खींचन के तत्त्वावधान में 'जैन सिद्धान्त परिचय' पुस्तक पर राष्ट्रीय स्तरीय खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में बम्पर पुरस्कार 11001/-, प्रथम पुरस्कार 5101/-, द्वितीय पुरस्कार -2501/-, तृतीय पुरस्कार 1501/- के देय हैं। साथ ही 51 शीघ्र प्रतियोगियों को 201/- प्रत्येक तथा 51 प्रोत्साहन पुरस्कार भी सम्मिलित हैं। पुस्तक का मूल्य 7/- व डाक द्वारा 9/- तथा प्रश्नपुस्तिका का मूल्य 10/- व डाक द्वारा 12/- रखा गया है। राशि एम.ओ. या डी.डी. द्वारा भेजी जा सकती है। प्रश्नपुस्तिका प्राप्ति की अवधि 15 जुलाई 2010 से 15 दिसम्बर 2010 तक रहेगी। प्रश्नपुस्तिका भेजने की अन्तिम तिथि 1 जनवरी 2011 रहेगी तथा 26 जनवरी 2011 को परिणामों की घोषणा की जाएगी। सम्पर्क सूत्र- *श्री जितेन्द्र चोरडिया, समर्थ जैन भवन, खींचन-342308, तह. फलौदी, जिला-जोधपुर (राज.), मोबाइल-9950064010, 9509044459*

समग्र जैन चातुर्मास सूची-2010 का प्रकाशन

जैन समाज के चारों समुदायों के लगभग 14 हजार जैन साधु-साध्वियों

के 2010 में स्वीकृत चातुर्मासों एवं समाज की सभी गतिविधियों की जानकारियों से युक्त 'समग्र जैन चातुर्मास सूची-2010' मुम्बई स्था. जैन चातुर्मास सूची (गुजराती पॉकेट बुक) एवं रंगीन चार्ट का त्रि-दशाब्दी वर्ष अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। अतः निवेदन है कि आपके गांव/शहर/कस्बे/ उपनगरों में पूज्य जैन आचार्यों, साधु-साध्वियों के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों के पूरे ठाणाओं के नाम, समुदाय का पूरा नाम, चातुर्मास स्थल का नाम, सम्पर्क सूत्र, फोन नम्बर, नई दीक्षा एवं महाप्रयाण की सूची आदि की जानकारियाँ शीघ्र से शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें। - *बाबूलाल जैन उज्ज्वल सम्पादक, 105 तिरुपति अपार्टमेन्ट, आकुर्ली क्रोस रोड नं. 1, रेलवे स्टेशन के पास, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई-400101 (महा.), टेलीफैक्स-022-28871278, मो. 9324521278*

युवारत्नों की त्रिदिवसीय कार्यशाला पाली में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आध्यात्मिक चेतना वर्ष के अन्तर्गत युवक परिषद् के कार्यक्रमों, आयोजनों एवं दिवसों को विशेष प्रभावी बनाने की दिशा में 13 से 15 अगस्त 2010 तक कार्यशाला का आयोजन पाली (मारवाड) में किया जा रहा है। कार्यशाला का मूल उद्देश्य पारस्परिक भ्रातृत्व भाव बढ़ाकर दायित्व बोध के साथ संघ के कार्यों को आगे बढ़ाना है। कार्यशाला में स्थानकवासी परम्परा के अनुसार साधुचर्या एवं चतुर्विध संघ-सेवा के बारे में भी जानकारी प्रदान की जाएगी।

कार्यशाला के अन्तिम दिवस 15 अगस्त को युवक परिषद् की कार्यकारिणी बैठक का भी आयोजन रखा गया है- **मनोज कांकरिया**, महासचिव, फोन : 0291-2630368, 9414563597

महावीर फाउण्डेशन अवार्ड समारोह सम्पन्न

चेन्नई - भगवान् महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा 13वाँ महावीर अवार्ड समारोह गिण्डि में सांसद प्रोफेसर एम.एस. स्वामीनाथन के मुख्यातिथ्य में आयोजित हुआ। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में ट्राइबल हैल्थ इनिशिएटिव, धर्मपुरी (तमिलनाडु) को तथा सामुदायिक एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में करणीनगर विकास समिति, कोटा (राजस्थान) को तथा स्वामी विवेकानन्दा इन्टीग्रेटैड रूरल हैल्थ सेन्टर, पावागड (कर्नाटक) को अवार्ड प्रदान किया गया। अवार्ड विजेताओं को प्रशस्तिपत्र, 5

लाख रुपये की राशि का चैक तथा स्मृति चिह्न दिए गए। इस अवार्ड के माध्यम से अहिंसा, शाकाहार, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा जैसे कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

- एन. सुगालचन्द जैन

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर -अध्यात्म-चेतना वर्ष के अवसर पर श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा स्थानीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय 'सामाजिक सुधार में आचार्य हस्ती का चिन्तन' रखा गया है। उक्त निबन्ध को अधिकतम 600 शब्दों में सफेद कागज पर साफ-सुन्दर शब्दों में हस्तलिखित अथवा टंकण करवाकर युवक परिषद् कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर में जमा करवाना होगा। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार 1101/-, द्वितीय पुरस्कार 751/- तथा तृतीय पुरस्कार 501/- रखा गया है। **सम्पर्क सूत्र**- गजेन्द्र चौपड़ा, शाखा सचिव, 9414301785

जलगाँव - आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी वर्ष के अवसर पर नवकार महामंत्र जाप का सामूहिक कार्यक्रम 8 जुलाई को जैन भवन एम.आय.डी.सी. में आयोजित किया गया, जिसमें 250 व्यक्तियों ने सामायिक के साथ भाग लिया। इस सुअवसर पर ज्ञानगच्छीय महासती श्री गुणबाला जी म.सा. ने अपने उद्बोधन में आचार्यप्रवर का गुणस्मरण करते हुए श्रावक के 12 व्रतों को ग्रहण करने की सद्प्रेरणा प्रदान की।

जोधपुर -अध्यात्म-चेतना वर्ष में जोधपुर में श्री जैन रत्न बालिका मण्डल का गठन दिनांक 4 जुलाई 2010 को लक्ष्मीनगर में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में हुआ। श्रीमती बीना जी मेहता के प्रयासों से जोधपुर के विभिन्न केन्द्रों से बालिकाएँ इस अवसर पर पधारीं। आचार्य भगवन्त ने महती कृपा कर बालिकाओं को प्रेरणा के रूप में व्यसनमुक्त जीवन जीने की कला एवं हर एक बालिका को एक नई बालिका को जोड़ने की प्रेरणा की। इस अवसर पर अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व क्षेत्रीय प्रधान श्री नरपत सा चौपड़ा तथा युवक परिषद् के सचिव श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा भी उपस्थित थे।

जोधपुर - श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा महिलाओं में धार्मिक एवं नैतिक ज्ञानार्जन हेतु ग्रीष्मकालीन सप्तदिवसीय शिविर 13 से 19 जून 2010 तक

घोड़ों का चौक स्थानक में आयोजित किया गया। शिविरार्थियों को योग्यता के आधार पर 6 कक्षाओं में विभक्त किया गया। शिविरार्थियों को सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल मूल-अर्थ विवेचन सहित प्रबुद्ध अध्यापकों श्रीमती सुशीला जी बोहरा, श्रीमती मोहिनी देवी जी कच्छवाहा, श्रीमती मोहनकौर जी जैन, श्री नरपतराज जी चौपड़ा, श्री धर्मचन्द जी जैन, श्री दिलीप जी जैन द्वारा अध्यापन करवाया गया। शिविर में 150 शिविरार्थियों ने उमंग-उल्लास के साथ भाग लिया। प्रत्येक शिविरार्थी को स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा की गई।

दिल्ली - आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में 8 से 10 जून 2010 तक आत्म-ध्यान शिविर 'बेसिक' का आयोजन किया गया, जिसमें आसन, प्राणायाम और ध्यान का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। बहुतायत में श्रावक-श्राविकाओं ने इसका लाभ उठाया।

बधाई/चुनाव

गोटन - श्री निर्मल ओस्तवाल सुपुत्र श्रीमती सुशीला जी-श्री शांतिलाल जी ओस्तवाल ने सी.ए. की परीक्षा में सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। आपकी धार्मिक रुचि अच्छी है। आप संघनिष्ठ सुश्रावक श्री जबरचन्द जी ओस्तवाल के सुपौत्र तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सहमंत्री श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल के भतीजे हैं।

नागपुर - सुश्री मयूरी पुत्री श्री नरेन्द्र जी कटारिया एवं सुपौत्री समाजसेवी स्व. श्री मोहनलाल जी कटारिया ने बी.टेक.केमिकल इंजीनियरिंग परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। मयूरी को श्री महादेव दाजीबा दीवानकर मेमोरियल रजत पदक, नागपुर इलेक्ट्रिकल लाइट एवं पावर कं. लि. स्वर्ण जयन्ती स्वर्णपदक, श्री एम.जी. नेवलेकर पुरस्कार और डॉ. पी.एस. मेने फेलीसिटेशन पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। सम्पूर्ण परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है।

जोधपुर - श्री ऋषि कुम्भट सुपुत्र श्री राजीव जी कुम्भट एवं सुपौत्र श्री जगदीशमल जी कुम्भट (पूर्व महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) ने सीबीएसई की 12वीं कक्षा में 92.4 प्रतिशत अंकों के साथ विद्यालय में चौथा, जोधपुर में 12वाँ तथा अखिल भारतीय स्तर पर 23वाँ स्थान प्राप्त किया है।

जलगाँव - श्री अंकित पुत्र श्री अशोक जी हुण्डीवाल (सचिव, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जलगाँव) ने बारहवीं कक्षा में 89.67 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं।

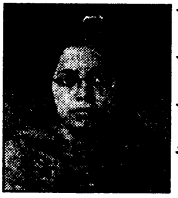

जोधपुर - सुश्री श्वेता पुत्री श्रीमती सरोज मोदी एवं श्री सुमनेशनाथ जी मोदी (एसोशिएट प्रोफेसर, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर) ने डिप्लोमा इन क्रिमिनल एण्ड लेबर लॉ (पीजीडीसीएलएल) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। पूर्व परीक्षाओं एवं एम.बी.ए. में भी वे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण रही हैं।

चेन्नई - सुश्री वर्षा भण्डारी सुपुत्री श्रीमती कंचन-श्री राजेन्द्र जी भण्डारी ने इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेंट्स ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित सीपीटी-जून 2010 की परीक्षा में भारतवर्ष में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। सुश्री वर्षा ने सीबीएसई की 12वीं कक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

जयपुर - सुश्री पलक सुखलेचा सुपुत्री श्रीमती इन्दु जी एवं श्री रिखबचन्द जी सुखलेचा ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर की सैकेण्डरी परीक्षा 2010 में 93.17 प्रतिशत अंक प्राप्त कर मेरिट में स्थान प्राप्त किया है। ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर में भी छात्रा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था।

जोधपुर - श्री दीक्षान्त भण्डारी पुत्र श्रीमती ममता व श्री महेन्द्र जी भण्डारी एवं पौत्र श्रीमती भागवन्ती-श्री लक्ष्मीपत जी भण्डारी ने बारहवीं कक्षा में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के साथ ही सीपीटी की परीक्षा भी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। आपने सामायिक, प्रतिक्रमण व पच्चीस बोल भी कण्ठस्थ किए हैं।

गोपालगढ़-भरतपुर - श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मौहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर की नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष-श्री प्रेमचन्द जी जैन, उपाध्यक्ष-श्री पारसचन्द जी जैन, मंत्री- श्री बाबूलाल जी जैन 'सिमको वाले', कोषाध्यक्ष-श्री वीरेशकुमार जी जैन एवं संयोजक-श्री विनोद कुमार जी जैन मनोनीत किए गए।

ब्यावर - श्री वीर संघ द्वारा श्री ज्ञानचन्द जी विनायकिया-अध्यक्ष, श्री शांतिलाल जी नाबरिया, श्री अलकेश जी मुणोत-उपाध्यक्ष, श्री महेन्द्र जी सांखला-मंत्री, श्री

पदमचन्द जी बम्ब-सहमंत्री, श्री लक्ष्मीचन्द जी भण्डारी-कोषाध्यक्ष और श्री प्रकाशचन्द जी कावड़िया-सामान मंत्री चुने गये।

चेन्नई - श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकार पेट के नव मनोनीत अध्यक्ष श्री महावीरचन्द जी कोठारी ने श्री अनोपचन्द जी भिडक्चा एवं श्री माणकचन्द जी खाबिया को उपाध्यक्ष, श्री जवाहरलाल जी कर्णावट को मंत्री, श्री सुरेशचन्द जी आबड़ को सहमंत्री एवं श्री प्रसन्नचन्द जी कोठारी को कोषाध्यक्ष घोषित किया है।

बालोतरा- संघ समर्पित श्रद्धानिष्ठ कर्मठ समाजसेवी एवं श्री गुरु हस्ती कल्याण

संस्थान के मंत्री श्री ओमप्रकाश जी बांठिया को शिक्षा-चिकित्सा-सामुदायिक सेवा के कार्यों हेतु राष्ट्रीय समता स्वतंत्र मंच द्वारा नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय समरसता सम्मान' से सम्मानित किया गया। सी.बी.आई के पूर्व महानिदेशक जोगिन्दर सिंह ने शाल ओढ़ाकर एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। वर्ष 2010 से 2011 के लिए रोटरी इन्टरनेशनल प्रान्त 3050 में प्रान्तीय सचिव (डिस्ट्रिक्ट सेक्रेट्री) के रूप में उनका मनोनयन किया गया है। वे पूर्व में दो बार रोटरी सह-प्रान्तपाल रह चुके हैं। वे महावीर इण्टरनेशनल के जोन चेयरमैन पद पर कार्यरत हैं। *-धर्मेश चौपड़ा*

श्रद्धाञ्जलि

चेन्नई- धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती कान्ता देवी जी डोसी धर्मपत्नी श्री

प्रकाशचन्द जी डोसी पुत्रवधू अनन्य गुरुभक्त, सुश्रावक स्वर्गीय श्री सोनराज जी डोसी, ब्यावर का 10 जुलाई 2010 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आपने अठाई एवं मासखमण की तपस्या पूर्ण की थी। आप अपने पीछे परिवार में पति एवं दो पुत्र आशीष-सीमा एवं अमिता-अल्का तथा सुपुत्री आशा-रमेशजी कटारिया का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। डोसी परिवार रत्नसंघ का स्तम्भ परिवार है। आज भी श्री सोनराज जी डोसी के चारों सुपुत्र अपने परिवार सहित हैदराबाद, जोधपुर, ब्यावर एवं चेन्नई से एक साथ श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सेवा में सश्रद्धा पहुँचते हैं एवं गुरुभक्ति का परिचय देते हैं।

यवतमाल - धर्मप्रभावक सुश्रावक श्री चम्पालाल जी सुराणा, पाढंरकवड़ा निवासी का 63 वर्ष की वय में 28 जून 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप

चारित्रनिष्ठ संत-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।

चेन्नई - निर्भीक व्यक्तित्व के धनी, स्पष्टवक्ता, कर्मठ समाज सेवी, वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल 'हर्ष' (मूलतः बड़लू भोपालगढ़ निवासी) का 2 जुलाई 2010 को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आप लगन के पक्के, सत्यनिष्ठ, गुणानुरागी, मितव्ययी व व्रत-नियम के निष्ठावान सुश्रावक थे। श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में विद्यार्जन कर आपने बालोतरा, कुचेरा, राणावास शिक्षण संस्थाओं में बच्चों को नैतिक व आध्यात्मिक संस्कार देने का गुरुतर दायित्व सम्पादित किया। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति आपकी गहरी व अगाध श्रद्धाभक्ति थी। आपने आत्मार्थी-उपदेशी-गुरुभक्ति के गीतों व भजनों की अनेक रचनाएँ कीं। आप साधु-साध्वीवृन्द के अम्मापियरो का विरुद निभाने में सदैव अग्रणी रहते थे। आप नित्य सामायिक-प्रतिक्रमण, प्रवचन-श्रवण एवं विशिष्ट तिथियों पर पौषध, दया-संवर की आराधना करते थे।

मैसूर - सुश्राविका सज्जनबाई बागमार धर्मपत्नी स्व. श्री जवरीलाल जी बागमार का 68 वर्ष की आयु में 29 मई 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सादगीपूर्ण एवं मिलनसार महिला थीं। आपके रात्रि-भोजन एवं जमीकन्द का त्याग था। आप नित्य दो सामायिक करती थीं। आपकी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. , आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्दों के प्रति अटूट श्रद्धा थी।

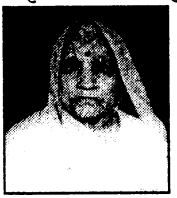

नसीराबाद - धर्मनिष्ठ वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बिदाम बाईजी धर्मपत्नी श्री धरमीचन्द जी चौपड़ा का 74 वर्ष की आयु में 3 जुलाई 2010 को देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन 4-5 सामायिक किया करती थीं।

चेन्नई - धर्मपरायण वरिष्ठ सुश्राविका श्रीमती आशादेवी जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री बिमलचन्द जी मेहता (छोटी खाटू-नागौर) का 90 वर्ष की वय में 15 जून 2010 को देहावसान हो

गया। आप सरलता, सादगी एवं उदारता की प्रतिमूर्ति थी। उनकी याद में परिवारवालों ने 5 लाख रुपये गौशालाओं को दान करके मृत्यु सम्बन्धी दूसरे सभी पारम्परिक रीति-रिवाजों को नहीं रखने का निर्णय लिया है।

चेन्नई - दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती मरुमाया सेठिया (भूतपूर्व उपाध्यक्षा-श्री

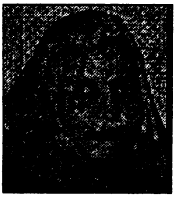

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति) धर्मपत्नी श्री केशरीचन्द जी सेठिया का 68 वर्ष की उम्र में 14 जून 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मप्रेमी, सेवाभावी, मृदुभाषी तथा वात्सल्यमूर्ति थीं। अनेक त्याग-पच्चक्खाण के साथ सामायिक व माला आपका नित्यक्रम था। आप चारित्र आत्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं।

अजमेर - सुश्राविका श्रीमती मनभरदेवी ढाबरिया धर्मपत्नी स्व. श्री पारसमल जी

ढाबरिया (तपस्वीराज) का 21 जून 2010 को देहावसान हो गया। सामायिक-स्वाध्याय के प्रति सजग श्राविकारत्न ने अपने जीवनकाल में दस वर्षीतप के साथ एकान्तर तप, इक्यावन, पैंतीस, इकतीस, सोलह, पन्द्रह तथा कई बार अठाई, पाँच, तीन आदि की तपस्याएँ कीं। चालीस वर्ष तक चौविहार, दस वर्ष से शीलव्रत के खंद, पिछले 15 वर्षों से एक दिन छोड़कर पौषध व्रत व संवर की साधना की। जीवरक्षा हेतु ओघे, पूँजनी, साधु-संतों के जीवन में उपयोगी वस्त्र, पात्र आदि सामान आपके यहाँ सदैव उपलब्ध रहता है, जिससे दीक्षा-प्रसंग व आवश्यकतानुसार सभी जैन साधु-साध्वियाँ लाभान्वित होते रहते हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर - सुश्राविका श्रीमती बिलमकुंवर लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजराज जी

लोढ़ा का 92 वर्ष की वय में 12 जुलाई 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्माराधना एवं तपाराधना में सन्नद्ध रहती थीं। आप अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व महामंत्री श्री जगदीशमल जी कुम्भट की सासूजी थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

717 श्रीमती मीनाक्षी जी लोढ़ा, श्याम नगर, जयपुर (राजस्थान)
718 श्री गजेन्द्र जी श्री श्रीमाल, सुदामा नगर, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
719 श्री जेठमल जी जैन, लक्ष्मी नगर, जोधपुर (राजस्थान)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12677 Sh.Prateekji Mehta,116 Southern Avenve,Kolkata(W.B.)
12678 Shri Abhinav ji Bhandari, Malvia Nagar, Jaipur (Raj.)
12679 श्री शान्तिलालजी भंसाली,ज्योति नगर,बड़ी नागफणी, फॉयसागर रोड़, अजमेर (राज.)
12680 श्री गौतमचन्द जी चोरड़िया, श्याम नगर द्वितीय, अजमेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
12681 श्री ज्ञानचन्द जी खींचा, विनोद नगर विस्तार, ब्यावर, जिला–अजमेर (राजस्थान)
12683 श्रीमती सुनीता जी बोर्दिया, 346, भूपालपुरा मेन रोड़, उदयपुर (राजस्थान)
12684 Shri Loonkaran ji Surana, Sowcarpet, Chennai (T.N.)
12685 श्रीमती धर्मवतीजी जैन, 33/102, नीलम पथ, वरूण पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
12686 श्री सुतिक्षण जी जैन, 3020, दक्षिण गेट, पोस्ट–नकोतर, जिला–जालन्धर (पंजाब)
12687 श्री विनोद कुमार जी छल्लाणी, 728, अंजता शोपिंग सेन्टर, रिंग रोड़, सूरत (गुजरात)
12688 श्री अशोक कुमार जी ढढ्ढा, कुशल निवास, शाह जी बाग की गली, बीकानेर (राज.)
12689 Shri Sampat Raj ji Bagmar, Shkala Hasti,Chittur (A.P.)
12690 Smt. Chetana ji Mehta,Girdhar Nagar,Ahmedabad (Guj.)
12691 श्रीमती ज्ञानकँवर जी भंसाली, जैन स्ट्रीट, सर्राफा बाजार, जोधपुर (राजस्थान)
12692 श्रीमती रतनकँवर जी भंसाली, 90, नेहरू पार्क, प्रथम मंजिल, जोधपुर (राजस्थान)
12693 श्री रमेश जी भंसाली, महावीर जैन कॉलोनी, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राजस्थान)
12694 श्री ऋषि जी मेहता, तम्बाकू की गली, जोधपुर (राजस्थान)
12695 श्रीमती पूजा जी जैन, माल श्री रोड़,शिप्रा सनसिटी,इन्दरपुरम्,गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)
12696 श्रीमती मनीषा जी भंडारी, घेवर कॉम्पलैक्स, शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)
12697 श्रीमती स्वाति जी जैन, जे.के. नर्सिंग होम की गली, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
12698 श्रीमती रामाकँवरी जी कातेरेला, बड़ा बास, सूरजपोल, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)
12699 श्रीमती रितु जी भंडारी, दाऊ की ठाणी, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राजस्थान)
12700 Shri Suresh Chand ji Jain (Baradia), Chennai (T.N.)
12701 श्री रोहित जी सिंघवी, 11 माला, झाबावाडी ठाकुरद्वार चरण रोड, मुम्बई (महाराष्ट्र)
12702 श्री हर्षजी कर्णावट, बारह गणगौर का रास्ता, पुरन्दर की गली, जौहरी बाजार, जयपुर
12703 श्री हार्दिक जी लुणावत, डी-56-67, अनाज मंडी, चाँदपोल, जयपुर (राजस्थान)
12704 श्री पदमचन्द जी जैन, 1-घ-17, विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)
12705 श्री शैलेन्द्र कुमार जी जैन, 3-डी-3, महावीर नगर तृतीय, कोटा (राजस्थान)

12706 श्रीमती ममता जी भंडारी, 22, महावीर कॉलोनी, पुष्कर रोड़, अजमेर (राजस्थान)
12708 Shri Umedmal ji Mehta, Vepery, Chennai (Tamilnadu)
12709 श्री गजेन्द्रजी श्रीश्रीमाल,आर.एन.टी. स्कूल के पास,शास्त्री नगर, रतलाम (मध्यप्रदेश)
12710 श्री विनय कुमार जी अब्बाणी, मीरां नगर, भीलवाड़ा रोड़, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
12711 श्री दिलीप कुमार जी लोढ़ा, सानिध्य अपार्टमेन्ट, आशा नगर, नवसारी (गुजरात)
12712 श्री लोकेश कुमारजी कावड़िया,भैरवकृपा,आदिनाथ कॉलोनी, रामनगर, अजमेर (राज.)
12713 श्री अनिल कुमार जी जैन, 61/258, रजत पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
12714 श्री विमलचन्द जी जैन, ग्राम पोस्ट–खोह, वाया–रोणिजाथान, जिला–अलवर (राज.)
12715 श्री मुकेश कुमार जी गाँधी, मोहन टॉकिज, हठीराम दरवाजा, रतलाम (मध्यप्रदेश)
12716 Dr. Jawahar Lal ji Nahta, Post. Parcertea Road (Assam)
12717 श्रीमती मंजू जी जैन, म.नं. 54, जैन कॉलोनी, भैरवी रोड़, होशियारपुर (पंजाब)
12718 श्री सुभाषचन्दजी संचेती, पोस्ट–दैनिक बाजार मानपुर,जिला–राजनाँदगाँव(छत्तीसगढ़)
12719 श्री अभयराजजी हींगड़,चोरड़िया पेट्रोल के पम्प के सामने,सांगानेर,जयपुर (राजस्थान)
12720 श्री सुगनचन्द जी मंसाली, नेर परसोपन, जिला–यवतमाल (महाराष्ट्र)

500/- श्री डी. बोहरा परिवार, चेन्नई के सौजन्य से

12682 श्रीमती ताराकँवरजी पटवा,ज्ञानप्रकाश,मूथों का बास,सोजतसिटी,जिला–पाली (राज.)
12707 Dr. Pukhraj ji Jain (Bhansali), Nasik Road (M.H.)

जिनवाणी हेतु साभार

11000/- श्रीमती रतनकंवर महावीरचन्द जी डागा एवं श्रीमती चंचलकंवर ज्ञानचन्द जी डागा, जोधपुर, रवि डागा सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द जी डागा के विवाहोपलक्ष्य पर दोनों भ्राताओं द्वारा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से संजोड़े शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

5100/- श्री अनिल जी जैन, अजमेर, पूज्य पिताश्री श्री अमरचन्द जी दुधेडिया का 22 जून, 2010 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

5000/- श्री महावीरचन्द जी, प्रकाशचन्द जी ओस्तवाल, चेन्नई, सुश्रावक श्री हरकचन्द जी ओस्तवाल का 2 जुलाई को स्वर्गमन होने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री अशोक जी कोठारी, जयपुर सुपुत्री सौ.कां. हर्षा जी सुपौत्री स्व. श्री सोहनमल जी कोठारी का शुभ-विवाह चि. कुशल जी जैन के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री उम्मेदमल जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, सुपौत्री सौ.कां. नमिता जी सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन का शुभ विवाह चि. मयंक जी सुपुत्र श्री पारसमल जी जैन के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2001/- श्री सुरेशचन्द जी, अमित जी खिंवसरा, चेन्नई, चि. अमित संग सौ. सविता के विवाहोपलक्ष्य एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शन लाभ लेने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री गौतमचन्द जी (D.S.O.), आदित्य जी, मिहिर जी जैन, जयपुर, विश्वकर्मा नगर

द्वितीय, जयपुर स्थित नूतन गृह 'जयणा' में 10 जुलाई को प्रवेश के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री अरूण जी, अरविन्द जी सदावत मेहता, जोधपुर, अपनी पूज्य माताजी स्व. श्रीमती गुलाबकंवर जी धर्मपत्नी श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता की 20 जुलाई, 2010 को प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती चित्रा जी धर्मपत्नी श्री विपिन कुमार जी जैन, लोहामण्डी, आगरा, साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मासिक पूर्णिमा पर दर्शन-वंदन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती उर्मिला जी, गौतम जी, सुबाहु जी, आशिष जी चोरड़िया, जयपुर, श्री पूनमचन्द जी चोरड़िया (गीजगढ़ वाले) का दिनांक 11/06/2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री रिखबचन्द जी, रतनकंवर जी सिंघवी, जोधपुर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा, एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जोधपुर पदार्पण पर दर्शनलाभ लेने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री इन्दरचन्द योगेशकुमार जी गाँधी, जोधपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं श्री योगेश मुनि जी म.सा., श्री मनीष मुनि जी म.सा. के दीक्षा के पश्चात् प्रथम बार जोधपुर पधारने के उपलक्ष्य में भेंट।

1001/- श्रीमती सरोज जी, रविन्द्र कुमार जी मेहता, जयपुर सुपुत्री गरिमा जी मेहता के दसवीं (सी.बी.एस.ई.) की परीक्षा में स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री सागरमल जी, तखतमल जी, अशोककुमार जी, सुभाष जी कोठारी, ब्यावर (राज.), सौ. जयश्री सुपुत्री संगीता जी विनोदकुमार जी कोठारी के शुभविवाह श्री राजेश जी पुत्र श्री गणपतलाल जी दुग्गड़, नासिक वालों के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री प्रकाशचन्द जी जैन, मंत्री श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ताल-देवगढ़ मदारिया, राजसमन्द, श्री संदीप कुमार जी जैन सुपुत्र श्रीमती अनिला जी प्रकाशचन्द जी जैन के आई.आई.टी. नई दिल्ली में एम.टेक के पश्चात् अमेरिकी कम्पनी (गुड़गाँव) में नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में एवं सुपुत्र श्री मनोज जी जैन का शुभ विवाह सौ.कां. नीतू जी जैन के संग सम्पन्न होने की खुशी में।

555/- श्री महेन्द्रमल जी श्रीमती ललिता जी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, चि. अभिषेक जी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

555/- श्री महेन्द्रमल जी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, धर्मपत्नी श्रीमती ललिता जी गांग के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री प्रभुदयाल जी घनश्याम जी जैन (आटुण वाले), सवाईमाधोपुर, चि. संजय का शुभ-विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राजूलाल जी, नरेन्द्रमोहन जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. जिनेन्द्र कुमार जी जैन (जीनू) का शुभ-विवाह सौ.कां. शिल्पी जी सुपुत्री श्री नेमीचन्द जी (अलीगढ़ वाले) के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री जम्बू कुमार जी बुद्धिप्रकाश जी जैन (बगावदा वाले), जयपुर, चि. विनोद कुमार जी जैन का शुभविवाह दिनांक 19/06/2010 को सौ. वन्दना जी के संग सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री नवलकिशोर जी, उच्छबराय जी जैन, नवसारी, सप्रेम भेंट।

500/- श्री महावीरचन्द जी, गौतमचन्द जी बाघमार, मैसूर, श्रीमती सज्जनबाई जी बाघमार धर्मपत्नी स्व. श्री जवरीलाल जी बाघमार का दिनांक 29/05/2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री विमल कुमार जी, ऋषभ कुमार जी जैन, उनियारा, चि. विनोद कुमार जी जैन का शुभ-विवाह दिनांक 24/06/2010 को सौ.कां. मनीषा जी (कानू) सुपुत्री श्री पारसचन्द जी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर के संग सम्पन्न होने की खुशी में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार

2100/- श्री उम्मेदमल जी जैन, मानसरोवर-जयपुर, सुपौत्री सौ.कां. नमिता जी सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन का शुभ विवाह चि. मयंक जी सुपुत्र श्री पारसमल जी जैन के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

14000/- श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, स्वाध्याय शिविर हेतु सहायता।

1100/- श्री गौतमचन्द जी (D.S.O.), आदित्य जी, मिहिर जी जैन, जयपुर, विश्वकर्मा नगर द्वितीय, जयपुर स्थित नूतन गृह 'जयणा' में 10 जुलाई को प्रवेश के उपलक्ष्य में।

501/- श्री जम्बू कुमार जी बुद्धिप्रकाश जी जैन (बगावदा वाले), जयपुर चि. विनोद कुमार जी जैन का शुभविवाह दिनांक 19/06/2010 को सौ. वन्दना जी के संग सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ शाखा-बजरिया को प्राप्त साभार

2100/- श्री राजुलाल जी, नरेन्द्रमोहन जी, जिनेन्द्र कुमार जी जैन (श्यामपुरा वाले), बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.), सुश्री समता जी जैन की जैन भागवती दीक्षा दिनाँक 15 मई, 2010 को आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से बालोतरा में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

501/- श्री रमेशचन्द जी जैन 'बिलोपा वाले', निवासी जयपुर (राज.), अपने सुपुत्र चि. संजय का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री बाबूलाल जी, जितेन्द्र कुमार जी जैन 'डेकवा वाले' निवासी बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.) अपने सुपुत्र चि. ऋषभ जैन का शुभ विवाह दिनाँक 27 मई, 2010 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

501/- श्री प्रभुदयाल जी, धनश्याम जी आटुण वाले, आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर (राज.) अपने सुपुत्र चि. संजय का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री जम्बू कुमार जी बुद्धिप्रकाश जी जैन (बगावदा वाले), जयपुर, चि. विनोद कुमार जी जैन का शुभविवाह दिनांक 19/06/2010 को सौ. वन्दना जी के संग सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री ओमप्रकाश जी जैन, विरेन्द्र नगर, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.), अपने सुपुत्र चि. मनोज का शुभ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

मंडल से प्रकाशित सत्साहित्य हेतु साभार प्राप्ति-स्वीकार

2100/- श्री कमलराजसा मेहता सुपुत्र स्व. श्री मदनराज सा फरास खाना (जोधपुर) बैंगलोर, के पुत्र श्री बबलु की सावण कृष्ण पक्ष 4 दिनाँक 30 जुलाई 2010 की पुण्य तिथि की स्मृति में भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

1,32,000/- मैसर्स कमलादेवी दुलीचन्द बागमार चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई, की ओर से भेंट।

48,000/- श्री अमरचन्द जी विरेन्द्र प्रकाश जी धोका,पीपाड़ वाले-जालना(महा.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री राजेन्द्र जी कर्नावट, बैंगलोर (कर्नाटक), की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती कुसुम जीतमल जी कोठारी, किशनगढ़, अजमेर (राज.), की ओर से भेंट।

12,000/- श्रीमती कुशल जी मेहता, जोधपुर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री बंशीलाल जी प्रमोदकुमार जी कोचेटा, अजमेर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री विजयकुमार जी जितेन्द्र जी सुराना, कोलकाता (प. बंगाल) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री विजयराज जी श्रीमती सुमन जी कोठारी, ब्यावर (राज.) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री कुशलचन्द जी बाघमार, कोयम्बटुर (तमिलनाडु) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटुर (तमिलनाडु) की ओर से भेंट।

12,000/- श्री पशुपति नाथ जी मोदी, जयपुर (राज.), अपने माता-पिता स्व. श्री फतेहराज जी मोदी एवं स्व.श्रीमती मिलापकंवर जी मोदी की स्मृति में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

श्रावण शुक्ला 8	मंगलवार	17.08.2010	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14	सोमवार	23.08.2010	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला 15	मंगलवार	24.08.2010	पक्खी
भाद्रपद कृष्णा 8	गुरुवार	02.09.2010	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 12	रविवार	05.09.2010	पर्युषण महापर्व प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14	मंगलवार	07.09.2010	चतुर्दशी, पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 5	रविवार	12.09.2010	सम्वत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8	बुधवार	15.09.2010	अष्टमी

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 65 से भी अधिक वर्षों से सन्त–सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त–सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 05 सितम्बर से 12 सितम्बर 2010 तक रहेंगे। अतः देश–विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 20 अगस्त 2010 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, 2633679, फैक्स- 2636763, मोबाइल-94141-26279

विशेष– दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा फोन नं. 25295143 (स्वाध्याय संघ), मो.09380997333

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

Gurudev

SURANA™ TMT

yes, the best

DRI Plant

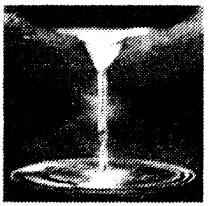

Electric Arc Furnace

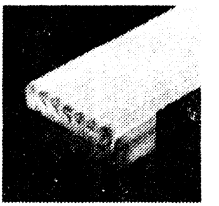

Billets

Rolling Mil

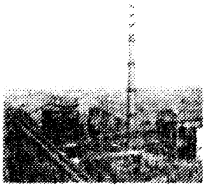

Captive Power Plant

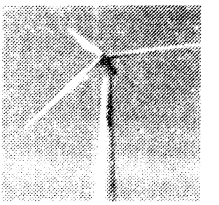

Windmill

With best wishes from

ISO 9001:2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/

Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले जिनेश्वरी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी॥

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

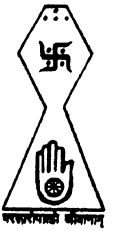

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

[redacted] **BRANCHES :** [redacted]

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयमुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मोम

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओ प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनाने के लिए 'आओ प्रत्याख्यान करें'' पुस्तक का प्रकाशन अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा किया गया हैं। आप अपने क्षेत्र में आओ प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें- महेन्द्र बाफना, जलगांव (उपाध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्) 9422773411, मनोज कांकरिया, जोधपुर (महासचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्) 9414563597, मनीष जैन, चैन्नई (044-42728476)

आओ स्वाध्याय करें

अपने कर्मों की निर्जरा के लिए आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक जिनवाणी प्रतियोगिता में भाग लेवें। अधिक से अधिक व्यक्तियों को इस प्रतियोगिता से जोड़कर कर्म निर्जरा में सहायक बनें।

नोट - आओ स्वाध्याय करें, त्रैमासिक जिनवाणी प्रतियोगिता के लिए जो महानुभाव स्व इच्छा से प्रायोजक बनना चाहते हैं वे 7000/- रुपये प्रति प्रतियोगिता में पुरस्कार वितरण के लिए अर्थ सहयोग करके दूसरों एवं स्वयं के कर्मों की निर्जरा का लाभ ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-महेन्द्र सा. बाफना (94227734'11) जलगांव, गौतमचन्द जैन (9460441351) सवाईमाधोपुर।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

आप अपने निकटतम क्षेत्र के सभी गुरु भाईयों के प्रति आदर एवं प्रेम के साथ उनके व्यावहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु इस योजना के आवेदन पत्र भरवाकर इस योजना के उद्देश्यों को सफल बनाने में सहयोगी बनें।

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें -

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (09414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (09414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगांव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें -

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

नोट - आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त, 2010 है।

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 8 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अगस्त, 2010 ★ श्रावण, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple, Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।